गागर में सागर

नव वैचारिकी

आचार्य रामानंद मंडल

गागर में सागर : नव वैचारिकी
by **आचार्य रामानंद मंडल**

Copyright © 2025 आचार्य रामानंद मंडल
All rights reserved.

Published with **BookFylo**
Noida, Delhi NCR, India
www.bookfylo.com
support@bookfylo.com

ISBN and barcode are on the back cover.
Printed & distributed using print-on-demand technology.

No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form, or by any means (electrical, mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written permission of the rights holder.

This book has been published using BookFylo, an AI-powered book design and distribution platform. The ISBN has been assigned by BookFylo solely for cataloging and distribution purposes. The rights holder retains full ownership, responsibility, and rights to the content of this book.

अनुक्रमणिका

बर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाज उर्फ पचपनिया संघर्ष।..... 7
कविश्वर चंदा झा बनाम भाषाविद ग्रियर्सन: मिथिला भाषा।..... 10
मैथिली मानकीकरण।..... 12
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा।..... 14
मिथिला बनाम तिरहुत।..... 15
मगध बनाम मिथिला।..... 17
मिथिला -मैथिली: असमंजस स्थिति।..... 18
मिथिला राज्य बनाम राजनीतिक दल।..... 20
उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य: पुनर्गठन।..... 22
उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य।..... 24
मधेश प्रदेश बनाम मिथिला।..... 26
मिथिला से पलायन बनाम आर्थिक उन्नति।..... 28
मिथिला राज्य बनाम मुस्लिम राज्य।..... 30
मिथिला राज्य बनाम राजधानी सीतामढ़ी।..... 31
मैथिली आ टुटल फुटल हिंदी।..... 32
मैथिली साहित्य मे परिवर्तन से आस जागल।..... 34
बोली आ भासा..... 36
मिथिला राज सं मिथिला राज्य तक।..... 37
मिथिला राज्य।..... 39
नेपाल: मधेश बनाम मिथिला।..... 40
जाति बनाम जातिवाद।..... 43
सामाजिक विषमता बनाम आर्थिक विषमता।..... 45
ऋषि परशुराम के सीता से बिआह प्रस्ताव।..... 46
लाल दास कृत मिथिला रामायण मे सीता।..... 48
मैथिली साहित्य मे घोटाला।..... 54
महाकवि विद्यापति आ महारानी लखिमा देवी: प्रेम प्रसंग!..... 56
पिया मोर बालक बनाम मिथिला समाज।..... 61
नवदुर्गा:प्रकीर्तिता: एकटा दृष्टि।..... 63
नित नवल सुभाष चन्द्र यादव।..... 64
ब्रह्म बनाम लोकदेवता:बरहम बाबा..... 65

बरहम बाबा गीत बनाम बराहमन गीत।..... 67
मिथिलावाद।..... 79
राजा जनक के समाजवाद।..... 88
रामायण आ रामचरित मानस मे मतभिन्नता -खीर वितरण..... 90
रामायण आ रामचरितमानस में मतभिन्नता -स्वयंबर धनुष यज्ञ।..... 92
जयंत (कौआ) के कथा।..... 96
अशोक वाटिका मे सीता संग हनुमान वार्ता भाषा..... 99
रामेश्वरम लिंग स्थापना।..... 100
रावण बध के भेदिया..... 102
सीता एकटा वीर नारी!..... 104
मित्रता:समाने शोभते प्रीति।..... 106
आदिपुरुष आ बिरोध..... 108
हिंदू धर्म आ हिंदू विरोध।..... 109
महाकुंभ।..... 111
सलहेस:किंग आफ मांउटेन बनाम किंग आफ मिथिला..... 113
कलाकृति बनाम अश्लीलता।..... 114
राष्ट्रवाद बनाम यूके नव प्रधानमंत्री ऋषि सुनक।..... 115
अगस्त क्रांति शहीद रामफल मंडल: जीवन वृत।..... 116
मिथिला के लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु।..... 122
जननायक कर्पूरी ठाकुर..... 124
मिथिला के लाल धनिक लाल मंडल।..... 126
साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर: व्यक्तित्व आ कृतित्व।..... 128
नेपथ्य के नायक: कर्मवीर पासवान।..... 131
डाकू आ सांसद फूलन देवी।..... 133
गुरु पूर्णिमा आ वर्तमान विद्यालय निरीक्षण आदेश।..... 134
इस्कूली प्राथमिक शिक्षा:बदलैत स्वरुप।..... 137
सगर राति दीप जरैय :समस्या आ समाधान..... 139
पोथी श्रोत।..... 140

Gaagar Mein Saagar : Nav Vaichariki / गागर में सागर : नव वैचारिकी

आचार्य रामानंद मंडल

2025-06-16

समर्पण

पूज्य परपितामह स्व. रघुवर मंडल, पूज्य पितामह स्व.राम औतार मंडल आ पूज्य पिता स्व.राजेश्वर मंडल के चरण कमल मे पोथी सादर समर्पित।

अप्पन बात

अप्पन रचित मैथिली आलेख संग्रह-गागर मे सागर:नव वैचारिकी आदरणीय पाठक वृंद के कर कमल मे देवे के लेल मन प्रफुल्लित होय हय।अइ आलेख संग्रह मे मिथिला के अतीत काल से लेके वर्तमान काल तक के विभिन्न विषय पर विचार अन्वेषण कैल गेल हय। बर्चस्ववादी संस्कृति बनाम पचपनिया संघर्ष, भाषा विवाद, मिथिला राज्य निर्माण विवाद, मिथिला सामाजिक संरचना, नेपाल: मधेश बनाम मिथिला आदि।

संत लाल दास कृत मिथिला रामायण मे सीता, महाकवि विद्यापति आ महारानी लखिमा देवी के प्रेम प्रसंग आ महर्षि बाल्मीकि रामायण आ रामचरितमानस के कुछ प्रसंग मे मतभिन्नता विशेष द्रष्टव्य हय।

मिथिला के विशेष व्यक्तित्व शहीद रामफल मंडल, महान साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु, जननायक कर्पूरी ठाकुर आ साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर के जीवनी आकृष्ट करैय हय।

अइ आलेख संग्रह के लेल पत्नी -प्रमिला देवी, ज्येष्ठ पुत्र प्रो (डा) राजीव रंजन, पुतोहु उपसचिव स्वाति परवाल, पोती धनिका, मंझला पुत्र सिविल जज रवि रंजन, पुतोहु सिविल जज नेहा भालोटिया, पोती अन्निका आ अवनिका, संझला पुत्र प्रभात रंजन, पुतोहु ज्योति कुमारी, छोट पुत्र प्रभाष रंजन आ समस्त परिवार के अहम योगदान हय।अइ लेल सभ आदरणीय लोग के सादर आभार।

-आचार्य रामानंद मंडल।
मुरलियाचक वार्ड -१९.सीतामढ़ी नगर, सीतामढ़ी।
मो -९९७३६४१०७५.

बर्चस्ववादी संस्कृति बनाम हाशियाक समाज उर्फ पचपनिया संघर्ष।

मिथिला में बर्चस्वबादी समाज यानि ब्राह्मणवादी समाज, हाशियक समाज यानि बंचित समाज अर्थात् रार, सोलकन (इ नामांकरण ब्राह्मवादी संस्कृति के देन अछि) वा ओबीसी पर वर्तमान में भी सांस्कृतिक सामाजिक स्तर पर बर्चस्व बनैले अछि। मिथिलाक संस्कृति उच्च नीच पर आधारित अछि। जनकवि बैधनाथ मिश्रक अनुसार सुच्चा मैथिल-मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ अछि। इ दूनू मिल कैं ८०८वर्ष मिथिला पर राज कैलन अछि। बाभन राजा से मिलकै मैथिली के शोषक के भाषा बनैलेन आ इ शोषित बंचित के भाषा न बन पायल। साथै सत्ता, साहित्य आ सांस्कृतिक प्रतिष्ठान पर आई तक बर्चस्व बनैले अछि।

लिंग्विंस्टिक सर्वे आफ इंडिया में मिथिला पर गिरियर्सन अपन विचार प्रकट करैत लिखैत अछि कि मिथिला एकटा प्राचीन इतिहास वाला देश अछि जे अपन परम्परा के आई तक बकरार राखने अछि। अखनौ इ भूमि ब्राह्मण एकटा वर्गक आधीन आ बर्चस्व में अछि। जे असाधारण रूप सं सत्ता आ कायदा कैं बकरार राखैं के दर्प स चूर अछि।

सैकड़ो साल सं मिट्टीक ई टुकड़ा पर बहुत गर्व करैत रहल अछि। आ उतर, पूरब आ पश्चिम सं लगातार आक्रमण कैं झेलैत ई अपन पारंपरिक विशेषता बनौने रखने अछि। व अन्य राष्ट्रीयताक लोक सभ के समान भाव सं नै अपनावैत अछि।

केदारनाथ चौधरी आबारा नहितन में लिखैत अछि जे रेणु जी अप्पन एकटा भेंट में हमरा बतलैनन कि मैथिली भाषाक क्षेत्र संकुचल, समटल आ एकटा विशेष जातिक एकाधिकार में अछि।

राजनीतिशास्त्रीक विचार अनुसार मिथिला में दू तरहक संस्कृति अछि। एकटा बाभन कायथक संस्कृति आ दोसर गैर बाभन कायथक संस्कृति अछि। उदाहरण के लेल जनेउ, शादी ब्याह आ अन्य शुभ अवसर पर पाग पहननाइ, मधुश्रावणी, कोजगरा, नव बधुकैं टेमी से दागक प्रथा, विधवा विवाह निषेध प्रथा, शुभ अवसर पर मांसाहार भोजन शामिल अछि। जौं कि इ सभ प्रथा गैर बाभन कायथक संस्कृति में नै अछि।

पं गोविन्द झा लिखैत छथि जे मिथिला में दूटा समाज अछि। जे एक दोसर से अपरिचित आ अंजान छथि।

बोली आ भाषा साहित्य कैं प्रश्न अछि। बिल्कुल अलग अछि। बाभन आ कायथ अपन मैथिली के शुद्ध आ मानक मानैत अछि। जे पाणिनि के व्याकरण जेना कठिन अछि।

आ बंचित समाज के मैथिली कैं पश्चमी मैथिल यानी बज्जिका, दक्षिणी मैथिली यानी अंगिका, पुरबी मैथिली यानी ठेठी आ रार भाषा मानैत अछि। ज्योंकि बज्जिका आ अंगिका में भाषा साहित्य के रचना भे गेल अछि। बज्जिका, अंगिका के सिद्ध कविजन के पदों के प्रयोग बर्णरत्नाकरमें

ज्योतिश्वर (१३२४) कैले अछि। बाबजूद वै बज्जिका, अंगिका के मैथिली कैं भाषा नै, बोली मानके छांटि देल जाइत अछि। एकटा बज्जिका साहित्यकार अपन रचल पोथी लेके मैथिली साहित्य, अकादमी गेला परंच रचना कैं मैथिली नै मानके लौटा देल गैल।

बाभनवादी बर्चस्व मिथिला के बंचित समाज के बौद्ध तथा कबीर साहित्य से अपरिचित राखै में कोनों कसर नै छोड़ैत अछि। तै बंचित समाज गैर ब्राह्मण साहित्य आ संस्कृति सं अनजान छथि। ब्राह्मण वर्ग अपन साहित्य आ संस्कृति के बल पर बंचित समाज कैं मानसिक गुलाम बनैले अछि। शास्त्र पुराण जेका मैथिली साहित्य भी ब्राह्मणक महिमा से भरल अछि। इनकर साहित्य में बंचित समाज कैं अपना जमाने के प्रसिद्ध मैथिली गायक पं मांगैन खबास, साहित्यकार फणीश्वरनाथ नाथ रेणु, मिथिला के स्वांतत्र्य प्रथम शहीद रामफल मंडल, साहित्यकार अनूप मंडल शहीद जुब्बा सहनी, शहीद पूरण मंडल आ शहीद मथुरा मंडल के कोई चर्चा नै अछि।

लेखक सह पत्रकार अरविंद दास अपना एकटा आलेख में लिखैत छथि कि इक्कसवीं सदी कैं दोसर दशक में भी मैथिली भाषा साहित्य में बाभन आ कायथ के ही उपस्थिति दिखाई देत अछि। मैथिली भाषा के में हाशिए पर के लोग जिनकर भाषा मैथिली अछि अदृश्य अछि।

इतिहासकार पंकज कुमार झा लिखैत छथि आधुनिक कालि में खास आजादी के बाद विद्यापति गौरवशाली मैथिल संस्कृति के प्रतीक चिन्ह बन के उभर लैन अछि।

अइ आधार पर मिथिला में दूं रंग के मैथिल अछि एगो बाभन आ दोसर सोलकन। मैथिली भी दूं रंग के एगो बाभन कैं मैथिली आ दोसर सोलकन के मैथिली। संस्कृत के नाटक में निम्नवर्गीय पात्र के भाषा के अपभ्रंश बना देल जाइत रहै। तहिना विद्यापति भी जन सामान्य के लेल गीत गाना आ उच्च वर्ग के लेल पुरुष परीक्षा लिखनन। वर्ग भेद के आधार पर एहन रचना संस्कृत आ मैथिली साहित्य में पायल जाति अछि। आजुक समय में भी मैथिली के संस्कृतनिष्ठ आ शास्त्रीय भाषा बनाबे के षड्यंत्र चल रहल अछि। जे जन सामान्य साहित्य आ संस्कृति से बंचित रहै।

मिथिला में एते उच्च नीच आ छुआछूत के भाव है कि बाभन दलित वर्ग के आइ तक पूजा पाठ आ संस्कार नै करवैत अछि। दलित के इहां भोजन के सवाले नै अछि। सोलकन के पूजा पाठ आ संस्कार करवैत अछि। परंच आइ धरि सिद्ध अन्न (भात, दाल) भोजन नै करैत अछि। परंच कोरंजाभोजन (चूड़ा, दही, चीनी, मिठाई आ फल) करैत अछि।

मंदिर में दलित गच्ची (मंदिर के चबूतरा) पर न चढ सकैत रहे। सोलकन मंदिर के गर्भगृह में नै जा सकै अछि। केवल जनेऊधारी जा सकैत अछि।

बंचित समाज के अइसे घबराय कैं नै चाही। कारण मैथिल आ मैथिली भाषी त बंचित समाज भी अछि। अप्पन संस्कृति आ समाज के हित में निर्भय आ नि: संकोच साहित्य सृजन करबाक चाहि।

***

कविश्वर चंदा झा बनाम भाषाविद ग्रियर्सन: मिथिला भाषा।

कविश्वर चंदा झा के जन्म पिंडारुच (दरभंगा) मे १८३१ई मे आ मृत्यु १९०७ई में भेल रहय। हुनकर मुख्य कृति मिथिला भाषा रामायण (१८९२) हय। परंच मिथिला में हुनकर रामायण के बारे मे मिथिला अंजान हय। इंहा के संत महात्मा आ कथावाचक सेहो अंजान लगैत हय। मिथिला मे एकाह नवाह में संत तुलसीदास कृत रामचरितमानस के पाठ होइए हय जे अवधि में हय। इतिहास बतबैय हय कि महाकवि विद्यापति के बाद महाकवि चंदा झा मैथिली के विकास में योगदान कैलन। परंच मिथिला के विद्वान हिनका उपेक्षा कैलन।

मैथिली के विकास में अंग्रेज पदाधिकारी भाषाविद ग्रियर्सन के महत्वपूर्ण योगदान हय। हुनकर जन्म१८५१आ मृत्यु १९४१मे भेल रहय। वो १८७०मे भारत अयलन। वो भारतीय भाषा सर्वेक्षण (१८५८) कैलन। सर्वेक्षण रिपोर्ट २१भाग मे हय। जैमैं १७९ भाषा आ ५४४ बोली के विस्तार से वर्णन हय। हुनकर मैथिली साहित्य मे मैथिली ग्रामर (१८८०), सेवेन ग्रामर्स आफ दी डायलेक्ट्स आफ दी बिहारी लैंग्वेज (१८३३-१८८७) .

इंहा महत्वपूर्ण इ हय कि वर्तमान मैथिली भाषाविद कहैत हतन कि भाषा के ग्रामर होइ छैय परंच बोली के ग्रामर न होइ छैय। ज्ञातव्य होय कि कालब्रुक मिथिला के भाषा के मैथिली नाम देलन आ जार्ज ग्रियर्सन मैथिली के क्षेत्र निर्धारण केलन।

कहल जाइत हय कि महाकवि चंदा झा मैथिली के क्षेत्र आ भाषा -बोली के निर्धारण मे जार्ज गिरियर्सन के भारी सहयोग कैलन। परंच प्रश्न उठय कि जौ मिथिला के भाषा के नाम मैथिली निर्धारित हो गेल रहय त महाकवि चंदा झा अपन कृति रामायण के नाम मिथिला रामायण आ मैथिली रामायण के बदले मिथिला भाषा रामायण काहे रखलन। कि हुनका लगलैन कि मिथिला के भाषा मैथिली कुछ वर्ग के भाषा हय। वास्तव मे मिथिला के भाषा मिथिला भाषा त बहुसंख्यक के भाषा हय। मिथिला भाषा रामायण मिथिला के भाषा (मैथिली, अंगिका, बज्जिका, सुरजापुरी आदि) अर्थात मिथिला भाषा के परिचायक हय।

***

मैथिली मानकीकरण।

आइ कालि एगो नव मैथिली भाषा शोध संस्थान जोर शोर से मैथिली के मानकीकरण पर भीरल हय। नेपाल के अंतरराष्ट्रीय मैथिली भाषाविद डॉ रामावतार यादव, वरीय आलोचक डा रमानंद झा रमण, वरीय साहित्यकार डा भीमनाथ झा आ अन्य के समूह द्वारा मैथिली के स्थिरीकरण के लेल मानकीकरण के आवश्यकता बतैलन। समुह द्वारा मैथिली के वर्तनी के स्थिरीकरण के दिशा मे काज कैल गेल। इहो बताएल गेल कारक के विभिक्त जोर के लिखल जाए। कारण कि आबि मैथिली विश्व भाषा बन गेल हय।

परंतु समुह मैथिली के विभिन्न शैली यथा अंगिका, बज्जिका, खोरठा आ नागपुरी पर कोनो विचार न कैलन। समुह अतीत के विचार से प्रभावित हो अइ सभ के उपेक्षित कैलन जेना अतीत मे करैत रहलैन।

मैथिली लोकभाषा के पाणणि के व्याकरण जेका संस्कृतनिष्ठ बनाके मैथिली के लोक से दूर कै देलन। अइ संदर्भ मे एगो घटना के स्मरण आवश्यक हय जे एकबार प्रसिद्ध साहित्यकार जगदीश प्रसाद मंडल के रचना के बर्तनी के बदल देल गेल रहय। परंच बाद मे इ विदेह पत्रिका वोइ रचना के हु बहु हु प्रकाशित कैलन। बाद मे जगदीश प्रसाद मंडल के उपन्यास पंगु पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत कैल गेल।

आब विचार के विषय इ हय कि केन्द्रीय मैथिली अर्थात मानक मैथिली जेकरा सोतीपुरा मैथिली कहल जाइ हय मे तत्सम शब्द के प्रयोग ज्यादा होइ हय जौं कि अंगिका -बज्जिका मे तद्भव आ देसी शब्द के प्रयोग होइ हय। वर्तनी मे जंहा मैथिली मे ण, ष, ऋ के प्रयोग कैल जाइ हय त इ बज्जिका मे ण, ष, ऋ के प्रयोग निषेध कैल गेल हय। ण के बदले न, ष के बदले स आ ऋ के बदले रि के प्रयोग कैल जाइ हय। तुलनात्मक अध्ययन कैला पर पायल जाइ हय कि एकरा उच्चारण से कोनो मतलब न हय बल्कि वर्तनी मे भिन्नता के द्योतक हय। एकटा गाम आ एकटा समाज के व्यक्ति के वर्तनी मे भिन्नता पायल जाइत हय। यथा – अतीत मे लोहना मधुबनी के विद्वान रमाकांत झा आ विद्वान कांचीनाथ झा किरण। वर्तमान मे वोही गाम के कथाकार अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास।

मिथिला के विभिन्न क्षेत्र वर्तमान मे बज्जिकांचल आ अंगिकांचल हो आ अतीत के मिथिला आ तिरहुत क्षेत्र के मैथिली भाषा भिन्नता के बोली कह के खारिज करनाई अपने पैर पर अपने कुरहर चलनाइ साबित होयत। भिन्न-भिन्न क्षेत्र के शब्द आ वर्तनी के समेकित करनाई आवश्यक प्रतीत होइ हय। शब्द आ वर्तनी के पर्यायवाची बनाबे के आवश्यकता हय। परंच वर्तनी के नाम पर वर्तमान संपादक महाकवि विद्यापति के अवहट्ट रचना के शुद्ध मैथिली बनाबे पर भिरल हय।

***

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस २१ फरवरी के मनायल जाइत हय। यूनेस्को द्वारा १७ नवंबर १९९९ के घोषणा कैल गेल रहय आ २००० ई से दुनियाभर मे अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के आयोजन कैल जा रहल हय।

यूनेस्को के अनुसार संसार मे ८३२४भाषा आ बोली हय। अइमे अनुमानित ७००० भाषा अभियो व्यवहार कैल जाइ हय। तैयो भाषा विविधता खतरा मे हय। केते भाषा समाप्त हो रहल हय। अध्ययन के अनुसार भाषा बर्चस्ववाद के कारण सेहो भाषा समाप्त हो रहल हय। जेना अंग्रेजी के कारण हिन्दी, हिन्दी के कारण मैथिली आ मैथिली के कारण अंगिका बज्जिका भाषा मे क्षरण हो रहल हय।

भारत मे लगभग २२ आधिकारिक रूप से मान्यताप्राप्त भाषा हय। १६३५ मातृभाषा आ २३४ पहचान योग्य मातृभाषा हय।

भारत मे संविधान के आठवीं अनुसूची मे २२भाषा यथा असमिया, बांग्ला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणीपुरी, मराठी, हिंदी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलगु, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली आ डोंगरी सम्मिलित हय।

मनुष के के जेना जन्म के संग विशेष सूरत मिलैत हय वहिना एकटा भाषा सेहो मिलैत हय। जे हमर मातृभाषा होइ हय। आ अही से हमर शारीरिक आ मानसिक विकास होइ हय।

शिक्षा के अधिकार अधिनियम २००९के अनुसार शिक्षा के माध्यम मातृभाषा होनाइ हय।

***

मिथिला बनाम तिरहुत।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दरभंगा मे एम्स के शिलान्यास कार्यक्रम मे कहलन कि एम्स के निर्माण से मिथिला आ तिरहुत के संगे सम्पूर्ण उत्तर बिहार के स्वास्थ्य सेवा लाभ मिलत आ विकास होयत। वोइ आधार पर तिरहुत मिथिला न हय आ न एकर मातृभाषा मैथिली हय।

मिथिलाविद् रेवती रमण झा के अनुसार मिथिला माने ओ सांस्कृतिक क्षेत्र जत' के लोक भाषा मानक मैथिली अछि। तिरहुत माने ओ भौगौलिक क्षेत्र जे विदेह कहबै छल।
ओना प्रस्तावित मिथिला राज्यमे उत्तर आ दक्षिण बिहारक ओ समस्त क्षेत्र अबैयै, जत' मानक समेत मैथिलीक अन्य बोली सभ बाजल जाइयै (ग्रियर्सनक भाषा सर्वेक्षण आ भाषाई मानचित्रक आधार पर)।
आब गंगा के दच्छिणी भू भाग केना मिथिला आ तिरहुत क्षेत्र मानल जतैय। मान लू कि अमेरिका कोनो भूभाग के लोग मैथिली बोले लगतैय कि वो मिथिला हो जतैय। दोसर मिथिला आ तिरहुत क्षेत्र विदेह रहैय। दोसर बात इ कि भौगोलिक क्षेत्र राज्य के निर्धारण करैय छैय सांस्कृतिक क्षेत्र न। भौगोलिक प्राकृतिक आ राजनीतिक सेहो होइ छै। आब जे उत्तर बिहार हय वो दू भाग में बंटल हय मिथिला आ तिरहुत में। सम्पूर्ण उत्तर बिहार प्राकृतिक रूप से आ भौगोलिक रूप से मिथिला न हय। विद्वान महंत अशोक कुमार दास के अनुसार मिथिला के चौहद्दी उत्तर में हिम क्षेत्र, दक्षिण में गंगा, पूरब में कोशी क्षेत्र आ पश्चिम में नारायणी वा गंडकी कहल गेल हय। प्राकृतिक नक्शा समय के संग बदलैत रहय छै। आइ जे मिथिला क्षेत्र हय वोइसे प्राचीन मिथिला बड नम्हर रहैय। जेइ पूर्खक मिथिला भूभाग के लेल सीता लड़लन वो चीन आ कोरिया मे हय। आब रामायण में त तिरहुत क्षेत्र के मिथिला कहल गेल हय संगे दरभंगा क्षेत्र के सेहो मिथिला कहल गेल हय जैमे सीता उद्भव आ अहिल्या उद्धार स्थल हय। तब केना सांस्कृतिक क्षेत्र मिथिला आ भौगोलिक क्षेत्र तिरहुत कहल जतैय। कोनो तथ्य सही न लगैय हय। विभिन्न तथ्य मे मतान्तर हय। जौं महर्षि बाल्मीकि आ संत तुलसीदास मतैक्य न छतन त बांकी के कोन हाल। आब सांस्कृतिक, भौगोलिक आ भाषा बोली क्षेत्र न। राजनीतिक बिहार के प्रशासनिक, विकास आ सीमांचल रक्षा के कारण बंटवारा होय। उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य सम्पूर्ण राज्य बनैय न कि केंद्र शासित प्रदेश।

***

मगध बनाम मिथिला।

नौ महाजनपद मे मगध महाजनपद सर्वशक्तिमान रहय।
मगध सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के जन्म मगध साम्राज्य के राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) मे ३४५ईपू भेल रहे। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्य साम्राज्य के स्थापना कैलन। समूच्चा भारत के एकटा साम्राज्य के अधीन लाबे के काज कैलन। वो ३२०ईपू से २९८ईपू तकि शासन कैलन। वो आचार्य चाणक्य के सलाह से शासन चलैलन।
सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के पोता आ सम्राट बिन्दुसार के पुत्र सम्राट अशोक के जन्म ३०४ ईपू भेल रहय। वो २६९ईपू से २३२ईपू मगघ साम्राज्य पर शासन कैलन। आ हिंदू कुश से गोदावरी नदी आ वर्तमान बांग्लादेश से लेके पच्छिम मे अफगानिस्तान आ ईरान तक साम्राज्य विस्तार कैलन। आ अखंड भारत पर राज कैलन। सम्राट अशोक का राज्य वर्तमान मे भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, म्यांमार आ ईरान तक फैलल रहय।
सम्राट अशोक भगवान बुद्ध के अनुआयी रहलन। आ बौद्ध धर्म के भारत से बाहर विस्तार कैलन। आइयो भारत के बुद्ध के धरती कहल जाइ हय।
बौद्ध मठ के विहार कहल गेल हय। अइ लेल बंगाल से बंटबारा के बाद नव राज्य के नाम विहार पड़ल। अइ लेल मिथिला आ मैथिली के नाम पर बिहार आ मगध के बदनाम करनाई अनुचित हय। अइसे भगवान बुद्ध सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक आ आचार्य चाणक्य के नाम बदनाम होइ हय।
एनी हिमालय से दक्षिण, गंगा से उत्तर गंडकी नारायणी से पूरब आ कोशी से पच्छिम मिथिला राज रहे। जेकर राजधानी जनकपुर रहय। राजा जनक रहलन। धिया सीता के जन्म मिथिला (भारत) मे भेल रहय। अयोध्या के राजकुमार श्री राम से सीता के बिआह भेल रहय। हिंदू धर्म मे सीता के जगज्जननी मां सीता आ श्री राम के भगवान मानल जाइ हए।
मिथिला राज्य निर्माण के मांग सर्वथा उचित आ संवैधानिक हय। परंतु अइमे घृणा आ उपेक्षा के कोई स्थान न हय।

***

मिथिला -मैथिली: असमंजस स्थिति।

पहिले मिथिला। मिथिला राज्य निर्माणी असमंजस मे हय। कोनो प्राकृतिक मिथिला राज्य निर्माण के विचार मे हय। वो भारतीय आ नेपाली मिथिला के बात करैत हतन। अइ के लेल अतीत मे डा लक्ष्मण झा आ अन्य पाया तोड़ो आंदोलन कैलन। त कोई जेना अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद के संरक्षक डा धनाकर ठाकुर उत्तर बंगाल आ झारखंड के कुछ भाग मिला के मिथिला राज्य निर्माण के विचार रखैत हतन। परंच दुनु विचार सामयिक न हय। भारत आ नेपाल स्थित मिथिला के एक्कीरण के लेल सुगौली संधि के रद्द करे के होतैय जे अंग्रेज़ आ नेपाल सरकार के बीच भेल हय। इ एगो अंतरराष्ट्रीय मामला हय। अइ पर नेपाल कहियो सहमत न होयत आ एगो नया विवाद खड़ा हो जायत।

दोसर बंगाल के उत्तर भाग आ झारखंड के कुछ भाग, दो राज्य के मामला बनत। वो राज्य कैला सहमत होयत।

राज्य पुनर्गठन के मामला केंद्राधीन होइ छैय परंच प्रस्ताव के राज्य विधान मंडल से पारित होनाइ आवश्यक होइ छैय। एकटा स्थिति इ होइ छैय कि राज्य मे राष्ट्रपति शासन होइ। अइ स्थिति मे संसद राज्य पुनर्गठन विधेयक के पारित कर सकैय छै। परंच राष्ट्रपति शासन लागू करनाइ टेढ़ी खीर हय।

अइ स्थिति मे उतर बिहार के मिथिला राज्य निर्माण के मांग उचित होयत। कारण कि वर्तमान बिहार सरकार प्रशासनिक रूप से बिहार के उत्तर बिहार आ दक्षिण बिहार मे बांट देलय हय। यथा -उत्तर बिहार ग्रामीण बैंक आ दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक। उत्तर बिहार विद्युत प्राधिकरण आ दक्षिण बिहार विद्युत प्राधिकरण। केन्द्रीय सरकार दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय गया के निर्माण कैले हय। अइ स्थिति में केंद्र सरकार आ बिहार सरकार से जायज मांग कैल जा सकैय हय। उत्तर बिहार के सासंद आ विधान मंडल सदस्य सरकार पर दबाव बना सकैय हय। अइ प्रकार उत्तर बिहार के मिथिला राज्य बना के मिथिला राज्य के सपना पूरा भ सकैय हय।

आबि मैथिली। प्राकृतिक मैथिली खंड खंड मे बंटल हय। जेना केन्द्रीय वा मानक मैथिली, पच्छमी मैथिली वा बज्जिका दच्छिणी मैथिली वा अंगिका। कोनो साहित्यकार पच्छमी मैथिली के गिरल मैथिली वा बोली कहैत हतन त कोनो दच्छिणी मैथिली के छिका छिकी कहि के अपमानित करैत हतन। सरकार बज्जिका आ अंगिका के अलग-अलग करे पर तुलल हय त मानक मैथिली साहित्यकार भंगिआयल हय। सभ कालिदास के चेला बनल हतन। पाग -दुपट्टा के खेल खेलैत छतन। हुनका मैथिली के विकास आ संवर्द्धन से कोनो मतलब न हय। वो अभियो मैथिली महासभा के पारित प्रस्ताव के मिथिला के कानून बुझैत हतन। आबि हमरा सभ के समेकित मैथिली बनाबे के पड़त। मैथिली के भिन्न-भिन्न रूप केन्द्रीय मैथिली, पच्छमी मैथिली आ दच्छिणी मैथिली के मान साहित्य में स्थान देबे के पड़त। असमंजस से उबरू।

आउ मिथिला -मैथिली के विकास आ सम्बर्द्धन के लेल मिलजुल कर डेग बढ़ाउ।

जय मिथिला! जय मैथिली!

***

मिथिला राज्य बनाम राजनीतिक दल।

मिथिला आ बिहार दूटा संस्कृति के परिणाम हय। मिथिला सनातन संस्कृति के त बिहार बौद्ध संस्कृति के परिचय कराबैत हय। पहिले बंगाल से बिहार। पुनः बिहार से उड़िसा आ फेर बिहार से झारखंड अलग राज्य निर्माण भेल। आब मिथिला राज्य के निर्माण के बात हो रहल हय। आजादी के बाद मिथिला राज्य पुनर्गठन के बात भेल परंच तत्कालीन केंद्रीय सरकार बात न मानलन। पहिले मैथिली के हिंदी के बोली मानल जाइत रहय आ मैथिली महाकवि विद्यापति हिंदी के पोथी में विराजमान रहय आ आइओ हय। बाद मे एन केन प्रकारेण मैथिली संविधान के अष्टम सूची मे शामिल भेल। आब मिथिला राज्य पुनर्गठन के जोर पकड़ले हय। परंतु इ चाह के प्याली में चाह के उफान जैसन लगय हय। कारण केवल मिथिला -मैथिली संगठन अपन सांस्कृतिक कार्यक्रम मे डीजे बजबैत छतन। आम मिथिलावासी के अइसे कोनो मतलब न हय। सभ मिथिला -मैथिली संगठन भूराबाल खास क के बाभन आ कर्ण कायस्थ से भरल हय। अइमे सोलकन के प्रतिनिधित्व न के बराबर हय। हय सेहो भूराबाल के गुलाम जैइसन हय।

हाल मे राजद के बिधान परिषद के विरोधी दल के नेता आ राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के पत्नी आ पूर्व मुख्यमंत्री रावरी देवी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिथिला राज्य के मांग कैलन हय। अइ पर अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद के संस्थापक अध्यक्ष धनाकर ठाकुर राबरी देवी के मांग के समर्थन करैत टोंट कैलन हय कि इ मैथिल वोट के राजनीतिक दबाव के चलते कैलन हय। कि आबि मिथिला राज्य के कोनो राजनीतिक दल उपेक्षा न कर सकैत हय। लालू यादव पहिले झारखंड राज्य निर्माण के विरोध कैलन कि झारखंड हमर लाश पर बनत बाद में झारखंड राज्य निर्माण के समर्थन कैलन आ झारखंड राज्य बनल। जनेउ आ मैथिली के विरोध कैलन। मैथिली के बीपीएससी में खतम कैलन। भूराबाल के चर्चा कैलन। अइ संदर्भ में विचारणीय हय कि जनेऊ के विरोध त लोकनायक जयप्रकाश नारायण सेहो कैलन आ जनेऊ तोड़ो अभियान चलैलन। आइयो केते बाभन जनेउ तोड़ले हतन आ जनेउ न पहिनैत हतन। मैथिली के हटाबे के कारण रहय कि बीपीएससी के रीजल्ट मे मैथिली विषयधारी के अधिकता भे गेल आ मैथिली संशय मे आ गेल। स्वाभाविक रूप से मिथिली के बीपीएससी से निष्कासित कैल गेल। वर्तमान में मुख्यमंत्री नितीश कुमार मैथिली के केवल क्वालिफाईग बिषय बना देलन। एकर अंक जोडल न जाइ हय। मैथिली प्रिय लोग एकर विरोध करैत हतन। परंच पारदर्शिता के लेल इ उचित निर्णय हय। आबि जेना मिथिला में संपूर्ण जाति के दू भाग में बांटल जाइत हय यथा -बाभन आ सोलकन। परंतु इ सम्पूर्ण मिथिला जाति के न दर्शाबैत हय। अइमे राजपूत, भूमिहार आ कायस्थ छूट जाइ हय। जौं एकरा फारवर्ड कहल जाय आ सोलकन के बैकवर्ड कहल जाय त इ समुचित हय। परंच मैथिल के संवैधानिक शब्द से घृणा होइ हय। जौं बाभन यानी भूमिहार, राजपूत, बाभन आ लाला (कायथ) के भूराबाल कहल जाय त इ समुचित हय। इ त फारवर्ड के विकल्प भूराबाल हय। जौं बैकबार्ड के सोलकन कहल जा सकैय हय त फारवर्ड के भूराबाल केला न कहल जा सकैय हय इ

त संक्षेपाक्षर हय। अइमे बुरा बात त न हय। मैथिली के साइक्लोपिडिया वर्णरत्नाकर में सोलकन शब्द न मिलैत हय। अंत मे मिथिला राज्य पुनर्गठन पर जौ राजनीतिक दल एलर्ट भेल हय त मिथिलावासी के सेहो एलर्ट हो जाय के चाही कि मिथिला राज्य त बनत त हमर उपस्थित केना रहत। कहीं इंडिया इज रीच बट इंडियन्स आर पुअर बनके न रह जाए।

***

उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य: पुनर्गठन।

बिहार विधानसभा के चुनाव आबि नजदीक हय। इ चुनाव २०२५ मे होयत। परंच हमर मिथिला राज्य निर्माण के काज अधर में हय। सभसे पहिला काज हय मिथिला राज्य के सीमांकन। कुछ विचारक प्राकृत मिथिला राज्य हय जे आबि समयानुकूल न हय। पाया तोड़ो आंदोलन राष्ट्र विरोधी कृत्य हय। एकरा संवैधानिक निदान के लेल सुगौली संधि पर पुनर्विचार करे के होतैय। परंतु नेपाल अइसन काहे चाहत आ केन्द्रीय सरकार नेपाल आ भारत विवाद काहे पैदा करत। कुछ विचारक उत्तर बंगाल आ झारखंड के कुछ भाग मिला के मिथिला राज्य चाहैत हय। इहो समयानुकूल न हय। राज्य पुनर्गठन के अधिकार केन्द्रीय सरकार मे निहित हय परंच राज्य पुनर्गठन हेतु राज्य सरकार से पारित प्रस्ताव आवश्यक हय। त बंगाल आ बिहार अइसन काज काहे करत। आ अइ दिशा में मिथिला राज्य निर्माणी काज करे में असमर्थ हय।

मिथिला राज्य निर्माण के सामयिक विचार इ हय कि मिथिला राज्य निर्माण के उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य सीमांकन आ राज्य सरकार द्वारा मिथिला राज्य के प्रस्ताव देवे के लेल उपयुक्त हय। कारण राज्य सरकार प्रशासनिक रूप से बिहार के उत्तर बिहार आ दक्षिण बिहार में बांट देले हय। उत्तर बिहार आ दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक आ विद्युत आपूर्ति प्राधिकरण। केन्द्रीय सरकार सेहो दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय गया के निर्माण क देले हय। इ आधार उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य के मांग के मजबूत क रहल हय।

मिथिला राज्य निर्माण के लेल एगो काज योजना पर विचार अपेक्षित हय।

१.वर्तमान राजनीतिक दल के उत्तर बिहार स्थित राजनीतिक नेता अपना चुनाव घोषणा पत्र में उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य निर्माण के घोषणा हेतु दृढ़ संकल्पित होय। जे राजनीतिक दल के घोषणा पत्र में मिथिला राज्य निर्माण के घोषणा न होय वोकरा चुनाव प्रत्याशी के समर्थन न कैल जाय।

२.मिथिला राजनीतिक दल मिथिला राज्य निर्माण के घोषणा करें वाला दल से गठबंधन के चुनाव लड़े।

३. वर्तमान उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य के विधान मंडल सदस्य विधान मंडल मे उतर बिहार अर्थात मिथिला राज्य के प्रस्ताव पारित कराए अन्यथा हुनकर बिरोध कैल जाय। हुनका चुनाव में कदापि समर्थन न कैल जाय। ४.उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य स्तरीय कार्यकारिणी, जिला स्तरीय कार्यकारिणी आ प्रखंड स्तरीय कार्यकारिणी के गठन कैल जाय। कार्यकारिणी में सभ वर्ग के प्रतिनिधित्व देल जाए।

उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य निर्माण के लेल सहज मार्ग मिलत आ उत्तर बिहार अर्थात

मिथिला राज्य के सपना पूरा होयत।

***

उत्तर बिहार अर्थात मिथिला राज्य।

मिथिला मे मिथिला राज्य निर्माण के लेल बात -बिचार होइत रहय हय। परंच मतभिन्नता पायल जाइत हय। मिथिला के नक्शा पर विवाद हय। कहियो मिथिला राज्य निर्माण आंदोलन में भारत नेपाल सीमा पर अवस्थित पाया तोड़ो अभियान चलल रहय। अभियो कुछ मिथिला राज्य अभियानी भारत आ नेपाल स्थित मिथिला के समेकित मिथिला राज्य निर्माण के बात करैत हय। त कोई बंगाल आ झारखंड के कुछ भाग नया मिथिला राज्य निर्माण में चाहैत हतन। जे उचित न हय। प्राकृतिक मिथिला आबि छिन्न भिन्न हय। जेना आबि प्राकृतिक भारत संभव न हय, तहिना प्राकृतिक मिथिला संभव न हय। आबि भाषा के आधार पर मिथिला राज्य संभव न हय।
एकटा बात आउर के नेपाल मे मिथिला राज्य न बन के मधेश राज्य बन गेल। वोइसे सीख लेबे के आवश्यकता हय। आखिर कैला न मिथिला राज्य बनल। मधेश राज्य बनला पर भी वहां के बासी के धीया सीया से प्रेम कम न हय। असल मे वो राजनीतिक आ सामाजिक विरोध के कारण मिथिला राज्य न बन के मधेश बन गेल। आबि लोग के समझे के चाही कि आबि राजतंत्रात्मक विचार लागू न हो पायत। चाहे वो जनक राज्य कैला न हो। भारतो मे आबि राम राज्य न चलत। कुछ विचारक सांस्कृतिक मिथिला राज्य के बात करैत हतन वोहो आबि न चलत। वर्तमान समय मे संवैधानिक वा राजनैतिक राज्य के बिचार होय के चाही। वर्तमान मे जे मिथिला राज्य निर्माण के बात हो रहल हय वो पक्षीय जान पड़ैत हय। वो सर्वपक्षीय होय के चाही। सभ वर्ग के साझेदारी होय के चाही। सर्वसम्मति होय के चाही।
वर्तमान बिहार सरकार प्रशासनिक रूप से बिहार के दो भाग में बांटि देलय हय। उत्तर बिहार आ दक्षिण बिहार। दक्षिण बिहार मे विकास के ज्यादा काज हो रहल हय। वास्तव मे उतर बिहारे मिथिला हय। जे पिछड़ल हय।
निष्कर्षत: संवैधानिक, राजनीतिक आ प्रशासनिक रूप से मिथिला राज्य के लेल उत्तर बिहार उपयुक्त हय। मिथिलावासी उत्तर बिहार के मिथिला राज्य बनाबे के मांग बिहार सरकार आ भारत सरकार से करे के आवश्यकता हय। सभ मिथिलावासी के मिथिला राज्य के लेल संवैधानिक संघर्ष के आवश्यकता हय।

***

मधेश प्रदेश बनाम मिथिला।

हाले मे ३५म अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन सिरहा मे आयोजित भेल हय। सम्मेलन मे एगो महत्वपूर्ण मांग भेल कि मधेश प्रदेश के नाम बदल के मिथिला प्रदेश होय। ज्ञातव्य हो कि लम्बा संघर्ष के बाद नेपाल मे प्रांत -२के नाम मधेश प्रदेश बनल। विवाद राजधानी आ प्रदेश के नाम के ले रहय। प्रांत -२ मे आठ जिला हय आउर आठो जिला के भाषा अलग अलग हय। यथा वीरगंज क्षेत्र में अवधि, सप्तरी साइड मे थरूहट, जनकपुर क्षेत्र में मैथिली त गौर साइड में अलग भाषा हय। त नेपाल के महत्वपूर्ण औधोगिक क्षेत्र वीरगंज के राजधानी आ प्रदेश के नाम मिथिला रहय। परंतु शेष जिला जनकपुर के राजधानी आ प्रदेश के नाम मधेश राखै चाहै। बहुमत के आधार पर प्रदेश न -२के नाम मधेश प्रदेश आ राजधानी जनकपुर राखल गेल। परंतु कुछ लोग एकर विरोध क रहल हय।

आब विचार करय के आवश्यकता इ हय कि भारत के एगो अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद, जयनगर के वरीय पदाधिकारी संरक्षक, अध्यक्ष आ अन्य पदाधिकारी मधेश प्रदेश के नाम बदल कर मिथिला राज्य बनाबे पर सहमति जतैलन।

वर्तमान में भारत मे मिथिला राज्य पुनर्गठन के लेल संघर्ष कैल जा रहल हय। मिथिला राज्य निर्माणी संगठन मे मतभेद हय। मिथिला के परिसिमन पर मतभेद हय। अइ परिस्थिति में अंतरराष्ट्रीय राजनीति मे परनाइ उचित कदम न कहल जा सकैय हय। नेपाल आ भारत के मिथिला मे रोटी -बेटी के संबंध अवश्य हय परंतु नेपाल के राजनीतिक स्थिति मे आब रोटी -बेटी के संबंध पर प्रश्न चिन्ह लाग रहल हय। आब भारत के बेटी के सात साल बादे नेपाली नागरिकता मिले के प्रावधान हय। महत्वपूर्ण बात इ कि बहुमत के निर्णय जौं मधेश प्रदेश के पक्ष में हय त भारत के मिथिला राज्य निर्माणी के नेपाल मे टांग अंड़नाइ कदापि उचित न हय। वो बहुमत भारत के मिथिला पुनर्गठन मे बाधा बन सकैय छैय। उहां के मधेश प्रदेश के समर्थक राजनीतिज्ञ भारत के मिथिला निर्माण में टांग अड़ायत। अंततः उचित इ हय कि अपन भारत मे मिथिला राज्य पुनर्गठन पर ध्यान देल जाय।

***

मिथिला से पलायन बनाम आर्थिक उन्नति।

आइ कालि मिथिला के आर्थिक विकास मे मैथिल के पलायन के बाधक मानल जाइ छै। अइ के समुचित जानय के लेल मिथिला के अतीत काल के विकास पर चर्चा करनाई आवश्यक हय। मिथिला भारतवर्ष के एगो कंगाल भूभाग पायल जाइत हय। पहिले दरभंगा के भिखमंगा जिला लोग कहैत रहल हय। जौं कि मिथिला राज के राज के राजधानी रहय। इंहा तक कि मिथिला राज दरभंगा राज सेहो बन गेल। मिथिला मे पटसन उद्योग, कागज उद्योग, चीनी उद्योग मुख्य रूप से रहय। एकरा अलाबे माछ, पान आ मखाना सेहो आय के साधन रहय। परंच अइ से मिथिला के समुचित विकास न भेल। मिथिला के लोग अत्यधिक गरीब रहय। खास क के अतिवृष्टि आ अनावृष्टि से तबाह रहय। मिथिला के अल्पलोग मिथिला से पलायन करे आ खुश रहय। शेष जे जमींदार रहय वो खुशहाल रहय। जे लोग जमींदार के आगे -पीछे रहय वो निमन रसय। अत्यधिक लोग दुखी आ कंगाल आ गुलाम रहय। आजादी के बाद लगभग अस्सी के दशक तक हरबाही प्रथा रहय।

गंगा पर पुल बनला के बाद मिथिला मे विकास का नया अध्याय शुरू भेल। ज्यादा से ज्यादा लोग मिथिला से पलायन करे लागल। लोग बंगाल कि अरबियन देश तक पलायन क गेल। आ मिथिला विकास के सीढ़ी पर उतरोतर चढ रहल हय। आब मिथिला के गांव मे फूस आ भित्ति के घर दिखाई न दे रहल हय। मिथिला के हांसिया पर के समाज के व्यक्ति सरकारी उच्च पद पर पदासीन देखल जा रहल हय। मिथिला के हरबाह, चरबाह आबि देखय में न आबैय हय। सरकारी विद्यालय छात्र आ अध्यापक से भरल लगैय हय। फुस के विद्यालय आबि अट्टालिका बन गेल हय। एतबे न गाम जवार में सेहो प्राइवेट स्कूल बन गेल हय। हासिया के बच्चा प्राइवेट स्कूल मे पढ रहल हय। कपरा लत्ता आ भोजन के केकरो दीक्कत न हय। सभ में आत्मसम्मान आ आत्मबल से पूर्ण भेल हय।

मिथिला के आधुनिक आ विकास पलायन से संभव भेल हय। आदिम युग के पलायन से आधुनिक युग के निर्माण संभव हय। मिथिला से पलायन मिथिला के उन्नति मे सहायक हय।

***

मिथिला राज्य बनाम मुस्लिम राज्य।

हाले मे बिस्फी विधायक हरिभूषण ठाकुर बचौल के वक्तव्य मिथिला राज्य बनाबेवाला मुस्लिम राज्य बनाबेला चाहैत हय। इ हमर मिथिला राज्य के बिरोध हय। एकर बिरोध मे मिथिला स्टुडेंट युनियन विस्फी तक विरोध मार्च निकाललन। बिरोध से अधिक आवश्यकता इ हय कि एकर समीक्षा आवश्यक हय। कारण बचौल भारतीय जनता पार्टी से बिस्फी विधायक हतन। मिथिला राज्य निर्माणी के भारतीय जनता पार्टी आ केन्द्रीय सरकार से मिथिला राज्य निर्माण के आशे न पूर्ण विश्वास हय। त बचौल एहन वक्तव्य काहे देलन। कि हुनका मिथिला राज्य सीमांचल राज्य बुझाइ छै। कारण उत्तर बिहार के पुरबे पच्छिमे मे बांटल जाय के सेहो चर्चा हय। जे पश्चिम बंगाल से लेके गंडकी तक होयत। नार्थ ईस्ट कारीडोर जेना। भारत के सुरक्षा के लेल आवश्यक मानल जाइत हय। सीमावर्ती मिथिला मुस्लिम बहुल क्षेत्र मानल जाइ छै। बंगला देशी मुसलमान के घुसपैठ जारी हय। कहीं इहे आशंका बचौल के वक्तव्य त न हय।

अंतरराष्ट्रीय मैथिली परिषद के पूर्व संस्थापक आ वर्तमान प्रवक्ता धनाकर ठाकुर केन्द्र शासित मिथिला राज्य से सहमत हतन। नार्थ ईस्ट कारीडोर सीमांचल राज्य केन्द शासित प्रदेश के चर्चा मिथिला मे हय।

त इ दुनू चर्चा मिथिला राज्य अर्थात मुस्लिम राज्य के बल देइत हय। त अइ चर्चा के गहन विश्लेषण के आवश्यकता हय।

***

मिथिला राज्य बनाम राजधानी सीतामढ़ी।

धनाकर ठाकुर -जे दरभंगा राजधानी लिखैत छथि ओ मिथिला राज्य नहि चाहैत छथि। डा लक्ष्मण झा मुजफ्फरपुर लिखने छथि; देवघर तक लेलाक चलते हम बरौनी लिखने छी आब पटनहि आधा चंडीगढ़ जकां बजैत छी।

् आचार्य रामानंद मंडल -पहिले जनकपुर आबि राजधानी सीतामढ़ी होय के चाही। सीता जन्मभूमि सीतामढ़ी।

धनाकर ठाकुर -सीता मिथिला क विवाहित बेटी अयोध्या गेलीह। हूनक ननदोसि सिंह्श्वरमे ओतहु राजधानी मधेपुरा मध्य पुरा, पुर्णिया पुरान, भागलपुर मे नवाबी कालमे पूरा मिथिला ़छल हमर, मुजफ्फरपुरम् त मधुबनी सेहो छस। कतहुँ जतसँ मिथिला के आवाज अधिक ऊठत, ओरहन हम ़पक्षधर। मिथिला राज्य पहिले।

आचार्य रामानंद मंडल -परंच राज्य आ राजधानी के निर्णय पहिले होय के चाही। इ न कि दिल्ली से दौलताबाद। नेपाल के दृष्टांत सामने हय।

उक्त फेसबुक वार्ता के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषद के पूर्व संस्थापक अध्यक्ष आ वर्तमान प्रवक्ता धनाकर ठाकुर के दृष्टि मे मिथिला राज्य के राजधानी के नाम अनिश्चितता के स्थिति मे हय। इ अनिश्चितता मिथिला राज्य निर्माण मे बड़का बाधक हय। मिथिला राज्य आंदोलन के सर्वसम्मति के लेल मिथिला राज्य के राजधानी के नाम निश्चित होनाइ आवश्यक हय। आचार्य रामानंद मंडल के प्रस्ताव मिथिला राज्य के राजधानी के लेल उपयुक्त नाम सीतामढ़ी हय। कारण प्राचीन जनक काल मे मिथिला के राजधानी जनकपुर रहय। आबि जनकपुर नेपाल मे हय आ मधेश प्रांत (नेपालीमिथिला) के राजधानी हय। भारतीय मिथिला राज्य के राजधानी धिया सीता के जन्मभूमि सीतामढ़ी सर्वोपयुक्त होयत।

***

मैथिली आ टुटल फुटल हिंदी।

मैथिली आ टुटल फुटल हिंदी। पुरनका मुजफ्फरपुर जिला माने कि सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर आ वैशाली के लोग न जनैत हय कि हमर मातृभाषा कि हय। इंहा तक कि हमहू न अपन उमर साठ बरिस तक जनैत रहली हय। हम सभ इहे जनत रहली हय कि हम सभ टुटल फुटल हिंदी बोलैय छी। एकर कारण इहो रहै कि जे कर कुटुम मधुबनी आ दरभंगा वाला रहे वोकर बोली हमरा बोली से न मिले। जेना हम सभ अमधुर कही त वो लताम बोले। हम औरा बोली त वो धातृ बोले। हम सभ मधुबनी आ दरभंगा वाला के मैथिली समझी आ अपना के टूटल फुटल हिंदी बाजे वाला। अभीओ इहे हाल हय। एनी मालूम भेल कि पुरनका मुजफ्फरपुर वाला बज्जिका बोलै हय। एहुमे साहित्य रचल गेल हय। लेकिन बज्जिका ब्याकरन दू हज़ार ईसबी के बाद बनल हय आ मैथिली से अलग करे के मानक तय कैल गेल हय। अध्ययन करे पर पता लागल कि इ पच्छमी मैथिली हय। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक गिरियरसन अइ बात के अपन भासा सर्वेक्षण रिपोर्ट में लिखले हय। सीता के जनम भी सीतामढ़ी मे भेल हय। जेकर एगो नाम मैथिली भी हय। इ मिथिला मे भी हय। त एकर भासा मैथिली त स्वाभाविक हय। शैली अलग हो सकै छई। अइ बात के मधुबनी आ दरभंगा के विद्वान भी अपना विद्वत्ता के अहंकार में उपेक्षित कैलन। एतबे न मैथिल महासभा केवल बाभन आ कर्ण कायथ के मैथिल माने आ पंचकोसी के बोली के शुद्ध मैथिली मानलन। सच बात कहुं त मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापति के नकारलन। भले हुनकर मूर्ति के पूजनल। लेकिन विचार पर धूल धैलन। तैइसे मैथिली आ मिथिला सिकुरे लागल। लेकिन आबि मिथिला आ मैथिली के विद्वान के नजर अइ बात पर गेल आ वो सभ एकरा लेल अभियान चला रहल छथि। अइ शुभ काज मे अजय नाथ शास्त्री, सचिदानंद सच्चू जी, किसलय कृष्ण आ राजीव झा एकांत आदि लागल हय। अइ काज मे दैनिक मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश योगदान क रहल हय। आबि इ अखबार गंगा के उत्तर के सभ जिला के भासा के मैथिली मानैत अपना मे समाहित करैत मैथिली आ मिथिला के मजबूत क रहल हय। आइ मिथिला आ मैथिली समावेशी बन रहल हैय। आबि मिथिला के हर जिला मे मैथिली जनजागरण अभियान चलाबे के आवश्यकता हय। जे लोग बुझे कि हम जे बोलैय छी वो टुटल फुटल हिंदी न मैथिली हय।

***

मैथिली साहित्य मे परिवर्तन से आस जागल।

बात शुरू करब ज्योतिश्वर से अजित आजाद तक। ज्योतिश्वर आ महाकवि विद्यापति मैथिली मे साहित्य न रचलन। वो संस्कृत आ अवहट्ट मे साहित्य रचलन। महाकवि त अवहट्ट के देसिल बयना कहलन। वोइ समय मे मैथिली भासा नामो न रहय। बाद मे एकर नाम मैथिली भासा नाम परल। अइमे भासाविद अव्राहम ग्रियर्सन के भासा सर्वे रिपोर्ट के अहम योगदान हय। परन्तु वो मैथिली के विभिन्न बोली दक्षिनी मैथिली, पच्छमी मैथिली आ ठेठी आदि के चर्चा कैलन। बाद में राहुल सांकृत्यायन दक्षिनी मैथिली के अंगिका आ पच्छमी मैथिली के बज्जिका नाम देलन आ मैथिली से अलग मानलन। २००३ मे मैथिली भासा संविधान के अष्टम सूची मे जुड़ल। हांलांकि आइ तक अंगिका-बज्जिका के भासा के दर्जा न मिलल हय। हालांकि भासा के लेल खडयंत्र जारी हय आ मैथिलियो में खडयंत्र जारी हैबे करे। महाकवि संस्कृत आ देसी बयना मे साहित्य रचलन त दूनू के प्रकृति भिन्न रखलन। परंतु बाद मे संपादन मे देसिल बयना के संस्कृतनिस्थ बना देल गेल। कायथ आ बाभन मिल के मिथिला पर लगभग आठ सौ वर्ष शासन कैलन। बाद के शासक मैथिली आ मैथिल पर अधिपत्य जमैलन। माने कि बाभन आ कायथ के संस्कृतनिस्थ बोली के मैथिली आ बाभन आ कायथ के मैथिल बनैलन। बाजाप्ता मैथिल महासभा एकर घोसना कैलक। दोसर जाति के मैथिल महासभा मे प्रवेश निसेध क देलक। एकर विरोध यादव महासभा कैलन परंतु अरन्य रोदन रह के रह गेल। सबसे महत्वपूर्न इ बात भेल जे हमर बोली भासा आ तोहर भासा बोली बना देल गेल। बाद मे साहित्य अकादमी मैथिली भासा विभाग अइ सिद्धांत के प्रश्रय देलन। साहित्य अकादमी के निर्मान से २०२२तक संयोजक पद पर गैर बाभन संयोजक न बन पायल आ २०२० तक गैर सवर्न के अकादमी के मूल पुरस्कार न भेंटल। २०२१के मूल अकादमी पुरस्कार पंगु उपन्यास पर जगदीश प्रसाद मंडल गैर सवर्न के काफी विरोध के बाद मिलल। आ २०२२ के मूल अकादमी पुरुस्कार निर्विवाद रुप से बाभन अजित आजाद के कविता संग्रह पेन ड्राइव में पृथ्वी पर मिलल। त २०२३ मे अकादमी के मैथिली भासा के संयोजक पद पर भारी मत से पहिलवार गैर बाभन भासाविद प्रो उदय नारायण सिंह नचिकेता से निर्वाचित भेलन। अब हिनका से मिथिला आ मैथिली भासी के बड आस हय। परंतु इ कांटक ताज हय। केना मैथिली के भासा आ बोली मे सामंजस्य बैठैयतन। कारन दूनू मे साहित्य रचल जा रहल हय। जानकारी के मुताबिक अंग्रेजी के पांच शैली में अंग्रेजी साहित्य रचल जा रहल हय। मैथिली मेयो बोली न कहके शैली कहल वा मानल जाय। अकादमी के सभ कोसांग समावेशी बनाबे के आवश्यकता हय। नचिकेता जी भासाविद हतन परंतु मानक, रार आ ठेठी के मिटाबे मे मैथिली भासाविद कौकस से निपटनाइ कांटा भरल राह हय। अइ के लेल मैथिल-मैथिली भासी के पूरजोर सहयोग के आवश्यकता हय। हालांकि संयोजक पद पर अइ परिवर्तन से मैथिली साहित्य साधक आ मिथिला -मैथिली अभियानी के आस जागल हय।

***

बोली आ भासा

बोली आ भाषा-हर जानवर के बोली अलग अलग हय। बोली से पहचानल जा सकै हय कि इ कोन जानवर के बोली हय। गाय के हैय कि भैस के हय। बाघ के हय कि शेर के हय। कुत्ता के हय कि सियार के हय। हाथी के हय कि घोड़ा के हय। बंदर के हय कि भालू के हय। कौआ के हय कि तोता के। बगरा के हय कि परबा के। तहिना आदमी के हय कि कोनो जानवर वा पंछी के। कहे के मतलब बोली के आवाज के। त कोन आधार पर कहल जाय हय कि आदमी के बोली पांच कोस पर बदल जाइ छैय। वास्तव मे बोली के आवाज न बदलैय छैय। वरन् बोली के भासा बदल जाइ हय। जानवर के बोली मे भासा न हय। आदमी के बोली मे भासा सन्निहित हय। आदमी के संदर्भ मे जेकरा हम बोली कहैइ हय बास्तब मे वो भासा हय जे स्थान विशेष पर बदल जाइ छैय। वा शैली मे परिवर्तन होइ जाइ हय। अहि लेल कोनो भासा के विभिन्न शैली होइ जाइ हय। यथा मैथिली के विभिन्न शैली देखल जाइ हय जेकरा भासा विज्ञानी केन्द्रीय, दच्छिनी, पच्छमी मैथिली कहैइ हय। वास्तव मे सभ विभिन्न शैली मे मैथिली हय। एकरा बोली न कहल जा सकैय हय। आ वरन् भासा हय। आ इ कोनो भासा मे हो सकैय हय।

***

मिथिला राज सं मिथिला राज्य तक।

मिथिला राज सं मिथिला राज्य तक के यात्रा में आइ मिथिला राज्य के लेल एम एस यू यानि मिथिला स्टूडेंट्स यूनियन दिल्ली के जंतर मंतर पर ऐतिहासिक धरना प्रदर्शन कैलक। अइला कि अइमे पहिले भेल धरना प्रदर्शन मे अधिक लोग भाग लेलक।

अतीत मे मिथिला राज के राजा जनक रहलन। मिथिला राज के राजधानी जनकपुर रहे। बाद मे कुछ अंतराल के बाद राजा सलहेस रहलन आ राजधानी मेहसौथा रहे। वो जाति के दुसाध रहलन। कुछ अंतराल के बाद कर्णाट यानी कायथ राजा नान्यदेव रहलन जे अपन राजधानी अभी नेपाल स्थित बनौली बनैलन। कुछ अंतराल के बाद ब्राह्मण राजा बनलन जे अपन राजधानी दरभंगा बनैलन। ब्राह्मण राज मे दू ब्राह्मण (ओइनवार आ खंडवाल) वंश के राजा बनलन। कायस्थ २४४ बर्ष आ ब्राह्मण ५६४ बर्ष आ कायथ ब्राह्मण मिल के लगभग ८०८बर्ष राज कैलन। मिथिला राज दरभंगा राज बन गेल।

सुगौली संधी के बाद मिथिला राज दू भाग मे बंट गेल। मिथिला नेपाल आ मिथिला भारत। मिथिला भारत आइ बिहार राज्य में हय। आजादी के बाद दरभंगा राज के महाराजा कामेश्वर सिंह मिथिला राज्य के प्रस्ताव देलन। परंच तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू मिथिला राज्य के प्रस्ताव के न मानलन।

मिथिला राज्य के लेल अनेकों संस्था बनल हय। मुख्य रूप सं मिथिला राज्य संघर्ष समिति। अनेकों मिथिला राजनीतिक पार्टी बनल हय। परंच सभ तरह के संघ संगठन के एकता मोर्चा के आइ के पर्दशन मे अभाव दिखल। एकटा आउर बात देखल जाइ हय कि मिथिला के सभ जिला आ सभ वर्ग के प्रतिनिधित्व न हय।

मिथिला राज्य के निर्माण मे मैथिली भाषा केयो महत्वपूर्ण स्थान हय। परंच मैथिली केन्द्रीय मैथिली, दक्षिणी मैथिली आ पश्चिमी मैथिली में बंटल हय। मैथिली भाषा मे अंतर आ विषमता के कारण नेपाल मे मिथिला राज्य न बन के मधेश राज्य बन गेल। शोशल मिडिया पर मिथिला राज्य निर्माण के विरोध में स्वर सुनाई पड़ैत हय। मिथिला राज्य, मैथिली आ मैथिल पर लोग भडकैय हय। मिथिला राज्य निर्माण मे सर्वमान्य नेता के अभाव हय।

मिथिला राज्य निर्माण के लेल जन आंदोलन आ सर्वमान्य नेता के आवश्यकता हय।

***

मिथिला राज्य।

मिथिला राज्य। मिथिला राज्य के लेल स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से प्रयास आ संघर्ष चल रहल हय। परंच सफलता आइ तक न मिलल। कारण इ संघर्ष से आम लोक जुडल न रहे। मैथिल एगो खास जाति के नाम से जानैत जाइत रहे। मैथिल सभ के मानलो न गेल रहे। आइ तक भी मैथिल सभा एगो जाति के सभा होइत हय। तैइला मिथिला राज्य आ मैथिली आंदोलन से दलित, पिछड़ा आ अल्पसंख्यक अलग रहे। आइ जब सभ वर्ग के जुड़े के बात चल रहल हय। समेकित मैथिली के बात हो रहल हय। सभ मिथिलावासी मैथिल हय के बात हो रहल हय। परंतु सांस्कृतिक आ धार्मिक रूप से मैथिल में भिन्नता हय आ इ रहत। बात आब बिहार से घृणा के हय। बिहार से घृणा के मतलब महात्मा बुद्ध, सम्राट अशोक, कबीर, रविदास, गुरु गोविंद सिंह, महावीर आ पैगेम्बर से हय। हर मत के लोग मिथिलावासी हय। मिथिला कोई खास धार्मिक स्थान न बल्कि सर्वधर्म स्थान हय। परंच मिथिला आंदोलन एकतरफा विशेष लोक के आंदोलन बुझाई हय। बहुतो राज्य बनलै परंच घृणा से न बल्कि अपन अधिकार के मांग से। झारखंड आ तेलंगाना बनलै। अधिकार के लेल संघर्ष से न कि घृणा से। घृणा से मिथिला न, मधेश बनै छैय। अइ से सबक लेवे के आवश्यकता हय।

नेपाल: मधेश बनाम मिथिला।

आइ कालि पड़ोसी देश नेपाल में मधेश के लेके हंगामा मचल हय कि आठ जिला जे मिथिला क्षेत्र हय, वोकरा नेपाली संसद दू तिहाई मत से मधेश प्रदेश नाउ घोषित कै देलिके। पहिले एकर नाम प्रांत नंबर-०२ रहै।

अइ ऐतिहासिक घटना के लेल नेपाल में राजशाही के समाप्त भेला पर आ प्रजातंत्र घोषित भेला के घटना के देखनाइ आवश्यक हय।

वर्तमान संविधान -2015 सातवां संविधान हैइ। 2007 के अंतरिम संविधान आ 2006 के शांति समझौता से निर्देशित हय।

नयका संविधान लैंगिक भेदभाव पूर्ण हय। इ एकल महिला के बच्चा के नागरिकता देबे से मना करैय छैय। नागरिकता के लेल माय बाप के नेपाली नागरिक होनाइ आवश्यक हय। विदेशी महिला से शादी करने वाले नेपाली नागरिक के बच्चा के नेपाली नागरिकता मिलतै परंच विदेशी महिला मां को नागरिकता नै मिलतै। अइ आधार पर मधेशी समुदाय, जे सीमा पार भारतीय महिला के संग विआह करै छैय, असमानता से प्रभावित होइ छैय। मधेशी लोग उत्तर भारत के लोग से जाति आ सामाजिक रूप से जुड़ल हय।

मधेशी राजनीतिक दल राज्य में आनुपातिक प्रतिनिधित्व के मांग करैत रहे। परंच तराई क्षेत्र के75 में20 जिला में50 प्रतिशत आबादी रहै हय। संसद में165 में100सीट पहाड़ी आ पर्वतीय क्षेत्र के। जौं कि कुल आबादी के50 प्रतिशत से भी कम हय। जौं कि तराई के आबादी 50प्रतिशत सं ज्यादा हय। आ तराई क्षेत्र के65 सीट देल गेल हय।

अइ लेल मधेशी विरोध में मधेश आन्दोलन चलैलक। मधेश आन्दोलन मुख्य रूप से राजनीतिक आंदोलन हय।

पहिला मधेश आन्दोलन- 2007

अंतरिम संविधान के घोषणा के बाद शुरू भेल। संविधान में मधेशी आ हाशिया के समुदाय आ जातिय समुदाय के समान प्रतिनिधित्व के अनदेखी पर। जन आन्दोलन राज्य के पुनर्गठन के राष्ट्रीय विमर्श में जातीय राष्ट्रवाद के प्रमुख मुद्दा बनल। पहिला आंदोलन संविधानिक पहिचान, प्रतिनिधित्व आ राजनीतिक शक्ति के कुछ हद तक लावे में सफल भेल। इ आंदोलन राज्य के खिलाफ जातीय समूह के शिकायत के परिणाम रहें।

दोसर मधेश आन्दोलन-2008

दोसर आंदोलन संघवाद, आनुपातिक प्रतिनिधित्व आ जनसंख्या के अनुसार चुनाव क्षेत्र के लेल भेल। जनसंख्या के आधार पर चुनाव क्षेत्र आ संघवाद मान लेल गेल।

तेसर मधेश आन्दोलन-2015

सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन बाद भी मधेशी के संग गलत व्यवहार आ समान अधिकार सं बंचित राखल गेलैय।
संघीय प्रांत के अनुचित गठन आ तराई के केवल आठ जिला के एकटा प्रान्त बनायल गेल। जौं कि चौदह जिला पहाड़ी क्षेत्र से रहे।

भागेदारी आ आनुपातिक प्रतिनिधित्व-

राज्य के अंगों आ सार्वजनिक रोजगार में45प्रतिशत सत्तरह समूह के लेल आरक्षित हय। सामाजिक रूप से पिछडल महिला, दलित, आदिवासी, जनजाति, खास आर्य, थारू, अल्पसंख्यक समूह, विकलांग, हाशिया समूह, मुस्लिम, पिछड़ा वर्ग,, लिंग आ धर्मनिरपेक्ष रुप से अल्पसंख्यक समूह, युवा, किसान, मजदूर, उत्पीडीत आ पिछड़ा क्षेत्र के नागरिक। इ सामान्य विभाजन रहै। युवा आ ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहेवाला मधेशी या खास आर्य, पहाड़ी उच्च जाति समुदाय से पहिले से ही राजनीति में प्रमुख हय आ एक ही श्रेणी में आवैत रहे।

मधेशी आंदोलन बाइस जिला के मधेश प्रदेश के लेल रहे। परंच आठ जिला के संसद दो तिहाई मत से मधेश प्रदेश तथा राजधानी जनकपुर धाम घोषित कै देल के, जे नंपहिले प्रांत नंबर-०२ रहै।

आबि विवाद इ हय कि जौ बाइस जिला के मधेश प्रदेश रहितै जे चूरे पर्वत श्रृंखला से लेके दच्छिन सीमा भारत पुरब से पच्छिम तक हय त कोनो विवाद नै रहतै। परंच वर्तमान जे आठ जिला हय। विशुद्ध रूप से पौराणिक मिथिला क्षेत्र हय। तै मधेश प्रदेश के नाउ मिथिला प्रदेश रहे के चाही। जनकपुर धाम त राजधानी घोषित भे चूकल हय। मिथिला के संस्कृति पर इ कुठाराघात हय। परंच अइ मामला पर मधेशी दू फांक हय। मिथिला में मैथिली भाषा के आंदोलन पर दू फांक के बड़ा घड़ा गैर ब्राह्मण कायस्थ मिथिला प्रदेश के नाउ पर एक्का नै हय। इ वर्ग सांस्कृतिक आ मैथिली भाषा के नाम पर दूतकारल आ उपेक्षित कैल गेल हय। अइ वर्ग के भाषा मैथिली के रार (बज्जिका) आ ठेठ मानल जाइ छैय। मैथिली अकादमी अइ वर्ग के साहित्य के मान्यता नै देइ छैय। कुछ लोग मगही के समर्थन में छैय। इ वर्ग मिथिला नाउ के ब्राह्मणवादी मानै छैय। तैं मिथिला नाउ के विरोध करैत छथि। तैं प्रदेश के नाम मधेश प्रदेश घोषित भेल। परंच मिथिला के समर्थक मिथिला आ संस्कृति के लेल उद्यम हय।
निष्कर्ष रूप में मधेश प्रदेश जातीय राष्ट्रवादके परिणाम हय।
***

जाति बनाम जातिवाद।

बिहार जाति आधारित गणना (The Bihar caste base Survey) पर उच्च न्यायालय, पटना तत्काल प्रभाव से रोक लगा देलक हय। कुछ लोग अइ आधार पर याचिका दायर कैले रहल हय कि अइसे जातीय विषमता बढत आ दोसर इ कि जनगणना कराबे के अधिकारी केन्द्र सरकार हय। जौकि बिहार सरकार के कहना हय कि इ जनगणना न हय बल्कि एकटा सर्वे हय। आ सर्वे करे के अधिकारी राज्य सरकार होइ हय।

पहिले उच्च न्यायालय गणना पर रोक लगाबे सं इंकार क देले रहय। तब याचिका कर्ता सर्वोच्च न्यायालय मे गेल। सर्वोच्च न्यायालय याचिका कर्ता के उच्च न्यायालय मे जाय के आदेश देइत उच्च न्यायालय के आदेश देलन कि तीन दिन के अंदर अंतरिम फैसला करय। तैय आदेश के आलोक में उच्च न्यायालय अप्पन अंतरिम आदेश मे जाति गत गणना जुलाई -२३तक रोक लगा देलक। अगला सुनवाई जुलाई में निर्धारित हय।

राज्य सरकार के कहना हय कि लोक कल्याणकारी योजना के लेल सांख्यिकी के आवश्यकता होइ हय। केते बार न्यायालयो एकर जानकारी मांगै छय। एकरा अभाव मे जन कल्याणकारी योजना के लागू करे मे व्यवधान होइ हय।

मंडल आयोग के लागू करे मे दिक्कत भेल रहय। वोइ समय मे १९३१मे भेल रहय जाति गणना के डाटा के आधार पर पिछड़ा वर्ग के २७प्रतिशत आरक्षण शिक्षा आ सेवा क्षेत्र मे देल गेलय। अनुसूचित जाति आ अनुसूचित जन जाति के जनगणना करे के प्रावधान संविधान में हय। लेकिन सामान्य वर्ग आ पिछड़ा वर्ग के जाति गणना के प्रावधान न हय। त जाति गणना के लेल जनकल्याण के लेल संविधान संशोधन करनाइ आवश्यक होइ जाय छैय। सामान्य वर्ग के बिना जाति गत डाटा के आर्थिक आधार पर १० प्रतिशत आर्थिक आधार पर आरक्षण भेंट गेल। जौकि संविधान मे आर्थिक आधार पर आरक्षण देवे के प्रावधान न हय। संविधान मे केवल सामाजिक आ शैक्षणिक पिछड़ापन के आधार पर शिक्षा आ सेवा क्षेत्र मे आरक्षण देवय के प्रावधान हय। जौं समाज मे जाति हय त जाति के गणना आवश्यकता हय। तबे वोकर कल्याण के लेल आनुपातिक योजना बनायल जा सकल हय। हर जगह धर्म आ जाति के कालम भरल जाइ हय। लेकिन जौ गिनती के बात होइ हय त एकर अल्पसंख्यक जाति एकर विरोध करय हय। असल मे गणना के प्रजातंत्र में महत्व होइ हय आ वोइ गिनती से घबराइ हय। लोग अप्पन रोटी-बेटी के संबंध अप्पन जाति मे करय हय। हर जाति के अप्पन कल्चर हय। हर जाति के संघ -संघठन हय। संगठन त अंतरराष्ट्रीय स्तर तक बनऐलय हय। जातिवाद खूब करत परंतु जाति से घबरायत। कहत कि सामाजिक समरसता हय। आइयो समाज मे जातीय विभाजन आ विमषता हय। जातिगत विषमता बनल रहय अइ लेल जाति आधारित सर्वे के विरोध कैल जा रहल हय। माननीय उच्च न्यायालय के सभ तथ्य पर विचार करे के आवश्यकता हय। असल मे इ जाति बनाम

जातिवाद के लड़ाई हय।

***

सामाजिक विषमता बनाम आर्थिक विषमता।

समस्तीपुर के घटना बड़ हृदय विदारक हय। अइमे पांच जना फांसी लगा के अप्पन जीवन समाप्त क ले लेलक। परिवार के मुखिया अप्पन पत्नी, दू गो बच्चा आ माय संगे फांसी लगा ले लेलक। कारण करजा बतायल जाइ हय। जे वो गरीबी के कारण न चूका सकल हय। बतायल जाइ हय की हुनकर बाबू जीयो करजा न चुका पाय के कारण फंसरी लगा लेले रहलन। इहो बतायल जा रहल हय कि वो ब्राह्मण परिवार रहलन। सोचे कि बात इ हय कि कुछ लोग ब्राह्मण परिवार के लेके आरक्षण आ जाति जनगणना के विरोध क रहल हय। जौकि आरक्षण आ जाति जनगणना सामाजिक समस्या के अंत करे के लेल हय। एकरा आर्थिक समस्या से कोनो लेना देना न हय। हालांकि आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के आरक्षण देल गेल हय। जौं कि संविधान में सामाजिक आ शैक्षणिक पिछड़ा के आरक्षण देबे के प्रावधान हय। वास्तव मे भारतीय समाज जाति आधारित हय। न कि आर्थिक। भारतीय समाज जातिय विषमता से भरल हय। आर्थिक विषमता के मूल मे सामाजिक विषमता हय। भारत मे एशिया के सभ से धनिको हय। त एक तरफ भूख सेहो आदमी मरैत हय। धन राष्ट्र के सम्पत्ति न हय वरन् व्यक्तिगत सम्पत्ति हय। त आर्थिक समानता केना होयत। दोसर बात भारत राजनीतिक रूप से धार्मिक देश न होइतो सामाजिक रूप से धार्मिक देश हय। आ धर्म मे जाति के व्यवस्था के आधार पर धन के व्यवस्था हय। तहि लेल जाति आ धन के गडमगड हय। जौं तक जाति व्यवस्था समाप्त न होयत आर्थिक व्यवस्था लागू न होयत। जातिय व्यवस्था तक आरक्षण आ जाति जनगणना प्रासंगिक होयत। अइला समस्तीपुर के घटना आरक्षण आ जातिय जनगणना के लेल अप्रासंगिक हय। हमरा सभ के लाश के राजनीति करे से बचे के चाही।

***

ऋषि परशुराम के सीता से बिआह प्रस्ताव।

महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण आ संत तुलसीदास कृत रामचरितमानस में सीता बिआह प्रसंग में महर्षि परशुराम के प्रवेश धनुष भंग के उपरांत धनुष यज्ञशाला मे प्रवेश होइत हय।
परंच संत लाल दास कृत रामेश्वर चरित मिथिला रामायण मे एगो विस्मितकारी रहस्योद्घाटन हय कि महर्षि परशुराम स्वयंबर से पहिले जनक दरबार जनकपुर मे आयल रहतन। सीता के देखके राजा जनक से पुछलन इ दिव्य बालिका कोन हय। इ बालिका त विष्णु प्रिया लगैत हय। राजा जनक कहलन कि इ बालिका हमर पुत्री सीता हय। तब महर्षि परशुराम सीता से बिआह के इच्छा जतैलन आ सीता के मांग कैलन।
राजा जनक कहलन कि अभी उपयुक्त समय न हय। अपने तपस्या करे जायल जाव। उचित समय पर आयब। महर्षि परशुराम जनक से कहलन कि अंहा सीता के बिआह के लेल इ प्रस्ताव राखब के जे शिव धनु के प्रत्यंचा चढ़ा देत वोकरे से सीता के बिआह होयत। महर्षि परशुराम के इ गर्व रहैन कि अइ शिव धनुष के हमरा बिना कोनो इ काज न क सकय हय। वो तपस्या करे चल गेलन।
जौं राम शिव धनुष तोड़ के टंकार सुनके ऋषि परशुराम जनकपुर अयलन आ अपन क्रोध जतैलन। बाद मे अपन धनुष के प्रत्यंचा चढ़ाबे के परीक्षा राम से लेलन। राम के परीक्षा मे पास होयला पर रामावतार जान के पुनः तपस्या हेतु हिमालय चल गेलन।
लाल दास कृत मिथिला रामायण के पंक्ति द्रष्टव्य हय।
चौपाई –

तदनन्तर भृगुपति सम्प्राप्त। भेल जनकपुर भयसौं व्याप्त।
देखि विभव मिथिलाक अनूप। क्षणभरि छला परसुधर चूप।
मिथिलापति कयलनि सत्कार। क्षत्रिय नाशक जनिक कुठार।
देखल जानकिक अनुपम देह। सुरकन्याक भेल संदेह।
नृपसौ पुछल कहू ई नीकि। लक्ष्मी सन के कन्या थीकि।
बुझि पड़ देखयित हिनकर भाल। विष्णुवधु सनि विभव विशाल।
जनक कहल महि जोतल जखन। कन्या लाभ महीसौं तखन।
परशुराम कहलनि अगुताय। नृप हमरहिं कन्या देल जाय।।
कन्यारत्न हमर छथि योग्य। पाणिग्रहण करब सुख भोग्य।।
से सुनि कहल जनक महराज। अपने जाइत छी तप काज।।
अपने रहब समाधि लगाए। गिरि कंदर शत वर्ष बिताए।।
वनमे कन्या रक्षा हीनि। अबला रहतिह ककर अधीनि।।
अपने एखन विपिन गेल जाय। समय स्वयंबर आयल जाय।।

कहल परसुधर गर्वित वाक। सुनु नृप ई थिक शिवक पिनाक।।
जौं हमरा तपमे लग देरि। धनुमुख करब विवाहक बेरि।।
आबथि जखन वीर समुदाय। एहन प्रतिज्ञा देव सुनाय।।
जे एहि धनु पर तंतु चढ़ाव। सैह वीर सीताकां पाब।।
से सुनि जनक भेला आंनद। कहलनि बेश -बेश सानंद।।
परशुधरक मनमे ई भाव। बिनु हमरे के धनुष उठाव।।

दोहा –

परशुराम तप हित तखन, गेला हिमालय प्रांत।
योगासन मन ईश पद, लगला भजय एकांत।।

| ***

लाल दास कृत मिथिला रामायण मे सीता।

मिथिला रामायण के रचयिता कवि श्रेष्ठ लालदास के अवतरण सन् 1263 साल (1856ई) में मधुवनी जिला अन्तर्गत खड़ौआ गाम के कायस्थ वंशी बचकन दास के पुत्र रत्न के रूप मे भेल रहय। अत्यंत धार्मिक पिता आ माता के प्रभाव लालदास पर पड़लैन। वो रमेश्वर चरित मिथिला रामायण के रच के अमर हो गेलन।

हिनकर रचल रामायण महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण, संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस आ कविवर चंदा झा कृत मिथिला भाषा रामायण से अलग विशेषता धारण करैत हय।

बाल्मीकि रामायण के सीता –

सीते यथा त्वां वक्ष्यामि तथा कार्यं त्वयाबले।
वने दोषा हि बहवो वसतस्तान् निबोध मे।। ४।।

अर्थात हे सीता! हम अंहा के जेना कहय छी, ओहिना करनाई अंहा के धर्म हय। अंहा अबला छी, वन मे रहे वाला मनुष्य के बहुत दोष प्राप्त होइ हय, ओकरा बता रहल छी, हमरा से सुनू।। ४।।

संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस मे सीता –

ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा।।
डरपहिं धीर गहन सुधि आएं। मृगलोचनि तुम्ह भीरू सुभाएं।।

अर्थात वन मे सांप, भयानक चिड़ैय आ नारी-पुरुष के चुराबेवाला राछस के झुंड के झुंड रहय हय। वन के भंयकर रूप के केवल याद आवे से धीरज वाला पुरषो डर जाइ छै। फेर हे हरिण सन आंख वाली! अंहा त स्वभावे से डरपोक छी।

चंदा झा कृत मिथिला भाषा रामायण मे सीता –

रामचन्द्र कह कानन अति दुख, राक्षस लोकक त्रास।। ११०।।
वचन सुनि जिव मोर, थर -थर कांप
सर्वसहा जननी धरणी थिकि जनक नृपति थिक बाप।। ११३।।

अर्थात सीता बजलैन -अहां के बचन सुनकर हम्मर करेज थर -थर कांप रहल हय। हम्मर माय धरती हय। जे हर संताप के सहेवाली कहल जाय हय आउर राजा जनक हमर बाप छतन।

परंच संत लालदास रचित रामायण मे जगत जननी सीता के पराशक्ति रूप देखायल गेल हय। वैष्णव आ शाक्त के समन्वय परिलक्षित होइ हय। विशेष रूप से रमेश्वर चरित मिथिला रामायण के विशेष अष्टम कांड पुष्कर मे सीता के पराशक्ति रूप के दर्शाएल गेल हय।

पहिले लालदास कृत रामायण के बालकांड अन्तर्गत प्रथम चौपाई मे लक्ष्मी के दस रूप के चर्चा कैल गेल हय। यथा -१.लक्ष्मी २.सीता ३. काली ४. तारा ५.त्रिपुरसुंदरी ६.भुवनेशी ७. भैरवि ८.छिन्नशिर ९.बगलामुख १०.मातंगी।

माने लक्ष्मी के रूप सीता आ सीता के पराशक्ति रूप काली हय।

तेसर चौपाई मे सीता अर्थात स+ई+त+आ के चारि वर्ण से युक्त नाम के स से काम, ई से अर्थ, त

से मोक्ष, आ से धर्म के लेल प्रभावकारी शक्तिमान बताएल गेल हय।
शक्तिमान जग शक्तिक योग। शक्ति -विमुख शव सन सभ लोग।
दोहा –
मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीता रुप प्रधान।
तनिक नाम जपि पाब नर, दुहु लोकक कल्याण।।
संत लालदास अप्पन रामायण मे सात कांड के यथावत राखैत नया अष्टम पुष्कर कांड (जानकी चरित्र) के रचना कैलन। जैमे सीता के पराशक्ति रूप मे देखावे के लेल अद्‌भुत रामायण से आधार कथा लेलन। संक्षेप मे लंका विजय के बाद जौं राम अयोध्या अयलन त राज्याभिषेक पश्चात् ऋषि, मुनि लोक सभ रावण बध के लेल राम के पराक्रम के बखान करै लगलन। त सीता के हंसी आबि गेल। त राम के पूछला पर कि अंहा काहे हंसैत छी। सीता सहसानन रावण के बारे मे बतऐबत कहलन कि वोकरा बध करब त जानब।
ई रावण छल मृतक शरीर। मृतक मारि क्यों हो नहि वीर।।
बूझि पड़ल परिहास समान। तैं हंसलहु नहि कारण आन।।
जे जन जीवित रावण मार। तनिक कहक थिक यश विस्तार।।
.....
दशमुख रावण मृतक समान। कहक न थिक तकरा बलवान।।
.....
जौं सहसानन मारल जाय। त्रिभुवन सुयश अवश रह छाय।।
रावण केना छल मृतक शरीर तेकर विस्तार से सीता जानकारी देलन।
से सुनि कहलनि जनक कुमारि। सुनु मुनि कारण तकर विचारि।।
पूर्व रहय रावण बलवान। त्रिभुवन जीति बढ़ाओल मान।।
जखन हमर दृगगोचर पड़ल। तकर शक्ति सभटा हम हरल।।
तखनहिसौं भेल मृतक समान। रहल न तकरा बलक
विधान।।
.....
दोहा –
करितहुं तेहि खन दग्ध हम, दशकंधरक शरीर।
छल आगां कर्तव्य किछु, तैं छाड़ल मुनि धीर।।
चौपाई –
ताहुसौं पूर्वक वृतांत। कहियत छी सुनु हे मुनि शांत।।
पूर्वजन्म हम हिमगिरि देश। अवतरलहुं छल हेतु विशेश।।
कयल आंगिरस वेदाध्ययन। बहरयलहुं हम तेजक अयन।।
हमरा से पुनि मुनि तप धाम। पोशल वेदवती कहि नाम।।
.....
तदनन्तर पुनि विबुध समाज। मांगल कन्या परिहरि लाज।।
सभकां पिता निवारण कयल। तखन ततय दशकंधर अयल।।
मांगल कन्या कामक ग्रस्त। कयलनि तनिकहु पिता निरस्त।।
दोहा –
तखन कोप कय दुष्ट से, आयल निशि अंधियारि।

निद्रित रहथि पिता हमर, तनिका देलक मारि।।
चौपाई –
तखन दशानन हमरा निकट। आबि कहल खल वाणी विकट।।
धयलक हमर हाथ तत्काल। कयल तखन हम कोप कराल।।
चौदह युग छल आयु विशेष। से हम तेहि खन कय देल शेष।।
कयल प्रतिज्ञा कहल सकोप। करब सकुल तोर प्राणक लोप।।
.....
तखन धयल हम अपर शरीर। शुद्ध अयोनिज तेजस धीर।।
पुण्यतमा मिथिला महि जानि। भूमिसुता भेलहुं सुख मानि।।
पूर्वक पण छल पूरक काज। तैं हम वन गेलहुं ऋषिराज।।
दशमुख माया मोहित भेल। तैं हमरा लंका लय गेल।।
ततय जाय कयलहुं किछु खेल। असुरक शक्ति हरल अवहेलि।।
शक्तिक अंश अनलकां देल। तेहि कारण लंका जरि गेल।।
दोहा –
प्राणनाथ रघुनाथ पुनि, तदुपरि लंका जाय।
शक्ति हीन दशशीशकां, मारल रण खिसियाय।।
सोरठा –
सुनु मुनिगण संज्ञान, तैं कारण दशकंठकां।
कहलहुं मृतक समान, हास्यक कारण सैह छल।।
सीता अप्पन हंसै के कारण विस्तार से बतैला के बाद कुमारी अवस्था मे मुनि के बताएल पुष्कर द्वीप के कथा सुनैलन।
पुष्कर राज राक्षस सुमाली के पुत्री कैकसी आ मुनि विश्रवा के पुत्र सहसानन रावण आ दशकंधर रावण रहय। सहसानन जेठ आ दशकंधर छोट भाई रहय। सहसानन श्वेत द्वीप आ दशकंधर लंका पर आधिपत्य जमा के राजा बनलैन।
एक लाख योजन विस्तार। पुष्कर द्वीपक परिखा धार।।
तेहि पुष्करमे पुष्कर एक। जेहि कमलक दल लक्ष अनेक।।
.....
तहं उत्तर मानस गिरि भार। दश हजार योजन विस्तार।।
.....
ततहि सुमाली निशिचर राज। रहय सदा सुख सहित समाज।।
कन्या तनिक कैकसी नाम। मुनि विश्रवहि देल सुखकाम।।
तकरासौं मुनि कयल विवाह। निशिचर संतति बढल प्रवाह।
मुनिसौं गर्भ भेल सम्पन्न। कयलक दुइ रावण उत्पन्न।।
जेठ भायकां मुण्ड हजार। दूइ सहस्त्र भुज बल विस्तार।
रावण अपर दशानन भेल। बीस भुजा विधि तनिकां देल।।
.....
सहसवदन रावण जेहि नाम। श्वेत द्वीप से कयलक धाम।।
.....
दशमुख कयल अपन आगार। लंका खार समुद्रक पार।।

दशकंधर रावण के राम बध क देलन। परंच सहसानन के भय से दिक दिगंत आक्रांत हय। सीता राम से कहलैन – आबि सहसानन के बध करूं।

.....

जौं सहसानन मारल जाय। त्रिभुवन सुयश अवश रह छाय।।

परंच राम सहसानन के बध न क पैलन आ युद्ध में स्वयं अचेत हो गेलन। तब सीता पराशक्ति काली के रूप मे सहसानन के बध क देलन।

काली रूप धयल प्रत्यक्ष। अयलीह रावण रथक समक्ष।।
खपर खड्ग सभ धयलइन हाथ। श्रेणी सभ झपटल रिपु माथ।।
क्षण मे अयलिह रिपुक समीप। लगलिह काटय मुण्ड सुदीप।।
लीलहि रिपुक सहस्त्रों मुण्ड। क्षणमे काटल काली झुण्ड।।

बाद मे सीता के स्पर्श से राम के अचेतपन (मूर्छा) टूटल। तब सीता राम से कहलैन –

हमरा अंहाकां नहि किछु भेद। एके थिकहुं कहै छथि वेद।।
लीला हेतु धयल दुइ देह। ब्रह्म अंश दुहु निस्सन्देह।।

राम काली रूप सीता के स्तुति कैलन –

काली नाम सहस्त्रसौं स्तुति विभु कयल अनूप।।

चौपाई –

कयल सहस्त्रनामसौं राम। स्तुति कालीक ललित गुणधाम।।
तनिकां से पुनि बारंबार। विनय प्रणाम कयल सविचार।।
कहलनि राम दुहू कर जोड़ि। भगवति ऐश्वर वपु दिअ छोड़ि।।

.....

भेलिह परमा सुंदरी रूप। लज्जायुत पूर्वक अनुरूप।।

तब सीता कहलैन –

सहसानन रावण बध काल। धयल रूप हम जेहन कराल।।
तेहि रूपों हम श्वेतद्वीप। अचल रहब हे रघुकुल दीप।।
तेहि रूपैं हम पूजा लेब। पूजकां निर्भय कय देब।।
अहंक रूप स्वाभाविक श्याम। अरूण भेल रावण संग्राम।।
तेहि रूपैं हम नाथ सदाय। पूजित हयब अहंक रूचि पाय।।

संत लालदास रमेश्वर रचित मिथिला रामायण रचना क के वैष्णवी सीता के पराशक्ति सीता रूप मे दर्शेलैन। आइ मिथिला मे वैष्णवी सीता से ज्यादा पराशक्ति के मंदिर दृष्टिगोचर होइ हय।

***

मैथिली साहित्य मे घोटाला।

मिथिला -मैथिली मे दूटा विद्यापति भेलन। ज्योतिश्वर ठाकुर (१२९०-१३५०) से पूर्व सोलकन नाइ जाति मे विद्यापति भेलन। वो अपना साहित्य पर विदापत नाचो शुरू कैलन। वो नाच संपूर्ण मिथिला मे लोक शिक्षण करैत रहे। जेकर चर्चा ज्योतिश्वर अपन पोथी वर्णरत्नाकर मे कैले हतन। दोसर विद्यापति (१३५२-१४४८) ज्योतिश्वर के बाद मे भेलन। जे जाति के बाभन रहलन। वो संस्कृत आ अवहट्ट मे साहित्य रचना कैलन।

परंतु मैथिली साहित्य मे नाइ विद्यापति के कृति के बाभन विद्यापति के कैल जा रहल हय।

एगो दैनिक अखबार मे लेखक प्रवीण नारायण चौधरी लिखैत हतन –

विरोध, निंदा आ आलोचनाक बाबजूद विद्यापति कवि कोकिल, महाकवि, जनकवि बनि गेलाह। लोक हुनकर संदेश के हाथोंहाथ स्वीकार कयलक। अपन सहज -सुंदर मैथिली रचना सभ एतैक जनसुलभ छल जे लोक ओकरा हृदयंगम कय लेलक। जन – जन के कंठ मे अपन देसिल बयना (मातृभाषा) रचनाक कारण पहुंचि गेलाह विद्यापति। हुनकर नचारी, महेसबानी, राधा -बिरह, नोंक झोंक आदि अनेकों महत्वपूर्ण रचना सं समाज में साहित्यिक धारा एहेन बहल जे विद्यापतिक पदावलि पर नाच परम्परा -विदापत नाच तक प्रचलन मे आबि गेल।

विदित हो कि जनवर्गीय समाज मे एहि विद्यापति नाच के सहारे शिक्षाक समुचित प्रसार होबय लागल मिथिलाक लोक समाज मे।

उल्लेखनीय हय कि ज्योतिश्वर पूर्व से विदापति नाच मे विद्यापति पदावली के नृत्य अभिनय होइत रहे। अइ विद्यापति के बारे मे कश्मीर अभिनव गुप्त (दशम शताब्दी के अंत आ एगारहम शताब्दी के प्रारंभ) -ईश्वर प्रत्याभिज्ञा -विभर्षणी ग्रंथ में लिखल हय।

श्रीधर दास के सदुक्तिकर्णामृत (रचना ११फरबरी १२०६ मध्यकालीन मिथिला लेखक विजय कुमार ठाकुर) श्रीधर दास विद्यापति के पांचटा पद उद्धृत कैलै हतन जे विद्यापति के पदावली के भासा हय।

जाव न मालती कर परगास तावे न ताहि मधुकर विलास। आ मुंदला मुकुल मकरंद, ज्योतिश्वर (१२७५-१३५०) कृत वर्णरत्नाकर षष्ठ कल्लोल। अथ विद्यावंत वर्णन।।

अष्टम कल्लोलक।। अथ राज्य वर्णन।। में विदापतके उल्लेख कैले हतन। से विद्यापति ततेक प्रसिद्ध भ गेल रहे जे ज्योतिश्वर तेकर उल्लेख नाचक रूप मे कैलै रहलन।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट हय की विदापति नाच नाइ विद्यापति के हय। परंतु आबि साहित्यिक घोटाला क के बाभन विद्यापति के कृति बनायल आ बताओल जा रहल हय।

हालांकि कुछ लोग एके विद्यापति के नाइ त कुछ लोग बाभन बतबैत हय। परंतु उपर्युक्त तथ्य के आधार पर दूटा विद्यापति भेलन। एगो नाइ आ एगो बाभन। परंतु मैथिली साहित्य मे विद्यापति के लेके घोटाला कैल गेल हय।

वर्तमान भौगोलिक स्थिति में जैइ बिस्डीफी डीह के बाभन विद्यापति के जन्म स्थान बतायल जाइ

हय वोकर पांच वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में बाभन बस्ती न हय। परंतु नाइ बहुल हय। बाभन विद्यापति के जन्म अन्य क्षेत्र में भेल रहे। बिस्फी डीह मे बाभन महाकवि विद्यापति समारोह न मनायल जाइत हय। अइ प्रकार मैथिली साहित्य मे घोटाला हय।

***

महाकवि विद्यापति आ महारानी लखिमा देवी: प्रेम प्रसंग!

महाकवि विद्यापति आ महारानी लखिमा देवी के प्रेम प्रसंग के बारे मे पं गोविंद झा अपन कृति विद्यापतिक आत्मकथा मे चर्चा कैले हतन आ जनकवि बैद्यनाथ मिश्र यात्री अपन कविता लखिमा मे। परंच इ कविता आलोचक -समालोचक से उपेक्षित रहल हय। अइ कविता मे यात्री महाकवि विद्यापति आ महारानी लखिमा देवी के प्रेम के चित्रित कैले हतन। महारानी लखिमा देवी मिथिला के आइनवार वंशज राजा शिवसिह के पत्नी आ महाकवि विद्यापति दरबारी कवि रहलन। राजा शिवसिंह (१४१२ई-१४१६ई) बंगाल -जौनपुर सल्तनत के कर भुगतान न करे के कारण मुगल आक्रंता सामंत इब्राहिम शाह से युद्ध मे मारल गेलन। परंतु हुनकर लाश तक न मिलल। आकि युद्ध से भागके कहीं छूप गेलन। इतिहास मे एकर खुलासा न हय। कहल जाइ हय कि युद्ध के दखैत राजा शिवसिंह के राय से महाकवि विद्यापति सुरक्षा दृष्टि से महारानी लखिमा देवी के साथ राजबनौली (नेपाल) मे चल गेलन। महाराज के गायब होयला के बाद महारानी लखिमा देवी के सानिध्य मे मिथिला के शासन के बागडोर संभालैन। चित्रा कविता संग्रह मे संकलित जनकवि बैद्यनाथ मिश्र यात्री जी के कविता-

लखिमा।
कवि कोकिलक कल -काकलिक रसमंजरी
लखिमा, अंहा छलि हैब अद्भुत सुन्दरी
रुष्ट होइतहुं रुपसी
कहि दैत कियो यदि अहां के विद्यापतिक कवि -प्रेयसी
अहां अपने मौन रहितहुं
कहनिहारक मुदा भ जी जइतैक सत्यानाश!
मानित थिन ईह!
सुनित थिन शिवसिंह तअ घिचवा लितथिन जीह!
दित थिन भकसी झोंझाय तुरंत
क दित थिन कविक आवागमन सहसा बंदि
अहूं अन्त:पुरक भीतर
बारिकैं अन्न-पानि
सुभग सुंदर कविक धरितहुं ध्यान
बूढि बहिकिरनीक द्वारा
कोनो लाथें

आहांकें ओ पठबितथि संदेश –
(संगहि संग जुल्फीक दुइटा केश!) विपुल वासंती विभवकेर बीच विकसित भेली
कोनो फूलक लेल
लगबथुन ग क्यौं कतेको नागफेनिक बेढ
मुदा तैं भ्रमर हैत निराश?
मधु -महोत्सव ओकर चलतेइ एहिना सदिकाल!
कहू की करथिन क्यौं भूपाल वा नभपाल
अहां ओमहर
हम एम्हर छी
बीचमे व्यवधान
राजमहलक अति विकट प्राकार
सुरक्षित अन्त:पुरक संसार
किंतु हम उठवैत छी
कोखन कतहुं जं
वेदना -विह्वल अपन ई आंखि
अहींटाकें पावि सजनि ठाढि चारू दिस
विस्मय विमोहित कंठसं बहराय जाइछ ईस!
खिन्न भ अलसाई जनु धनि
वारि जनु दिय अन्न किंवा पानि
व्यर्थ अपनहि उपर कौंखन करि जनु अभिरोष
विधि विडम्बित बात ई, एहिमे ककर की दोष?
नहि कठिन खेपनाइ कहुना चारि वा छौ मास
देवि, सपनहुंमे करि जनु हमर अनविश्वास
अहिंक मधुमय भावनासं पुष्ट भय
प्रतिभा हमर
रचना करत से काव्य
जाहिसं होएताह प्रसन्न नरेश
पुनि हमरो दुहुक मिलनाइ होएत —
सखि सहज संभाव्य!

अहांकें कवि पठवतितथि संवाद
पावि आश्वासन अहां तत्काल अनशन छाड़ि
होइतहुं कथंचित प्रकृतिस्थ!
मनोरंजन हेतु —
हंसक मिथुन अंकित क देखबितए
कोनो नौड़ी, कोनो नौड़ी आबि गाबिकैं सुनबैत
ओही प्रियकविक निरुपम पदावलि
जाहिंसं होइत अहांकेर
कान दुनू निरतिशय परितृप्त!

चित्त होइत तृप्त!
घृणा होइतए महराजक ऊपर
धिक धिक!
स्वयं अपने
एकसं बढि एक एहन
निरूपम गुणसुंदरी शत -शत किशोरीकें
विविध छल -छंदसं
किंवा प्रतापक प्रवलतासं
पकड़ि कए मंगवाय
अन्न -जल भूषण -वसन श्रृंगार सामग्री ढेर लगाय
सुरक्षित अन्त:पुरक एहि अरगड़ामे
बनौने छथि कैकटा रनिवास
बंदी शिविर सन डेरासभक क्रम -पात
एककें दोसराक संग नहि रहइ जाहिसं मेल
चक्रचालि चलैत छथि ताहि लेल
कखन करथिन ककर आदर वा ककर सम्मान —
घटौथिन ककर कखन दिनमान —
अही चिंतामे सदए लागल रहए हमरासभक जीजान
महराजक चरण सम्वाहन करैमै
सफल होइछ
एक मासक भितर जे दुई राति
पुण्यभागा सुहासिनी अभिशप्त से देवांगना
नहि थिक स्त्रीगणक जाति!
अभागलि कै गोट होएत एहन जकरा
छूबि छाबि कनेक
देने छथिन पुनि अनठाय
मने ओसभ गाछसं तोड़लाक उत्तर
कने दकरल लतामक थुरड़ी जकां हो
एम्हर -ओम्हर पड़ल पांडुर
कोनो अगिमुत्तुक निर्मम निठुरताक प्रतीक!
सुनई छी, राजा थिका नारायणक अवतार
करवाक चाही हुनक जय -जयकार
किंतु भगवान सेहो
क्षीरसागर मध्य
एहिना आड्गवाल रचि विचरैत छथि?
इच्छानुसार करैत छथि अभिसार —-
आइ ककरो
काल्हि ककरो
इंदिराकें बाध्य भ की एहिना

अनका बनाब अ पड़इ छनि ह्रदयेश?
तुमैत एहिना तूर
जाइत होएव अहां बहुतो दूर
भावनाक अनन्त पथ दिस
एकसरि चुपचाप —
तुमैतू अहिना तूर!
विद्यापतिक कविताक हे चिरउत्स, हे चिर निर्झरी!
लखिमा, अहां छलि हैव अद्‌भुत सुंदरी!

चित्रा
-जनकवि बैधनाथ मिश्र यात्री
पटना। जनवरी, १९४५.
प्रस्तुत कविता मे जनकवि यात्री महाकवि विद्यापति के प्रेमाकुल -विरहाकुल प्रेमी के रूप मे आ महारानी लखिमा के राजकिला मे बंद प्रेयसी के रूप मे चित्रित कैलन हय। जनकवि यात्री इ कविता महाकवि विद्यापति आ महारानी लखिमा के आत्मिक प्रेम के दर्शैलैन हय वा कपोल कल्पित प्रेम के इ त शोध के विषय जान पड़ैय। आकि लेखकीय मैथुन हय जेना कि मैथिली साहित्य मे पायल जाइत हय।
***

पिया मोर बालक बनाम मिथिला समाज।

पिया मोर बालक, हम तरूणि गे!
कौन तप चुकलौं भेलौ जननि गे!
पिया मोर बालक....

पहिरि लेल सखी दछिन चीर
पिया के देखैत मोरा दगध शरीर
पिया लेल गोद कै चलली बाजार
हटिया के लोग पूछे के लागै तोहार
पिया मोर बालक.....

नहीं मोरा देवर की नहीं छोट भाई
पूरब लिखल छल बलमु हमार
वाट के बटोहिया के तुहु मोरा भाई
हमरो समाद नैहर लेने जाय
पिया मोर बालक.....

कही हुन बाबा के कीनै धेनु गाय
दुधवा पिआई के पोसत जमाई
भनही विद्यापति सुनहु बृजनारि
धयरज धैरहुं मिलत मुरारी
पिया मोर बालक....

ई लोकप्रिय रचना मैथिली महाकवि विद्यापति के हय। भले ई भगवान कृष्ण के बाल रूप आ हुनकर जवान गोपिका के प्रेम के व्यक्त गेल हय। परंच कहल जाय हय कि अइ रचना मे महाकवि समाज में व्याप्त तत्कालीन स्त्री के दुर्दशा के व्यक्त कैलन हय। अइ रचना के भक्ति रचना न मानल जाइत हय बल्कि सामाजिक रचना कहल जाइत हय।
महाकवि विद्यापति के काल १३५०ई से १४५० ई हय। महाकवि से पहिले से लेके वर्तमान तक के साहित्यिक इतिहास मे कोनो एहन घटना के उल्लेख न मिलय हय कि कोनो बालक के बिआह कोनो युवती से भेल होय। जौकि बुढ वर से बालिका बिआह के बहुत दृष्टांत मिलय हय। साहित्यिक इतिहास अइसे भरल हय। शिव आ पार्वती वोकरे स्वरूप कहल जा सकैय हय। बाल बिधवा के दुर्दशा से त मैथिली साहित्य नोर झोर हय। मिथिला के संस्कृति में बालिका बधु बिआह

आ बहु पत्नी बिआह प्रथा रहल हय। तब केना पिया मोर बालक, हम तरूणि गे रचल गेल होयत। वास्तव मे महाकवि विद्यापति के उक्त रचना विशुद्ध रूप से भक्ति रचना हय। महाकवि के सामाजिक रचना न हय। जौं रहैत त –

पिया मोर बुढ़वा हम बालिका गे होइत, न कि
पिया मोर बालक हम तरूणि गे।

***

नवदुर्गा:प्रकीर्तिता: एकटा दृष्टि।

नवदुर्गा:प्रकीर्तिता: इ शीर्षक हय वरीय समीक्षक आ आलोचक रमण कुमार सिंह के नवरात्रा में लिखल साहित्यिक समीक्षा श्रृंखला के। परंच इ साहित्यिक समीक्षा महिमा गान हो के रह गेल हय। इंहा तक कि लेखिका के नवदुर्गा कहल गेल। अइ श्रृंखला के साहित्यकार नाटकार कुणाल झा आलोचना करैत कहलन कि इ साहित्यिक सांप्रदायिकता हय। वास्तव मे श्रृंखला के रूप मे महिला साहित्यकार के नवदुर्गा के रूप मे प्रतिस्थापित न करे के चाही। कारण साहित्य से संस्कृति के निर्माण होइ छैय। महाकवि विद्यापति के रचना। उगना रे मोर कतह गेला। से उगना (उग्रनाथ) महादेव आइ मिथिला में प्रतिस्थापित हय। भले वो प्रो मायानंद मिश्र के अनुसार दंत कथा के वा काल्पनिक उगना रहय। त वर्तमान मे जे साहित्यिक नवदुर्गा के रूप मे १.दीपिका चंद्रा २.संस्कृति मिश्र३.सुधा ठाकुर ४.दीपिका झा ५. नेहा झा मणि ६.मुन्नी कामत ७.निवेदिता झा ८.अभिलाषा झा आ ९.रोमिशा झा प्रतिस्थापित कैल गेल हय। कालान्तर मे नौ नवदुर्गा में स्थापित हो जायत। मैथिली साहित्य मे प्रश्न पूछल जायत कि मैथिली साहित्य मे नवदुर्गा के नाम बताउ त उतर मे इहे नवदुर्गा के नाम लेल जायत।

अंततः समीक्षक आ आलोचक के एहन शीर्षक आ महिमा मंडन से बचे के आवश्यकता हय।

***

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव।

मैथिलीक समानान्तर धाराक लेखन -सुभाष चंद्र यादव साहित्यिक संदर्भ मे इ-विदेह पत्रिका के संपादक गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी पर मंतव्य कि सुभाष चन्द्र यादव हांसिया के समाज अर्थात पचपनिया समाज के मैथिली जे पहिले रार आ बैद्यनाथ मिश्र यात्री के शब्द मे शूद्र के मैथिलीय हय।जैइ मैथिली के मानक मैथिली माने शोषक वर्ग के मैथिली से निकृष्ठ मानल गेल।जौं कि इ बहुजन मैथिल के मैथिली हय।अइ मैथिली मेयो साहित्य रचना भेल हय। परंतु एकरा उपेक्षा कैल गेल हय।इंहा तक कि महाकवि विद्यापति अही मैथिली मे रचना कैले रहलन। परंतु आइ मानक मैथिली में संशोधन कैल गेल हय। वरिष्ठ साहित्यकार सुभाष चन्द्र यादव गुलो उपन्यास के रचना क के पचपनिया मैथिली के मानक मैथिली के समानान्तर मैथिली रुप प्रदान क के समानान्तर मैथिली साहित्य के आगा बढौलन।आइ के समय मे इ-विदेह पत्रिका समानान्तर मैथिली साहित्य के पल्लवित पुष्पित करे ला जे गाछी रोप रहल हतन।जेइ पर रंग -विरंग के चिड़ैय अप्पन रंग -विरंग के शैली मे मैथिली साहित्य के समृद्ध क रहल हय।अइ दिशा मे पंगु के उपन्यासकार जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश मंडल, राजदेव मंडल, संदीप कुमार साफी, उमेश पासवान, बेचन ठाकुर, कपिलेश्वर राउत, रामबिलास साहु, नंदविलास राय, ललन कुमार कामत, शिव कुमार प्रसाद, धीरेन्द्र कुमार, रामदेव प्रसाद मंडल झाड़दार, नारायण यादव, मुन्नी कामत आ आचार्य रामानंद मंडल के समानान्तर मैथिली साहित्य मैथिली साहित्य मे मील के पाथर बनत। कनिका दिन पहिले समानान्तर मैथिली साहित्य के जगदीश प्रसाद मंडल कृत उपन्यास पंगु के २०२१साल के साहित्य अकादमी के मूल पुरस्कार से पुरस्कृत कैल गेल।इ डेग मैथिली समानान्तर साहित्य के लेल आजादी के अमृतकाल के समान समानान्तर मैथिली साहित्य अमृत काल मानल जायत। आबि कोनो सुभाष चन्द्र यादव के मैथिली समानान्तर साहित्य गुलो, रमता जोगी, मडर आ भोंट के गैस लाइटिंग आ स्टोरी साईंस बदल न सकैय हय।

***

ब्रह्म बनाम लोकदेवता:बरहम बाबा

ब्रह्म अर्थात् ईश्वर।मिथिला के हर गांव मे बरहम (ब्रह्म) स्थान हय। जे गांव देवता पिपर गाछ तरह माटी के पिंड के रूप मे मे स्थापित हय। कोनो पूजा पाठ मे ग्राम देवता के रूप मे पूजित होइ हय। अषाढ़ महीना मे विशेष रूप से सामुहिक पूजा कैल जाइ हय।

प्रो मायानंद मिश्र कृत मैथिली साहित्यिक इतिहास के अनुसार पिपर तर ध्यानास्थ बुद्ध के ब्रह्म मानल जाइत रहय।वो बुद्ध कालांतर मे पिंड के रुप ले लेलक आ बरहम बाबा के रूप मे पूजे जाय लागल।बाद मे एकर ब्राह्मणीकरण कैल गेल।

कालांतर मे एकर रूप आउर विकृत भे गेल।इ लोक देवता भे गेल। विभिन्न काल खंड मे विभिन्न लोक नायक सेहो बरहम बाबा बन गेल।इंहा तक कि ब्रह्म सेहो ब्रह्मा आ ब्राह्मण माने जाय लागल। बरहम गीत सेहो ब्राह्मण गीत बन गेल। ब्राह्मण आ गैर ब्राह्मण लोक देवता सेहो बरहम बाबा बन गेलन।

डॉ महेंद्र नारायण राम के कविता बरहम के अनुसार खुटौना के महेश ठाकुर, मैरवा के हरि राम, मझौलिया के भैया राम, बलहा के रामदुलारी, सुरहाचट्टी के मुरली, सौंधो के हजारी, किलाघाट के पुरूषोत्तम, लगुराअंव के ईश्वरीदत्त, मनियारी के कुलेश्वर आदि बरहम रुप मे पूजल जाइत हय।

अहम् ब्रह्मास्मि। अर्थात प्रत्येक जीव ब्रह्ममय हय।वोकर विकृत रूप भे गेल।

विचारणीय हय कि आइ तक लोक देवता सलहेस, लोक देवता लोरिक, लोक देवता दुलरा दयाल आ संत कारू खिरहर आदि बरहम बाबा न बन पायल हय। लोक कल्याणकारी काज से लोक देवता पद धारण कैलन परंच आध्यात्मिक ब्रह्म पद से विहिन हतन। लोक देवता आ ब्रह्म के सूक्ष्म अंतर के ऋषि आ ब्रह्मर्षि पद से समझल जा सकैय हय। वर्तमान काल खंड मे कुछ आउर व्यक्तित्व यथा महाकवि विद्यापति आ लक्ष्मीनाथ गुसाईं लोक देवता: ब्रह्म अर्थात् ईश्वर बने के दौर मे शामिल हय।

***

बरहम बाबा गीत बनाम बराहमन गीत।

बरहम बाबा गीत आ बराहमन गीत के घालमेल शर्मनाक कृत्य हय! फेसबुक वॉल पर आयल कमेंट पर विचार।

रेवती रमण झा -तुरन्तमे कोनो निर्णय पर पहुंचब जल्दबाजी हैत। ई लोक आस्था आ लोक परंपरा अछि कि घालमेल, से एहि पर शोध कयल जाउ। मिथिलाक प्रायः: हर पैघ गाममे ब्रह्म-स्थान आ सलहेस- स्थान अछि। मैथिलक खासक' ब्राह्मण के हर शुभ काजक शुभारंभ ब्रह्मक गीत आ पूजास' होइत रहल अछि। हुनका दूधपीठ आ छाग बलिक संग जनेऊ चढेबाक सेहो परंपरा अछि। तेँ ब्रह्मके ब्राह्मण कहब, हुनक सम्मान अछि आ कि जातीय संबोधन, सेहो शोधक विषय अछि। कहीं सभ गामक ब्रह्म (ब्रह्ममे लीन आत्मा) ब्राह्मणे त' नहि छलाह।
जँ ई सत्य, तखन त' हुनका ब्राह्मण बाबू संबोधन करब कोनो अनुचित नहि।

-आचार्य रामानंद मंडल-Rewati Raman Jha ब्राह्मण के ब्रह्म कहब अनुचित। भगवान के वर्ण वा जाति मे बंधनाइ धृष्टता के अलावा कुछ न हय। एकरे ब्राह्मणवाद कहय छैय। वोना सभ ब्रह्ममय हय। अहं ब्रह्मास्मि। डोम सेहो ब्रह्ममय हय। कुत्ता सेहो ब्रह्ममय हय। कि अंहा ब्राह्मण छी तैइला ब्रह्ममय छी। बौद्ध विचारक पिपर के वृक्ष तर ध्यानस्थ बुद्ध के ब्रह्म कहैय छैय। सधन्यवाद।

रत्नेश्वर झा -अपने कतय फंसि गेलौं|
संकिर्णता स नै, विराट सोच स मिथिला आ मैथिली के कल्याण हेतैक.
ब्राह्मण गीत आ ब्रह्म बाबा गीत फराक छैक.
मिथिला सकल समाज के ब्रह्मज्ञानी देखय चाहैत अछि.
जेकरा ज्ञान छै, ब्रह्मगुण छै तकर अपमान कोनो ज्ञानी नै क' सकैछ, अज्ञानी किछु क सकैया|

आचार्य रामानंद मंडल -Ratneshwar Jha जी। ब्राह्मण गीत आ बरहम बाबा गीत आलग छैय आ होय के चाही। मिथिला मैथिली आ मिथिला राज्य निर्माण के मंच पर ब्रह्म बाबा के गीत होय परंच ब्राह्मण बाबू गीत न गाबे के चाही। असल में मिथिला मैथिली आ मिथिला राज्य निर्माण संस्कृति से जुडल हय। हमरा विचार से त इ बिल्कुल राजनीतिक होय के चाही। परंच मिथिला मैथिली आ मिथिला राज्य निर्माणी सभ गंडमगोल क देलय हय त विचार प्रकट करनाई त आवश्यक हय। सधन्यवाद।

रत्नेश्वर झा -Rama Nand Mandal आ ज संपुर्ण समाज के ब्रह्मज्ञानी बना देल जाय, सब ब्राह्मण भ जाय, तखन त आरो नीक ने.

ज्ञान लग, सुचिता लग स्वच्छता लग कोनो जातियता नै छै.
सभक जड़ि छै, अज्ञानता|

रत्नेश्वर झा -ई जतेक गंडमगोल देखाईत अछि, सब अज्ञाताक परिणाम छै.

आचार्य रामानंद मंडल -Ratneshwar Jha सच कहल जाइ त ज्ञानीये गंडमगोल करैय छैय। मूर्ख त निर्मल होइ छैय। वोकरा गंडमगोल करे के ज्ञान कंहा होइ छैय।

मिथिला -मैथिली मंच के मशहूर गीत।
ब्राह्मण गीत कि बरहम बाबा के महिमा गान हय कि बाभन महिमा गान हय!

रेवती रमण झा -हमसभ जनैत आयल छी जे "ब्राह्मण " के संबोधित ई गीत ग्राम देवता/डीहबार/ब्रह्म/बरहम बाबाक गीत अछि। मिथिला संस्कृतिमे प्रत्येक शुभ काजक शुभारंभ गोसाउनिक गीत आ ब्राह्मण बाबूक गीतस' होइयै।
एहिमे ब्राह्मण बाभन जाति विशेष के लेल नहि, अपितु अपन गामक अराध्य देव बरहम बाबाक लेल प्रयोग कयल जाइत अछि। जत' बरहम बाबाक मंडप/गहबर रहैयै ओकरा ब्रह्म -स्थान कहल जाइयै।

आचार्य रामानंद मंडल -Rewati Raman Jha ब्राह्मण गीत बरहम बाबा के गीत कदापि न हो सकैय हय। इ त आइ काल हम सुन रहल छी ब्राह्मण गीत। ब्राह्मण के महिमा मंडन। बरहम बाबा आ बराहमन गीत के घालमेल शर्मनाक कृत्य हय। एकरे कहल जाय छैय सांस्कृतिक बर्चस्ववाद। मिथिला मैथिली मंच पर ब्राह्मण गीत त्याज्य होय के चाही। ब्राह्मण जातीय मंच के लेल ब्राह्मण गीत ग्राह्य हो सकैय हय। सधन्यवाद।

रेवती रमण झा Rama Nand Mandal एहने एकटा गीत अछि चुमाओनक गीत। एक मंचस' ई गीत गाओल जा रहल छल -'चुमाबह हे ललना धीरे -धीरे।' ई सुनि आगूमे बैसल युवा सभ 'चुम्मा' बुझि फ्लाइंग किस कर' लागल।

आचार्य रामानंद मंडल -Rewati Raman Jha फ्लाइंग किस अलग बात हय। ब्राह्मण बाबू गीत ब्रह्म बाबा गीत कदापि न हो सकैय हय। ब्रह्म बाबा गीत के पैरोडी हय ब्राह्मण बाबू गीत। परंच जान बुझ के गीतकार गायब हय। सधन्यवाद।

अइ संदर्भ मे डा महेंद्र नारायण राम के कविता -बरहम आ आयल कमेंट पर विचार।

बरहम
*****
बड पीपर
एकर गाछ
शास्त्र पुराणो मे कतोक साक्ष अछि
ई शीतल छांह
चिडै-चुनमुनि, ऋषि-मुनि, पीड़ित मनुष्य केर

आश्रय-स्थल होइत अछि
लोक-वेद दुनू मे
पीपर वृक्षराज आ बड महावृक्ष होइत अछि
प्रयाग स्थित महावृक्ष ‘वट’ सोझा
श्रीराम देखाइ पड़ैत अछि
शरदण्डाक पछिम तट पर स्थित
महावृक्ष पर देवता द्वारा
सत्योपयाचन कयल गेल अछि-

ई बड पीपर
तपोरत वन्य संस्कृति ओ परिश्रमित
ग्राम्य संस्कृतिक पोषक अछि तs
बरहम एकर धूरी ओ
ओही सत्योपयाचनक जीवन्त प्रतीक अछि
झूकर संस्कृतिक झकझूकर गीत
आ द्रविड संस्कृतिक वृक्ष पूजा
दुनू मिलिकs
बरहम विराट चेतना मे समाविष्ट अछि
ग्राम्य जीवनक समस्त गतिविधि
एतय आबि
विराम पबैत अछि
बिपैतक लगाम पबैत अछि-

ई विशाल वृक्ष
गामक कात, शांत, एकांत
फुजल स्थान पर
एकता, अखंडता, समृद्धि आ शांतिक
खिस्सा कहैत अछि
पात-पात पर देवताक भाषा अंकित अछि
गुम्फित अछि
ओकर ऊगब आ झड़ब मे
देवभाषा प्रतिबिम्बित अछि
ई नित्य हरियरी नेने
स्थिरता आ चिरंतनता कालजयी अछि
कखनो अर्पण नहि अछि-

वृक्षक नीचा बनल चबूतरा
ओहीपर स्थापित माटिक पीड़ी
सटले माटिक घोड़ा
डाढि पर लपेटल जनेऊ

पीड़ी पर अबीर
अवलेपित पीठार
ओकर वृक्षराज कहबाक खिस्सा
लोक मे सहजहि चिन्हित अछि
बरहम नामे अभिहित अछि-

एकर आश्रय अछि प्रकृति
सुख-दुःख दूटा फलक आकृति
सत्व, रज, तम तीनटा सोन्ड
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारिटा रस
ओत, त्वचा, नेत्र, रसना, नासिका पान्चटा साधन
जन्म लेब, रहब, बढब, बदलव, घटव आ नष्ट होयब
छहटा स्वभाव
रस, रूधिर, मांसु, भेद, अस्थि, मज्जा आ शुक
छाल रूपे सातटा धातु
एकर शाखा पर
आठ तत्व, पान्च महाभूत, मन, बुद्धि आ अहंकार
विराजमान अछि
एकर खोह मे
प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल
आ
धनंजय नव द्वार अछि
पत्ता-पत्ता पर देवत्वक वास अछि
जीव आ ब्रह्म
दूटा पक्षीक निवास अछि-

ई वृक्ष
बेस विशाल, भव्य ओ भाव्य अछि
पत्ताक सघनता, डाढिक पसरव
सीरक लटकन
कोनो जटाजूटधारी तपस्वी सं कम नहि
साधना आ तपक आकृति
एक दीप्तिक किरण अछि
एकर उमिलित नेत्र सं
चिनगी नि:सृत अछि
ललाट सं दिव्य आभन
छिटकि रहल अछि
इएह ज्योतिर्मय” पुरूष
लोक मे ‘बरहम’ छथि तs

शास्त्र मे ‘ब्रह्म ‘!
एकरा लेल ब्रह्म-गियान
वाणी, कर्मेन्द्रिय, चक्षु आ ग्यानेन्द्रिय सं विलग अछि
मन आ बुद्धि सं व्यक्त नहि होइत अछि-
वृक्ष प्रेम
मात्र लोकक सहज अनुभूति गम्य अछि
मनुष्यक सरल स्वभाव जन्य अछि
सिद्धार्थ राजप्रासाद छोड़ि बोधिवृक्ष निकट बुद्ध बनलाह
एकरे छांह मे गोपाल कृष्ण नैसर्गिक आनंद प्राप्त केलाह
वृक्षानुराग पंचवटीक शीतलता पाबि
राम शक्तिमान भेलाह
भरत भ्रातित्वक दृष्टिवान भेलाह
सम्पूर्ण मानवता एहि वृक्षक सोझा
झूकल देखाइ पड़ैत अछि
लोकजगत देदिप्यमान लगैत अछि-

ई वटवृक्ष संकल्प आ विश्वासक
पीपर विकास आ गतिशीलताक प्रतीक अछि
महुआ, प्रणय-सूत्रक
आम, तरलता आ सहृदयताक
जामुन, समता आ समानताक
बेल, पवित्रता आ सात्विकताक
कटहर, उर्जस्विता आ ऊर्ध्वक साहचर्य अछि
भावक इएह शक्ति
शुद्धि, पवित्र आ अकृत्रिम मिलन
“बरहम”
स्वयं केर सत्ता धारण अछि-

मातृत्व रूप मे
सहचरी रूप मे
प्रतिक्षारत प्रेमिकाक रूप मे
गामक जनिजाइतक इएह असीम अनुरागक भाव
लोक मे डीहबार रूपे
ओ ग्राम देवता बनि गेलाह
बूढी माय लोकनिक वात्सल्य सोझा बबूआ बनि गेलाह
बरहम थानक सोझा
पूजन केर बहन्ने
वयस्क स्त्री लोकनिक झकझूकर खेलैत छथि
गोलाकृति मे एक-दोसरक कन्हा पर हाथ राखि

झूमि-झूमि भाओ भगैत गहबर गीत छथि
मार्मिकता, आकुलता, पियासक लोकधूनक
तजगर ई स्फूर्ति
ग्राम देवता बरहम कें समर्पण
लोकमानसक आत्मीय आकर्षण
सभ कें आकृष्ट करैत अछि
अपन सर्वस्व अर्पित करैत अछि-

ई बरहम
गामक गरीब, किसान, मजदूरक आश्रय-स्थल अछि
तप्पत औल मे असंख्य ओछाओन लगैत अछि
नटखट नेना एकर सीर कें झूला बना लैत अछि
डाढि पर चढि डोल-पात खेलैत अछि
कतोक लोक ताश खेलैत अछि
कतोक स्वाध्यायी एकर अंक मे स्वध्याय करैत अछि
ई मूलत:एक नहि अनेक अछि
कोनो पुण्यात्मा मरणोपरांत
ई पद प्राप्त कsलेने छथि
हम अपना ओहिठामक बात करी तs
आइ सं आठ सौ साल पहिने
हमर खुटौना देवनगर नामे अभिहित छल
गामक पछिम गदाल बस्ती छल
एक पैघ ऊंचगर डीह छल
कालांतर मे ओबा-फौती आयल
सभ सुतले रहि गेल
महेश ठाकुर नामे पुण्यात्मा
सभक सेवा मे जुटि गेलाह
पीड़ितक सेवा मे अपन महती योगदान देलाह-
बांचल लोक हिनका डीहक डीहबार बना
एक पैघ वेदी आ चबूतरा बना
लगे बड पीपरक एक-एकटा वृक्ष लगा
लोक- पूजन कs ग्राम देवता बना देलाह
ओ
लोकदृष्टि मे ब्रह्म पद अधिकारी भेलाह
लोकभूमि पर एक लोकदेवत्व धारित
लोक आस्था आ विश्वासक अवतारी भेलाह
आइ ओ
खुटौनाक महेश ठाकु, मैरवाक हरि राम
मझौलियाक भैया राम

बलहाक रामदुलारी
सुरहाचट्टीक मुरली
सोंधोक हजारी
किलाघाटक पुरूषोत्तम
लगुराअंवक ईश्वरीदत्त
मनियारीक कुलेश्वर
कथैया, मुजफ्फरपुर, भरकुहर, वैशाली सहित
गाम-गाम मे
बहुतोक पुण्यात्मा ब्राह्मण-ब्राह्मणेत्तर
बरहम छथि
चन्द्रवर्णी माता
सूर्यवर्णी पिताक अग्निवर्णी पुत्र
नीला रंगक घोड़ा पर सवार छथि
हाथ मे कमल, पोथी-पुराण
गरदनि मे चम्पाक माला
कन्हा पर जनेऊ
देह मे पीताम्बर
पैर मे सोनाक खराम
मुह मे ताम्बुल रस अनुरंजित छथि
मिथिलाक लोकमूर्ति मे रूपायित
लाल पीअर धोती
फूलदार शेरवानी
गोल मुखाकृति
घनगर मोन्छ
माथ पर पाग वला अश्वारोही
लौकिक बरहम वैदिक ब्रह्म
सूर्यक बिम्ब सं प्रतिबिम्बित छथि
सर्वजातीय लोकदेव रूपे पूजित
लोकमानस लोकजगत मे लोकायित ओ प्रतिभासित छथि! ****

रेवती रमण झा -बहुत नीक आलेख। बहुत फरिछाक' लिखल अछि। ब्रह्म शब्दक बढ़ियां व्याख्या कयल अछि। ठीक कहल जे प्रत्येक गामक ब्रह्म कोनो ने कोनो पुण्यात्मा छथि। हुनका प्रति लोक आस्था अछि। जेना हुनक रूपक वर्णन अछि। ओहो एक लोक आस्थे पर आधारित अछि। तेँ हुनका ब्राह्मण बाबू कहि गोहरायब लोक आस्थे भ' सकैयै। ओना बहुतो गैर-ब्राह्मण लेखक एकर आलोचना करै छथि। ओ एकरा ब्राह्मणवाद मानै छथि।
मुदा हमरा नहि लगैयै जे ई लोक गीत आस्था छोड़ि आओर कोनो भावनास' गाओल जाइयै।
हमरा जनैत ब्राह्मण बाबू
कहि लोक अपन लोक देवताक प्रति सम्मान व्यक्त करैयै।
ओना अपने सभ बात स्पष्टक' देल अछि। तथापि विवेचना त' अपेक्षिते अछि।

रेवती रमण झा Rama Nand Mandal धन्यवाद।
पत्रकार पथिकजीक ई आलेख नीक अछि। मुदा ब्रह्म पर डा० महेन्द्र नारायण रामक व्याख्या उत्कृष्ट अछि। पथिक जी ब्रह्मा आ ब्रह्मके समाने बुझैत छथि। जखन कि दुनूमे अंतर अछि। बरहम ब्रह्म शब्दक अपभ्रंश अछि, नहि कि ब्रह्माक। खैर, ओ ई मानै छथि जे निर्गुण ब्रह्म सगुण (सद्गुण नहि) आ साकार रूपमे मिथिलामे सम्मानित आ पूजित छथि। ओ इहो लिखैत छथि जे इएह ब्रह्म शब्द बादमे बरहम आ ब्राह्मण भ' गेल हैत।
डा० राम सेहो अपन आलेखमे सगुण डीहबार/गाम देवताक साकार रूपक वर्णन कयलनिहैँ। हुनका जनेऊ धारी बतौलनिहैँ। दोसर जे ब्रह्मकेँ बरहम उच्चारण ब्राह्मणेतरे लोक करै छथि। तेँ भ' सकैयै ब्राह्मण आ अन्य शिक्षित वर्ग सभ ब्रह्मकेँ ब्राह्मणे कह' लागल होथि।
तेँ दुनू आलेखस' स्पष्ट अछि जे आपद विपदमे लोक निर्गुण ब्रह्म के साकार आ सगुण रूपमे गोहारि करैत छल आ हुनका बरहम, ब्राह्मण, ग्राम देवता, डीहबार आदि नामस' पूजन करैत छल। तेँ बरहम आ ब्राह्मण दुनू डीहबारेक सम्मानित नाम अछि।
हमरा जनैत ई ककरो सुनियोजित चालि आ कुचक्र नहि। ई समाजक दू वर्गक देल नाम अछि। बरहम बाबा कही कि ब्राह्मण बाबू ई समाजेक दू वर्गक देल सम्मान अछि। ई जाति सूचक नहि, आस्था सूचक अछि।
हम त' आइ धरि कोनो लोकके ककरो नाममे बाबू लगबैत सुनलौहैँ, जातिमे बाबू लगबैत नहि। जेना केओट बाबू, तेली बाबू, दुसाध बाबू, राजपूत बाबू, कायस्थ बाबू आदि आदि। तेँ हमरा जनैत एहि गीत मे ब्रह्मे बाबा या बरहम बाबाके लेल ब्राह्मण बाबू कहल गेल अछि।
ओना विमर्श जतेक हैत, ओतेक विद्वान लोकनिक विचार सामने आयत आ संशय ख़तम हैत। साभार धन्यवाद।

आचार्य रामानंद मंडल -Rewati Raman Jha डा महेंद्र नारायण राम के विचार जातिवादी वा ब्राह्मणवादी हय। ब्रह्म हो वा ब्रह्मा जनेऊ धारी त नहीं छतन। ब्राह्मणवादी जनेऊ चढ़ा देलन। ब्रह्म आ ब्रह्मा के ब्राह्मण कहना ब्रह्म आ ब्रह्मा के अपमान हय। बौद्ध दर्शन में पीपर तरह बैठल ध्यानस्थ बुद्ध के ब्रह्म कहल गेल हय। ज्ञानी के सेहो ब्रह्म कहल गेल हय। आब ब्राह्मण आब एकमात्र जाति हय। ब्राह्मण आब आध्यात्मिक पद न हय। विश्लेषण सामयिक होय के चाही। सधन्यवाद।

आचार्य रामानंद मंडल -Rewati Raman Jha डा महेंद्र नारायण राम के विचार जातिवादी वा ब्राह्मणवादी हय। ब्रह्म हो वा ब्रह्मा जनेऊ धारी त नहीं छतन। ब्राह्मणवादी जनेऊ चढ़ा देलन। ब्रह्म आ ब्रह्मा के ब्राह्मण कहना ब्रह्म आ ब्रह्मा के अपमान हय। बौद्ध दर्शन में पीपर तरह बैठल ध्यानस्थ बुद्ध के ब्रह्म कहल गेल हय। ज्ञानी के सेहो ब्रह्म कहल गेल हय। आब ब्राह्मण आब एकमात्र जाति हय। ब्राह्मण आब आध्यात्मिक पद न हय। विश्लेषण सामयिक होय के चाही। सधन्यवाद।

पत्रकार रोशन झा के फेसबुक वॉल से –

दुई भाई छलियै ब्राह्मण एसगर कियै एलियै यौ अहां ब्राहमण बाबू

एहि गीतसं साफ छै जे ब्राह्मण गीत माने बरहम बाबा या ब्रह्माजीक गीत नहि छियै। बिना पढ़ने अगर अचार्य बनबै तं एहने एहन पागल वला पश्न ठाढ करबै। दोसर बात ई मिथिला छियै। एतय बाभन सोल्हकन करबाक अछि तं करू मुदा गामे गाममे सलहेसक पुजा सेहो होइत छै। हमरा नहि पता सलहेश बाभल छलखिन या सोल्हकन।

नोट : हमरा नजरि मे शिक्षित लोक बाभन छै आ मुर्ख लोक सोल्हकण

आचार्य रामानंद मंडल -अंहा राजा सलहेस के सेहो संदेहास्पद बना देलिय। धन्य छी अंहा। सधन्यवाद।

आचार्य रामानंद मंडल -केते बाभन आचार्य सेहो ब्राह्मण बाबू गीत के ब्रह्म बाबा के गीत मानैय छैय। इ गीत दोसरो गीत हो सकैय छैय कारण गीतकार चालाक रहलन। अपन नाम न देलन। ब्रह्म बाबा गीत के पैरौडी बना देलन। संस्कृति के ब्राह्मणी करण भेल हय। प्रो मायानंद मिश्र के मैथिली साहित्यक इतिहास चीख चीख के कह रहल हय। कि इ सभ गुरु घंटाल बाभन के काज कैल हय। त लोग प्रो मायानंद मिश्र के नकार देलन। हुनका मृत्यु के लगभग चौदह वर्ष बाद पोथी छपायल। आइ हुनका पूजल जाइ हय परंतु विचार अछूत बनल हय। जौं अंहा के बात सत्य हय त मिथिला -मैथिली, मिथिला राज्य निर्माण मंच पर ब्राह्मण बाबू गीत गनाइ त बिल्कुल उचित न हय। इ सभ बंद करू। सधन्यवाद।

निष्कर्ष -ब्राह्मण बाबू यौ गीत ब्रह्म बाबा गीत के ब्रह्म के ब्राह्मण में बदल देल गेल हय जैसे ब्रह्म बाबा आ ब्राह्मण मे भ्रम पैदा क के ब्राह्मण जाति के महिमा मंडन कैल गेल हय। इ साहित्यकार दिनेश यादव नेपाल के भाषा, साहित्य आ मानक अनुसंधान पोथी से प्रमाणित होइ हय। पत्रकार रोशन झा के अनुसार ब्राह्मण गीत ब्रह्म आ ब्रह्मा गीत न हय। ब्राह्मण बाबू यौ के केवल ब्राह्मण गीत हय। ब्राह्मण बाबू यौ गीत मिथिला मैथिली आ मिथिला राज्य निर्माण मंच से होइत रहय। ब्राह्मण बाबू यौ गीत ब्राह्मण जातीय गौरव गीत हय। अइ गीत के सार्वजनिक मंच पर गनाइ उचित न हय। ब्रह्म आ ब्रह्मा के ब्राह्मण कहना ब्रह्म आ ब्रह्मा के अपमान हय। कहियो ब्राह्मण आध्यात्मिक पद रहय परंच आब ब्राह्मण एकटा जाति हय। बरहम आ बराहमन गीत के घालमेल शर्मनाक कृत्य हय।

***

मिथिलावाद।

प्रवीण नारायण चौधरी आ आचार्य रामानंद मंडल के वाद-विवाद।इजोत वाह्टस ग्रुप पर चैटिंग।

प्रवीण नारायण चौधरी-

कनिक जवाब ताकू तः

१. अपन मिथिला समाज मे राजनीति के अर्थ कि रहि गेल अछि?

२. नेता आ जनप्रतिनिधि केना चुना रहल अछि?

३. समाज आ सार्वजनिक सरोकार पर केकर निगरानी देखि रहल छी?

४. एहि अकलबेरा (अराजक राजनीतिक गन्डमगोल व्यवस्था) मे 'मैथिली-मिथिला' अर्थात् 'मिथिलावाद' सँ कतेक लोक ताल्लुक रखैत अछि?

५. समाज आ परिवार मे विखन्डन सँ केहेन दूरगामी असर पड़ैत अनुमान लगबैत छी? किंवा केहेन उपद्रव आ हिन्सा के विद्यमान दुरावस्था स्पष्ट देखाय लागल अछि?

जिवन्त समाज मे मुंह बाबिकय ठाढ़ किछु महत्वपूर्ण प्रश्न सब पर सक्षम आ सामर्थ्यवान विद्वत् समाज कैँ चिन्तन करहे टा पड़त।

देखने होयब – वोट के संख्या अपन पक्ष मे पाड़बाक लेल १-२% (अल्पसंख्यक) अगड़ा जाति (एलिट्स, प्रबुद्धजन, आदि) कैँ अपन मूल गाम-ठाम सँ उपटिकय प्रवास स्थल पर जाय कोहुना रोजी-रोटी कमेबाक आ परिवार कैँ बचेबाक बाध्यकारी परिस्थिति तथाकथित 'समाजवादी आ सामाजिक न्याय वला राजनीति' करनिहार 'भूराबाल साफ करो' कहिकय कय देलक। एकर दुष्परिणाम यैह भेल छैक जे आब समाज मे कोनो बात लेल कियो केकरो रोकटोक आ हंट-दबार न आब अनुशासन आ सुसभ्यता लेल शिक्षक अथवा पैघ अभिभावक लोकनि धियोपुता कैँ हंटय-दबारय नहि छैक। कारण ओ 'सामाजिक न्याय' तेना अपन रंग देखा देलकैक समाज कैँ जे नीति-नैतिकता गेल भाँड़ मे, सब अपनहि स्वच्छन्दता मे आकन्ठ मस्त अछि। तथापि, चिन्तन चलैत रहबाक चाही। तेँ ई सवाल राखल अछि।

काल्हि एकटा मंच पर खुलेआम चुनौती दैत कहलियैक जे एखन त हिन्सक रग्गड़ मात्र ट्रेलर देखि रहल छी, किछु वर्ष (मात्र ५ सँ १० वर्ष) मे अहाँ 'रक्तरंजना' देखब। रक्तक धार बहयवला जनसंघर्ष केना प्यासल दृष्टि सँ हमर मिथिला समाज कैँ ग्रास बनबय लेल ताकि रहल अछि से ओ दूर... किछु दूर पर ठाढ़ ओ काल हमरा ओहिना नजरि पड़ि रहल अछि। आगामी पीढ़ी लेल चिन्ता बढ़ि रहल अछि। पलायन सँ पहिने सँ टूटल, किछु समय बाद जनसंघर्ष मे समाज कैँ फँसैत एखनहि देखि रहल छी। चिन्तन तेँ बढ़ि रहल अछि।

मिथिलावाद जिन्दाबाद!!

अपन मौलिक संस्कार कैँ शीघ्रातिशीघ्र बचबय जाउ।

हरिः हरः!!

आचार्य रामानंद मंडल –

समाजवाद आ सामाजिक न्याय के विरोध इहे हय मिथिलावाद।

तब त समाजवादी आ सामाजिक न्याय के लेल मिथिलावाद पर विचार करनाइ आवश्यक हो जाइ हय। सधन्यवाद।

आचार्य रामानंद मंडल –

मिथिलावाद के सिद्धांत के बारे मे बताउ। मिथिलावाद के जनक कोन हतन।

प्रवीण नारायण चौधरी –

मिथिलावाद के सिद्धान्त बहुत सहज अछि। जनक समाजवाद एकर मूल आधार छी। समाज मे कियो केकरो बारि नहि सकैत अछि। सभक श्रमदान कैँ परस्पर उपयोग मे आनि सौहार्द्रताक बन्हन मे कसिकय बन्हायल समाज, जे मिथिलाक सामान्य संस्कार आ जीवन पद्धति मे समाहित अछि। डोमक चंगेरा-कोनियाँ, कुम्हारक अहिबात-पुरहर, मालीक मौर, सोनारक सोन, कमारक वेदी, चमारक रसनचौकी, नौआक होम-सामग्री, बाभनक मंत्रपाठ, धोबिनक सोहाग, आदिक जरूरत एकटा विवाह संस्कार लेल आवश्यक बनायल गेल अछि, ठीक तहिना मिथिलाक समस्त कर्म-सिद्धान्त मे एक-दोसरक रक्षा प्रति वचनबद्धताक नीति रहल अछि। आजुक अर्थप्रधान युग मे जातीय कर्म आ जाति-पाँतिक कोनो मर्यादा-सीमा नहि बचि जेबाक कारण आधुनिक व्यवहार अनुसार समाजक वर्गीकरण करैत चारि मूल वर्णक आधार पर व्यवस्थापन करब जरूरी अछि।

मन्थन एहि सब विन्दु पर करियौक

लोकतंत्र मे लोक द्वारा चुनल गेल सरकार लोकहित मे बनायल गेल संविधान मुताबिक चलायल जाइत छैक। एतय दुइ गो बात पर गौर करू – लोकहित मे बनायल गेल संविधान आ लोक द्वारा

चुनल गेल सरकार, संविधान मे समय-समय पर संशोधन करैत लोकहित के सही मूल्यांकन जरूरी छैक, जँ से नहि भेल त दुर्घटना तय अछि।

आइ हालत एहेन अछि जे लोकहित कम जातिहित-धर्महित आदिक चर्चाक आधार पर लोकमत (अभिमत) प्राप्त कय जनप्रतिनिधि चुनल जाइछ। लोकहित के सर्वोपरि सिद्धान्त लेल लड़निहार कोनो उम्मीदवार कैँ पार्टी टिकट नहि दयकय करोड़ों रुपया खर्च करबाक कुब्बत रखनिहार अधिकांश धनकुबेर कैँ चुनाव लड़बैत छैक। ओहि जनप्रतिनिधिक कोनो माइन-मोजर सदन मे नहि रहि पार्टी लाइन पर चलब ओकर नीयति बनि जाइत छैक। संविधान प्रदत्त पार्टी विशेषाधिकार 'व्हिप' मानू विशेष विषय लेल मात्र नहि, सब विषय पर लागू रहल करैत छैक। कोनो जनप्रतिनिधि अपन क्षेत्र आ लोकक प्रतिनिधित्व कतेक कय पबैत अछि से देखिते छी। एहेन स्थिति मे वास्तविक लोकतंत्र चलल या कोनो प्राइवेट लिमिटेड कम्पनीक सरकार चलल? कि ई ब्रिटिश सम्राज्यक ईस्ट इंडिया कम्पनी जेकाँ वर्तमान लोकतांत्रिक सरकार चलब नहि भेलैक? मन्थन एहि विन्दु सब पर करियौ।

लोकहित के सिद्धान्त सुपरिभाषित छैक, स्वयं प्रकृति द्वारा ई परिकल्पना पर संसार टिकल अछि जे पैघ-छोट सब मिलिजुलि रहू। जीव के आहार जीव हेतय, लेकिन आहार योग्य सजातीय जीव किन्नहुं नहि हेतैक। मानव कदापि मानव कैँ नहि खाय। लेकिन वर्तमान 'सामाजिक न्याय' मे 'भूराबाल साफ करो' वला लोक आओत आ 'मसीहा' कहाओत, ओकरा 'समाजवादी धाराक राजनेता' मानल जायत। आब बताउ! एहेन स्थिति मे केहेन समाजक निर्माण होयत आ ओहि ठामक प्रजाक हित केना होयत? मन्थन एहि सब विन्दु पर करियौक।

हरिः हरः!!

आचार्य रामानंद मंडल –

हम त सोचैत रहली हय कि कोनो आधुनिक सामाजिक चिंतक के विचार हय मिथिलावाद। परंतु इ त मनुस्मृति वा मनु संविधान पर आधारित वर्ण-व्यवस्था वा वर्णाश्रम आधारित मिथिलावाद हय। वा मिथिलावाद के खोल मे ब्राह्मणवाद हय। ब्राह्मणवाद समाजवाद आ सामाजिक न्याय विरोधी सिद्धांत हय।कृषक जनक आ धरती पुत्री सीता के मिथिलावाद से दूरे रखूं।अइला कि इस दूनू सर्वमान्य हतन। सधन्यवाद।

प्रवीण नारायण चौधरी –

ब्राह्मणवाद, मनुवाद, मनु संविधान, वर्णव्यवस्था, वर्णाश्रम धर्म के परिभाषा अपनेक दृष्टि मे कि अछि ताहि पर हम कोनो विचार नहि थोपब आदरणीय महानुभाव।

परञ्च ई तथाकथित समाजवाद आ सामाजिक न्याय के बात कहल त बताउ ७५ वर्ष के स्वतंत्र भारत मे अपने गैर-ब्राह्मण मे शिक्षा आ रोजी-रोजगार सँ लैत वर्गीय अन्तर कैँ केना सम्बोधन होइत देखलहुँ?

आर, एहि ७५ वर्ष मे रक्तरंजना (जाति-धर्म मे विखन्डित समाज मे जनसंघर्ष) के प्रत्यक्ष तस्वीर कि बुझबैत अछि अहाँ कैँ? भूराबाल त साफ भ' गेल। आइ समाज कैँ दिशानिर्देश करयवला आधार नव संविधान सँ समस्याक कतेक निदान भ' सकल अछि?

आचार्य रामानंद मंडल-

हमर अंहा के विचार समानान्तर धारा के विचार हय। समानान्तर रेखा आपस मे न मिलय हय। परंतु गणितज्ञ के मानव हय कि समानान्तर रेखा अनंत विंदू पर मिलय हय। सधन्यवाद।

प्रवीण नारायण चौधरी –

आर, ई नीक सँ याद राखू – लोकतंत्र मे लोक के संख्या गण्य होइत छैक। ब्राह्मणक संख्या मुठ्ठी भरि छैक, सेहो पलायन उपरान्त गाम-के-गाम खाली कय देलक। काल्हि मिथिलावाद कैँ चलबय लेल ओ ब्राह्मण कैँ ब्रह्माजी के पावर भेटि जेतैक से समझ जँ मन मे अछि त अपन शिक्षा-दीक्षा आ बौद्धिक क्षमता पर पुनर्विचार करब। चलबाक त अछि भारतीय संविधानहि अनुसार, वैह व्यवस्था, वैह विचार आ वैह तथाकथित समाजवाद आ सामाजिक न्याय, आरक्षणक राजनीति, धार्मिक उन्माद, आदि।

प्रवीण नारायण चौधरी-

कोन वैज्ञानिक समानान्तर रेखा के अनन्त विन्दु पर मिलय हय कहलकय? कोन ठाम पढ़लियैक ई गणित सर?

विचार के मिलन विन्दु व्यक्ति अनुसार नहि होइत छैक। दर्शन कहैत छैक जे विचार मे समानता आ भिन्नता देश, काल व परिस्थिति अनुसार होइत छैक। अहाँ जे किताब पढ़लहुँ, जाहि सामाजिक परिकल्पना मे लागल छी, ताहि मे वैचारिक भिन्नता रहितो लोकमिलन तय विषय छैक। समाज सँ बाहर न अहाँ आ न हम। असगरे लोक फेफियाकय मरि जायत।

आचार्य रामानंद मंडल –

जी। महाविद्यालय मे प्रोफेसर साहब के कहब।वोहो बीएससी मे।वोना अंहा कोन विषय से पढले छी।आ अपने कंहा के बासी छी जानकारी देब।

आचार्य रामानंद मंडल –

समानान्तर रेखा अनंत विंदू पर मिलैय छैय। एगो परिकल्पना हय।पढैले हतन।स्व भैरव झा, स्व अभिमन्यु झा। गोयनका कालेज, सीतामढ़ी।

प्रवीण नारायण चौधरी –

हम गणित विषय के शिक्षक रहल छी। विराटनगर मे अंग्रेजी आवासीय विद्यालयक पूर्व शिक्षक आ वर्तमान मे निर्यात प्रबन्धक (निजी संस्थान) मे कार्यरत छी। जनक-जानकीक सन्तति 'मैथिल' छी। आत्मविद्याक आश्रयदाता भूपाल जनक मैथिलक प्रजा तेँ मैथिल छी। ओना भूराबाल के 'बा' छी।

आचार्य रामानंद मंडल –

जी। मनुष्य एकटा सामाजिक प्राणी हय।अइ मे कोनो संदेह न हय। परंतु समाज पर कोनो व्यक्ति आ समुहे शासन करय हय।तै कोनो वाद के जन्म होय हय। राजतंत्र वा प्रजातंत्र।

प्रवीण नारायण चौधरी –

प्रजातंत्र के परिभाषा त स्पष्टे अछि। भोरे लिखने छी। प्रजाक मत सँ जनप्रतिनिधि केना चुनाइत अछि आ प्रजाहितक बात करैत कोना संविधान तैयार करैत अछि, आ पार्टी सँ टिकट व लोक सँ मत प्राप्त करबाक मूलाधार आइ करोड़क-करोड़ टका व बाहुबल कोना छैक, जितलाक बादो ओकर बात सदन मे कतेक चलैत छैक आ केना प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी जेकाँ गवर्नेन्स चलैत अछि, सब बात पर लिखने छी। प्रजाहित लेल परिकल्पित संविधानक दायरा सँ प्रजाक कतेक हित भ' रहल छैक, कतेक विकास देखि रहल छी, सारा विन्दु पर प्रकाश देल अछि।

आचार्य रामानंद मंडल –

भूराबाल त बिहार होइत नेपाल चल गेल हय।वोना भूराबाल चार गो जाति के संक्षिप्ताक्षर हय।हां बुरा लगय छैय जेना अन्य जाति समूह के सोल्हकन वा रार। सधन्यवाद।

प्रवीण नारायण चौधरी-

सोल्हकन या रार सामन्ती युग के देन थिक सर। अपनेक भारतवर्ष मे बुद्धकाल आ पछाति काल मे यैह सामन्ती व्यवस्थाक आधार रहल अछि। मुगलकाल व ब्रिटिशकाल सेहो ओहि सामन्ती (बरिया) के माध्यम सँ अपन राज चलेलक। सामन्तवादक शब्द लोकतंत्र मे अवैध घोषित अछि। वर्तमान संविधान मे जातिसूचक सामन्तक प्रयोग कयल शब्द दण्डनीय अपराध थिकैक। कथी लेल घिसल-पिटल विन्दु पर आइयो जिबि रहल छी अपने समान बुद्धिजीवी?

आचार्य रामानंद मंडल –

जी त राजेतंत्र।इ ब्राह्मणवाद के अनुकूल हय।राजा विष्णु के अवतार होइ हय। जेकरा प्रजातंत्र विखंडित करय हय।आबि राजतंत्र असंभव हय।

आचार्य रामानंद मंडल –

बात त सही कहय छी। परंतु सामंती के। वोही सामंती के लेल न समाजवाद आ सामाजिक न्याय इलाज हय।

प्रवीण नारायण चौधरी –

इलाज खाली शब्द मे? आ कि व्यवहारो मे? समाजवाद त देखबे कयल जे केना अपन आ अपन सन्तान व परिजनक हित मात्र कयलक। जमीन पर ७५ वर्ष के परिणाम नहि देखि रहल छी की? आ कि बस अन्ठा रहल छी?

प्रवीण नारायण चौधरी –

समाज मे रहयवला ब्राह्मणवाद के पीड़ा केना भोगलक? किछु प्रकाश दी, हमर अध्ययन लेल। कारण समाज मे ब्राह्मणक वर्चस्वक कोनो प्रभाव हमरा जीवनकाल (५१ वर्ष) मे हम नहि देखि पेलहुँ, या फेर स्वयं ब्राह्मण होयबाक कारण हमर नजरि एहि दिश नहि गेल होयत। कृपया समझाबी हमरा।

आचार्य रामानंद मंडल –

परिवारवाद।कि राजतंत्रीय व्यवस्था परिवारवाद न हय।

वर्णवाद कि परिवारवाद न हय।

प्रवीण नारायण चौधरी –

उत्तर गोलमटोल देला सँ काज नहि चलत सर। स्पष्ट रेखांकित करू। ७५ वर्ष के ई समाजवाद आ सामाजिक न्याय के परिणाम ७०% प्रजाक लेल पलायन रोग केना देलक?

आचार्य रामानंद मंडल –

हम त ६४बा साल मे छी।

प्रवीण नारायण चौधरी –

हँ, तेँ न हम अहाँ सँ अनुभव प्राप्त करय लेल प्रकाश दियए वास्ते आग्रह कयल।

६४ वर्षक सूर्योदय देखनिहार जाहि कोनो समाज के वासिन्दा होइ, कहू जे ब्राह्मणवाद के पीड़ा समाज केँ केना पीड़ित कयलक?

आचार्य रामानंद मंडल-

उत्तर कोनो गोल मटोल न हय। ब्राह्मणवाद से कोनो ज्यादा गोल मटोल हो सकय हय।आइ पूरा समाज ब्राह्मणवाद से पीड़ित हय।आ ओकर प्रतिकार से ब्राह्मणवाद पीड़ित हय।

प्रवीण नारायण चौधरी –

ऊपर के वार्ता बेर-बेर पढ़ी। अपने कें अपन दृष्टि कतेक फरिच्छ आ दूर धरि कतेक देखबाक सामर्थ्य विकसित भेल अछि से स्वतः पता चलि जायत। हमर शुभकामना। मिथिलावाद के अर्थ विकृत करबाक कुत्सित प्रयास लेल कोनो धन्यवाद नहि। जमीन पर भेटब, समाज के असलियत आँखिक सामने देखाकय, उदाहरण दैत अहाँ सँ बात करब। प्रणाम!

आचार्य रामानंद मंडल-

मिथिलावाद के अर्थ अंहा संकीर्ण आ कुत्सित क देलीय।हम त मिथिलावाद के आधुनिक सामाजिक सिद्धांत के देखेला रहली हय। परंतु अंहा के विचार से पता चलल कि शराब पुरनके हय शीशी नया हय। मिथिलावाद के आड़ मे अंहा मिथिलावासी से षड्यंत्र क रहल छी। हमरा बड़ा दुख हय।

प्रवीण नारायण चौधरी –

क्षमा करब। वार्ता अन्त कय देने छी। अहाँ पूर्वाग्रही आ कुन्ठित विचारधाराक लोक बुझा रहल छी। कहियो भेटियेकय समाजक विभिन्न लोक व वर्ग कें देखाकय प्रत्यक्ष वार्ता नीक रहत।

आचार्य रामानंद मंडल –

उल्टा बात न करू।बाघ आ बकरी वाला कथा अंहा जनते होयब।हम आधुनिक विचार के छी। अंहा पुरातन विचार के। लोग अब बुधियार हय। लोग अंहु के हमरो विचार के अकांतय आ निर्णय लेतय।कोनो के झांसा मे न अतय। चाहे हम होहु आ अंहा। सधन्यवाद।

***

राजा जनक के समाजवाद।

बाल्मीकि रामायण के अनुसार जनक राज में दास प्रथा रहै –
सीता जी के दहेज में देलन दास -दासी।
दलों कन्याशतं तासां दासवासीनुत्तमम्।
हिरण्यस्य सुवर्णस्य मुक्तानंद विद्रुमस्य च।। ५।।
-अयोध्याकांड
अपनी पुत्रियों के लिए सहेली के रूप मे उन्होने सौ-सौ कन्याएं तथा उत्तम दास-दासिययां अर्पित की। इन सबके अतिरिक्त राजा ने उन सबके लिए एक करोड़ स्वर्णमूद्रा, रजतमुद्रा, मोती तथा मूंगे भी दिये।

रामचरितमानस के अनुसार जनक राज में वर्ण-व्यवस्था रहै-

रंगभूमि आए दोउ भाई। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई।।
चले सकल गृह काज बिसारी। बाल जुबान जरठ जर नारी।।
अर्थात – दोनों भाई रंगभूमि में आए है, ऐसी खबर जब सब नगर निवासियों ने पायीं, तब बालकि, जबान, बुढ़े, स्त्री, पुरुष सभी घर और काम -काज को भुलाकर चल दिए।

देखी जनक भीर भै भारी। सुची सेवक सब लिए हंकारी।।
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहूं। आसन उचित देहु सब काहू।।

अर्थात -जब जनक जी ने देखाकि बड़ी भीड़ हो गई है, तब उन्होंने सभ विश्वासपात्र सेवकों को बुलवा लिया और कहा -तुमलोग तुरंत सब लोगों के पास जाओ और सब किसी को यथायोग्य आसन दो।

दो०- कहा मृदु बचन बिनीत तिंह बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि।। २४०।।

अर्थात – उन सेवकों ने कोमल और नम्र वचन कहकर उत्तम, मध्यम, नीच और लघु (सभी श्रेणी के) स्त्री -पुरूषों को अपने अपने योग्य स्थान पर बैठाया।

उपर्युक्त सामाजिक विवरण में राजा जनक काल मे दासप्रथा आ वर्ण-व्यवस्था रहै।
***

रामायण आ रामचरित मानस मे मतभिन्नता -खीर वितरण

राजा दशरथ के रानी सभ के गर्म धारण के लेल खीर वितरण के संबंध मे रामायण आ रामचरित मानस मे मतभिन्नता हय।

बाल्मीकि रामायण के अनुसार।

कौशल्यायै नरपति:पायसार्धं ददौ तदा।
अर्धादर्धं ददौ चापि सुमित्रायै नराधिप:।। २७।।

ऐसा कहकर नरेश ने उस समय उस खीर का आधा भाग महरानी कौशल्या को दे दिया। फिर बचे हुए आधे का आधा भाग रानी सुमित्रा को अर्पण किया।

कैकेय्ये चावशिष्टार्धं ददौ पुत्रार्थकारणात।
प्रददौ चावशिष्टार्धं पायसस्यमृतोपमम्।। २८।।
अनुचिन्त्य सुमित्रायै पुनरेव महामति:।
एवं तासां ददौ राजा भार्याणां पायसं पृथक्।। २९।।

उन दोनों को देने के बाद जितनी खीर बची रही, उसका आधा भाग तो उन्होंने पुत्र प्राप्ति के उद्देश्य से कैकेई को दे दिया। तत्पश्चात उस खीर का जो अवशिष्ट आधा भाग था, उस अमृतोपम भाग को महाबुद्धिमान नरेश ने कुछ सोच बिचारकर पुनः सुमित्रा को ही अर्पित कर दिया। इस प्रकार राजा ने अपनी सभी रानियों को अलग अलग खीर
बांट दी।

समझे के लेल –

खीर=१६आना (१रु) कौशल्या- ८ आना
सुमित्रा -४ आना+२ आना=६आना
कैकेई-२ आना
कुल-१६आना

रामचरित मानस के अनुसार –

तबहिं रायं प्रिय नारी बोलाईं। कौशल्यादि तहां चलि आईं।
अर्द्ध भाग कौशल्यहि दींहा। उभय भाग आधे कर कींहा।

उसी समय राजा ने अपनी प्यारी पत्नियों को बुलाया। कौशल्या आदि सब रानियां वंहा चली आई।
राजा ने पायस का आधा भाग कौशल्या को दिया और शेष आधे को दो भाग किये।

कैकेई कहं नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ
कौशल्या कैकेई हाथ धरि। दींह सुमित्रिहि मन प्रसन्न करि।

वह उनमें से एक भाग राजा ने कैकैयी को दिया
शेष जो बच रहा उसके फिर दो भाग हुए और राजा ने उनको कौशल्या ओर कैकेई के हाथ पर रखकर अर्थात उनकी अनुमति लेकर और इस प्रकार उनका मन प्रसन्न करके सुमित्रा को दिया।

समझे के लेल –

खीर -१६आना (१रु) कौशल्या -८आना
कैकेई -४आना
सुमित्रा -२ आना+२आना=४ आना।
कुल-१६आना।

सभ रानी अपन अपन खीर के खैलन आ गर्भधारण कैलन। बाद मे कौशल्या राम के, कैकेई भरत के आ सुमित्रा लक्ष्मण आ शत्रुधन के जनम देलक।

अइ प्रकार खीर बांटे के प्रक्रिया मे रामायण आ रामचरित मानस मे मतभिन्नता हय।
***

रामायण आ रामचरितमानस में मतभिन्नता -स्वयंबर धनुष यज्ञ।

स्वयंबर वा धनुष यज्ञ के वृत्तांत मे महर्षि बाल्मीकि आ संत तुलसीदास मे मत भिन्नता हय।
महर्षि बाल्मीकि के अनुसार –
वीर्यशुल्केति मे कन्या स्थापितेयमयोनिजा।
भूतलादुत्थितां तां वर्धमानां ममात्मजाम्।। १५।।
वरयामासुरागत्य राजानो मुनिपुंगव।
अर्थात – अपनी इस अयोनिजा कन्या के विषय में मैंने यह निश्चय किया कि जो अपने पराक्रम से इस धनुष को चढा देगा, उसी के साथ इसका ब्याह करूंगा। इस तरह इसे वीर्यशुल्का (पराक्रम शुल्क वाली) बनाकर अपने घर में रख छोड़ा है। मुनिश्रेष्ठ! भूतल से प्रकट होकर दिनों दिन बढनेवाली मेरी पुत्री सीता को कई राजाओं ने यहां आकर मांगा।

तेषां वरयतां कन्यां सर्वेषां पृथिवीक्षिताम्।। १६।
वीर्यशुल्केति भगवन् न ददामि सुतामहम्।

अर्थात -भगवन! कन्या का वरण करनेवाले उन सभी राजाओं को मैंने बता दिया कि मेरी कन्या वीर्य शुक्ला हूं। (उचित पराक्रम प्रकट करने पर ही कोई पुरुष उसके साथ विवाह करने का अधिकारी हो सकता है) यही कारण है कि मैंने आजतक किसी को अपनी कन्या नहीं दी।

तेषां जिज्ञासमाननां शैवं धनूरूपाहृतम्।। १८।।
न शेकुर्ग्रहणे तस्य धनुषस्तोलनेअपि वा।

अर्थात – मैंने पराक्रम की जिज्ञासा करने वाले उन राजाओं के सामने यह शिवजी का धनुष रख दिया; परंतु वे लोग इसे उठाने या हिलाने में भी समर्थ न हो सके।

यद्यस्य धनुषो राम:कुर्यादारोपणं मुने।
सुतामयोनिजां सीतां दद्यां दशरथेरहम्।। २६।।

अर्थात -मुने! यदि श्रीराम इस धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा दें तो मैं अपनी अयोनिजा कन्या सीता को इन दशरथ कुमार के हाथ में दे दूं।

तामादाय समंजुषामायसीं यत्र, तद्धनु:।
सुरोपं ते जनकमूचुर्नृपतिमन्त्रिण:।। ५।।

अर्थात -लोहे की वह संदूक, जिसमें धनुष रखा गया था, लाकर उन मंत्रियों ने देवोपम राजा जनक से कहा –

इदं धनुर्वरं राजन् पूजितं सर्वराजभि:।
मिथिलाधिप राजेन्द्र दर्शनीयं यदीच्छसि।। ६।

अर्थात -राजन! मिथिलापते! राजेन्द्र! यह समस्त राजाओं द्वारा सम्मानित श्रेष्ठ धनुष है। यदि आप इन दोनों राजकुमारों को दिखाना चाहते हैं तो दिखाइये।

इदं धनुर्वरं ब्रह्मय्जनकैरभिपूजितम्।
राजभिश्च महावीर्यैरशक्ते पूरितं तदा।। ८।।

अर्थात -ब्रह्मण! यही वह श्रेष्ठ धनुष है, जिनका जनकवंशी नरेशों ने सदा ही पूजन किया है। तथा जो इसे उठाने में समर्थ न हो सके, उन महापराक्रमी नरेशो ने भी इसका पूर्वकाल मे सम्मान किया है।

महर्षेर्वचनाद् रामो यत्र तिष्ठति तद्धनु:।
मंजुषां तामपावृत्य दृष्ट्वा धनुरथाब्रवीत्।। १३।।

अर्थात -महर्षिकी आज्ञा से श्री राम ने जिसमें वह धनुष था उस संदूक को खोलकर उस धनुष को देखा और कहा –

इदं धनुर्वरं दिव्यं संस्पृशामीह पाणिना।
यत्नवांश्च भविष्यामि तोलने पूरणेअपि वा।। १४।।

अर्थात -अच्छा अब मैं इस दिव्य एवं श्रेष्ठ धनुष में हाथ लगाता हूं। मैं इसे उठाने और चढ़ाने का भी प्रयत्न करुंगा।

बाढमित्यब्रवीद् राजा मुनिश्च समभाषत।
लीलया स धनुर्मध्यै जग्राह वचनान्मुने:।। १५।।
पश्यतां नृसहस्त्राणां बहूनां रघुनंदन:।
आरोपयत् स धर्मात्मा सलीलमिव तद्धनु;।। १६।।

तब राजा और मुनि ने एक स्वर से कहा -हां, ऐसा ही करो। मुनि की आज्ञा से रघुकुलनंदन धर्मात्मा श्री राम ने उस धनुष को बीच से पकड़कर लीला पूर्वक उठा लिया और खेल सा करते हुए उस पर प्रत्यंचा चढ़ा दी। उस समय के ई हजार मनुष्यो की दृष्टि उन पर लगी थी।

आरोपयित्वा मऔवईं च पूरयामास थद्धनउ:।
तद् बभन्च धनुर्मध्ये नरश्रेष्ठो महायशा:।। १७।।

प्रत्यंचा चढ़ाकर महायशस्वी नरश्रेष्ठो श्री राम ने ज्योंहि उह धनुष को कान तक खींचा त्योंहि वह बीच से ही टूट गया।

जनकानां खुले कीर्तिमाहरिष्यति मे सुता।
सीता भर्तारमासाद्य रामं दशरथात्मजम्।। २२।।

मेरी पुत्री सीता दशरथकुमार श्री राम को पति रूप में प्राप्त करके जनकवंश की कीर्ति का विस्तार करेगी

मम सत्या प्रतिज्ञा सा वीर्यशुल्केति कौशिक।
सीता प्राणैर्बहुमता देया रामाय मे सुता।। २३।।

कुशिकनंदन! मैंने सीता को वीर्य शुल्का (पराक्रमरूपी शूल्क से ही प्राप्त होने वाली) बताकर जो प्रतिज्ञा की थी, वह आज सत्य एवं सफल हो गयी। सीता मेरे लिये प्राणों से भी बढ़कर है। अपनी यह पुत्री श्री राम को समर्पित करूंगा।

रामचरित मानस के अनुसार –

सीय स्वयंबरु देखिअ जाइ। इसु काहि धौंस देइ बड़ाई।
लखन कहा जस भाजनु सोई। नाथ कृपा तव जापर होई।। १।।

चलकर सीताजी के स्वयंवर को देखना चाहिए। देखें ईश्वर किसको बड़ाई देते हैं। लक्ष्मण जी ने कहा -हे गनाथ! जिस पर आपकी कृपा होगी, वही बड़ाई का पात्र होगा (धनुष तोड़ने का श्रेय उसी को प्राप्त होगा।)।।

रंगभूमि आए दोउ भाई। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई।।
चले सकल गृहिकाज बिसारी। बाल जुबान जरठ नर नारी।।

दोनों भाई रंगभूमि में आए हैं, ऐसी खबर जब सब नगरवासियों ने पायी, तब बालक, जवान, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सभी घर और काम काज को भुलाकर चल दिये।

लेत चढावत खैंचत गाढे। कहीं न लखा देख सबु ठाढ़ैं।।
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा, भरे भुवन धुनि घोर कठोरा।।

लेते, चढ़ाते और जोर से खींचते हुए किसी ने नहीं लखा (अर्थात ये तीनों काम इतनी फूर्ति से हुए कि धनुष को कब उठाया, कब चढ़ाया और कब खींचा, इसका किसी को पता नहीं लगा); सबने श्री राम जी को (धनुष खींचे) खड़े देखा

। उसी क्षण श्री राम ने धनुष को बीच से तोड़ डाला। भयंकर कठोर ध्वनि से (सब) लोक भर गये।। ४।।

गावहिं छवि अवलोकि सहेली। सिय जयमाल राम उर मेली।।

इस छबि को देखकर सखियां गाने लगी। तब सीताजी ने श्री राम जी के गले में जयमाला पहना दी।।

***

जयंत (कौआ) के कथा।

बाल्मीकि रामायण आ संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस मे मतभिन्नता!

बाल्मीकि रामायण के सुंदरकांड मे अशोक वाटिका स्थित सीता हनुमान जी से कौआ वाला घटना बतैले रहथिन -पहचान स्वरुप जे भगवान राम के विश्वास हो जाय कि हनुमान आ सीता से भेट भेल रहय।

इदं श्रेष्ठमभिज्ञानं ब्रूयआस्त्वं तु मम प्रियं।
शैलस्य चित्रकूटस्य पाले पूर्वोत्तरे पदे।। १२।।

वानरश्रेष्ठ! तुम मेरे प्रियतम से यह उत्तम पहचान बताना -नाथ! चित्रकूट पर्वत के उत्तर-पूर्व वाले भाग पर, स तत्र पुनरेवाथ वायस: समुपागमत्।
तत: सुप्तप्रबुद्धां मां रआघवआंगत् समुत्थिताम्
वायस: सहसआगम्य विददार स्तनान्तरे।। २२।।

इसी समय वह कौआ फिर वहां आया। मैं सोकर जगने के बाद श्री रघुनाथ जी की गोद से उठकर बैठी ही थी कि उस कौए ने सहसा झपटकर मेरी छाती में चोंच मार दी।

पुनः पउनरथओत्पयं विददार स मां भृशम्।
तत: समुत्थितो रामो मुक्तै: शोणितबिन्दुभि:।। २३।

उसने बारंबार उड़कर मुझे अत्यंत घायल कर दिया। मेरे शरीर से रक्त की बुंदे झरने लगी, इससे श्री रामचंद्र जी की नींद खुल गई और वे जागकर उठ बैठे।

स मां दृष्टवां महाबाहुर्वितुन्नां स्तशयोस्तदा।
आशीविष इव क्रुद्ध: श्वसन वाक्यमभाषत।। २४।।

मेरी छाती में घाव हुआ देख महाबाहु श्री राम उस समय कुपित हो उठे और फुफकारते हुए विषधर सर्प के समान जोर जोर से सांस लेते हुए बोले -।। २४।।

केन ते नागनासोरु विक्षतं वै स्वानान्तरम्।
क: क्रीड़ति सरोषेण पंचवक्त्रैण भोगिना।। २५।।

हाथी की सूंड़ के समान जांघोंवाली सुंदरी! किसने तुम्हारी छाती को क्षत -विक्षत किया है? कौन रोष से भरे हुए पांच मुखवाले सर्प के साथ खेल रहा है?

वीक्षमाणस्ततस्वं वै वायसं समवैक्षत।
नखै: सरुधिरैस्तीक्ष्णैर्मामेवाभिमुखं स्थितम्।। २६।।

इतना कहकर जब उन्होंने इधर उधर दृष्टि डाली, तब उस कौए को देखा, जो मेरी ओर ही मुंह किये बैठा था। उसके तीखे पंजे खून से रंग गये थे।

रामचरितमानस के अरण्य काण्ड के प्रथम चौपाई में जयंत (कौआ) की कथा हय।

एक बार चुनि कुसुम सुहाए। निज कर भूषण राम बनाए।
सीतहि पहिराए प्रभु सादर। बैठे फटिक सिला पर सुंदर।

एक बार सुंदर फूल चुनकर श्री राम जी ने अपने हाथों से भांति -भांति के गहने बनाये और सुंदर स्फटिक शिला पर बैठे हुए प्रभु ने आदर के साथ वे गहने श्री सीता जी को पहनाए।

सुरपति सुत धरि बायस बेषा। सठ चाहत रघुपति बल देखा।
जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महा मंदमति पावन चाहा।

देवराज इन्द्र का मूर्ख पुत्र जयंत कौए का रुप धर कर श्री रघुनाथ जी का बल देखना चाहता है। जैसे महान मंदबुद्धि चींटी समुद्र का थाह पाना चाहती हो।

सीता चरन चोंच हति भागा। मूंढ मंदमति कारन कागा।
चला रुधिर रघुनायक जाना। सींक धनुष सायक संधाना।

वह मूंढ, मंदबुद्धि कारण से (भगवान के बल की परीक्षा करने के लिए) बना हुआ कौआ सीता जी के चरणों में चोंच मारकर भागा। जब रक्त बह चला, तब श्री रघुनाथ जी ने जाना और धनुष पर सींक (सरकंडे) का बाण संधान किया।

अइ प्रकार बाल्मीकि रामायण आ संत तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस में जयंत (कौआ) के कथा मे मतभिन्नता हय।

***

अशोक वाटिका मे सीता संग हनुमान वार्ता भाषा

अशोक वाटिका मे सीता संग वार्ता भाषा बनाम मानुषी भाषा (मैथिली)।
वाल्मीकि रामायण के अनुसार –

अहं ह्यतितनुश्चैव वानरश्च विशेषतः।
वाचं चोदाहरिष्यामि मानुषीमिहं संस्कृताम्।। १७।

एक त हमर शरीर अत्यंत सूक्ष्म हय, दोसर हम वानर छी। विशेषतः वानर होके हम इंहा मानवोचित संस्कृत -भाषा मे बोलबैय।

यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।। १८

परंतु एहन करे मे एकटा बाधा हय, जौं हम द्विज के भांति संस्कृत -वाणी के प्रयोग करबैय त सीता हमरा रावण समझ के भयभीत हो जतैय।

अवश्यमेव वक्तव्यं मानुषं वाक्यमर्थवत्।
मया सान्त्वयितुं शक्या नान्यथेयमनिन्दिता।
। १९।।। एहन दशा मे अवश्ये हमरा वोइ सार्थक भाषा के प्रयोग करे के चाही जे अयोध्या के आसपास के साधारण जनता बोलैय हय, न त इ सती साध्वी सीता के हम उचित आश्वासन न दे सकब।

हनुमान जी संस्कृत आ अयोध्या के लोक भाषा के लेल मानुष भाषा के प्रयोग कैलै हतन। संस्कृत के लेल विद्वान मनुष के भाषा आ साधारण लोग के लेल मानुष (लोक) भाषा। अइमे मिथिला आ मिथिली भाषा के कोई चर्चा न हय।

-गोरखपुर प्रेस से प्रकाशित बाल्मीकि रामायण के आधार पर।
***

रामेश्वरम लिंग स्थापना।

बाल्मीकि रामायण में शिव लिंग स्थापना आ रामचरितमानस मे लिंग स्थापना वर्णन मे मतभिन्नता हय।
बाल्मीकि रामायण में रावण बध के बाद अयोध्या लौटते वक्त श्री राम पुष्पक विमान में सीता को लिंग स्थापना के स्थान के दिखवैत वर्णन कैले हतन –

एतत् कुक्षौ समुद्रस्य स्कन्धावारनिवेशनम्।। १९।
अत्र पूर्व महादेव:प्रसादामकरोद् विभु;।।

यह समुद्र के उदर में ही विशाल टापू है, जहां मैंने सेना का पड़ाव डाला था। यहीं पूर्व काल में भगवान महादेव ने मुझ पर कृपा की थी-सेतु बांधने से पहले मेरे द्वारा स्थापित होकर वे यहां विराजमान हुए थे।

एतत तु दृश्यते तीर्थ सागरस्य महात्मन:।। २०।।
सेतुबंध इति ख्यातं त्रैलोक्येन च पूजितम।।

इस पुण्यस्थल में विशालकाय समुद्र का तीर्थ दिखाई देता है, जो सेतु निर्माण का मूल प्रदेश होने के कारण सेतु बंध नाम से विख्यात तथा तीनों लोकों द्वारा पूजित होगा।

रामचरितमानस के आधार पर समुद्र पर सेतु बंध निर्माण के बाद श्री राम शिव लिंग स्थापना क के सेतु बंध पर चलके समुद्र पार करैत हतन।

देखि सेतु अति सुन्दर रचना। बिहसि कृपानिधि बोले बचना।।

सेतु की अत्यंत सुंदर रचना देखकर कृपा सिन्धु श्री राम जी हंसकर बचन बोले –

परम रम्य उत्तम यह धरनी। महिमा अमित जाइ नहिं बरनी।।
करिहउं इहां संभु थापना। मोरे हृदयं परम कलपना।।

यह (यहांकी) भूमि परम रमणीय और उत्तम है। इसकी असीम महिमा वर्णन नहीं की जा सकती है। मैं यहां शिवजी की स्थापना करूंगा। मेरे हृदय में यह महान संकल्प है।

सुनि कपीस बहु दूत पठाए। मुनिबर सकल बोलि लै आए।।
लिंग थापि बिधिवत् करि पूजा। सिव समान प्रिय मोहि न दूजा।।

श्री राम जी के वचन सुनकर वानरराज सुग्रीव ने बहुत से दूत भेजे, जो सब श्रेष्ठ मुनियों को बुलाकर ले आये। शिवलिंग की स्थापना करके विधिपूर्वक उसका पूजन किया। फिर भगवान बोले- शिवजी के समान मुझको दूसरा कोई प्रिय नहीं है।

जे रामेस्वर दरसनु करिहहिं। ये तनु तजि मम लोक सिधरिहहिं।
जो गंगाजल आनि चढाइहिं। हो सआजउज्य मुक्ति नर पाइहिं।।

जो मनुष्य (मेरे स्थापित किये हुए इन) रामेश्वर जी का दर्शन करेंगे, वे शरीर छोड़कर मेरे लोक को जायेंगे। और जो गंगाजल लाकर इन पर चढावेगा, वह मनुष्य सायुज्य मुक्ति पावेगा (अर्थात मेरे साथ एक हो जायेगा)।
लाल दास कृत मिथिला रामायण मे सेतु बंध आ शिव लिंग स्थापना के विस्तार से वर्णन हय। कथा अनुसार राजा सगर सागर खने के समय ज्योति लिंग के खन के गिरा देले रहथिन। कहल गेल कि भविष्य मे हिनकर वंशज इंहा शिव लिंग स्थापना करथिन।
कयल प्रतिष्ठा विधिसौं राम। रामेश्वर लिंगक भेल नाम।।
.....
जे गंगाजल देत चढाय। आवागमन छूटत समुदाय।।
लालदास बाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस आ अन्य ग्रंथ के आधार पर लिखने छतन।
अन्य ग्रंथ में लंका विजय के बाद अयोध्या लौटने से पहिले शिव स्थापना के चर्चा कैल गेल हय।
***

रावण बध के भेदिया

रावण बध के भेद बताबे वाला मे रामायण आ रामचरित मानस मे मतभिन्नता हय।

बाल्मीकि रामायण के अनुसार इन्द्र के सारथि मातलि हैय।

अथ संस्मारयामास मालति राघवं तदा।
अजानन्वि किं वीर त्वमेनमनुवर्तसे।। १।

मातलि ने श्री रघुनाथ जी को कुछ याद दिलाते हुए कहा -वीरवर! आप अनजान की तरह क्यों इस राक्षस का अनुसरण कर रहे हैं? (, यह जो अस्त्र चलाता है, उसके निवारण करने वाले अस्त्र का प्रयोग करके रह जाते हैं),।

विसृजास्मै वधाय त्वमस्त्रं पैतामहं प्रभो।
विनाशकाल:कथितो य: सुरै:सोद्धं वर्त्तते।। २।।

प्रभो! आप इसके वध के लिए ब्रह्मा जी के अस्त्र का प्रयोग कीजिए। देवताओं ने इसके विनाश का जो, समय बताया है, वह अब आ पहुंचा है।

स विसृष्टो महावेग: शरीरान्तकर:पर:।
बिभेद हृदयं तस्य रावणस्य दुरात्मनं।। १८।।

शरीर का अंत कर देने वाले उस महान वेगशाली श्रेष्ठ वाण ने छूटते ही दुरात्मा रावण के हृदय को विदिर्ण कर डाला।

रुधिराक्त: स वेगेन शरीरान्तकर:शर:।
रावणस्य हरन् प्राणान् विवेश धरणीतलम्।। १९।।

शरीर का अंत करके रावण के प्राण हर लेने वाला वह वाण उसके खून से रंग कर वेगपूर्वक धरती में समा गया।

स शरो रावणं हत्या रुधिरार्द्रकृतच्छवि;।
कृतकर्मा निभृतवत् स तूणिं पुनराविशत्।। २०।।

इस प्रकार रावण का बध करके खून से रंगा हुआ वह सौभाग्यशाली बाण अपना काम पूरा करने के पुन:विनित सेवक की भांति श्री रामचन्द्र जी के तरकस में लौट आया।

रामचरित मानस के अनुसार रावण के भाई विभीषण भेद बताबे वाला हय।

नाभिकुंड पियुष बस याकें। नाथ जिअत रावनु बल ताकें।।
सुनत विभिषण बचन कृपाला। हरषि गहे कर बान कराला।।

इसके नाभि कुंड में अमृत का निवास है। हे नाथ! रावण उसी के बल पर जीता है। विभिषण के वचन सुनते ही कृपालु श्री रघुनाथ जी ने हर्षित होकर हाथ में विकराल बाण लिये।

सायक एक नाभि सर सोषा। अपर लगे भुज सिर करि रोषा।
लै सिर बाहु चले नाराचा। सिर भुज हीन रूंड महि नाचा।।

एक बाण ने नाभि के अमृत कुंड को सोख लिया। दूसरे तीस बाण कोप करके उसके सिरो और भुजाओं में लगे। बाण सिरो और भुजाओं को लेकर चले। सिरों और भुजाओं से रहित रूंड (धड़) पृथ्वी पर नाचने लगा।

अइ प्रकार से रावण बध के भेद बताबे वाला मे रामायण आ रामचरित मानस मे मतभिन्नता हय।

***

सीता एकटा वीर नारी!

बाल्मीकि रामायण आ रामचरित मानस के आधार पर त सीता के एकटा वीर नारी नै मानल जा सकै हय। सीता के वीरता के कोई वृतांत अइ दुनू महाकाव्य मे न हय। सीता के बायां हाथ से धनुष के उठा के दहिना हाथ से भूमि के निपे के भी चर्चा न हय। समाज में एगो मिथक के रूप मे अवश्य हय वा कोनो दोसर ग्रंथ में होय। सीता के लड़े के कोई दृष्टांत न मिलैय हय। जेना दूर्गा, काली आ सौतेली सास कैकेई के मिलैय हय। वन गमन के समय राम सीता के जंगल में संभावित घटना से अवगत करैत कहैत छथि कि हिंसक जानवर आ राक्षस रहै हैय। इंहा तक कि सीता के स्वभावत: डरपोक कहलन।

ब्याल कराल बिहग बन घोरा। निसिचर निकर नारि नर चोरा।
डरपहिं धीर गहन सुधि आएं। मृगलोचनि तुम्ह भीरू सुभाएं।।
– रामचरित मानस

अर्थात वन में भीषण सर्प, भयानक पक्षी और स्त्री पुरुष को चुराने वाले राक्षसों के झुंड के झुंड रहते हैं। वन की (भंयकरता) याद आने मात्र से धीर पुरुष भी डर जाते हैं। फिर हे मृगलोचनि। तुम तो स्वभाव से डरपोक हो।

सीते यथा त्वां वक्ष्यामि तथा कार्य त्वयाबले।
वने दोषा हि बहवो वसतस्तान् निबोध मे।। ४।।
-बाल्मिकी रामायण
अर्थात सीते! मैं तुमसे जैसा कहूं वैसा ही करना तुम्हारा कर्तव्य है। तुम अबला हो, वन में निवास करने वाले मनुष्य को बहुत से दोष प्राप्त होते हैं, उन्हें बता रहा हूं, मुझसे सुनो।
तुलसी के राम सीता के डरपोक आ बाल्मीकि के राम सीता के अबला कहैत छथि।

जेना राम आ लक्ष्मण कंधा पर धनुष टंगलै हय वोना सीता अपना कंधा पर धनुष न टंगलै हय। जौं वीर रहिता त धनुष अपना कंधा पर टंगिता। राम जब हरिण मारे ला निकलला त सीता के रखवारी के जिम्मा लक्ष्मण जी के सौपला। रावण भी जवर्दस्ती अपना कंधा पर उठा के पुष्पक विमान पर बैठा के लंका लेगन। खाली अपना वीर पति राम के प्रशंसा करैत रहला। कि हुनका वाण से तू न बचबा। सीता के त्याग आ धैर्य के वीरता कहल जाय हय। त्याग आ धैर्य केवल के वीरता न कहल जा सकै हय। जौ कि दुश्मन के पराजित न कर सकै। सीता युद्ध न कैलन बल्कि युद्ध के कारण बनलन। त कोन आधार पर सीता के वीर कहल जा सकै हय।
लक्ष्मण करे रखवारी वीर सीता!

केना लड़े रावण अवीर सीता।
.....
.....
आइयो दागल जाइअ सीता।
आइयो बनैइ अ अवीर सीता।
-आचार्य रामानंद मंडल कृत कविता संग्रह भासा के न बाटियों से उद्धृत।

निष्कर्षत: सीता के कोमल, पतिपरायण, त्याग आ धैर्य के मूर्ति त मानल जा सकै हय परंच वीर न मानल जा सकै हय।

***

मित्रता:समाने शोभते प्रीति।

आइ अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस हय। मित्रता पर विमर्श।
सभ से पहिले रामायणकालीन मित्रता पर।
प्रथम कथा के अनुसार मित्र केवट। ओहो दास भाव मे रहैत हतन आ मित्र राम के गोर धो के परिवार सहित पिवैत हतन। कोनो मित्रता के समान भाव न अपना के हमेशा निच मानैत हतन। मित्र राम के प्रभू मानैत रहलन। राम क्षत्रिय त केवट शूद्र रहलन।
मित्रता मे समान भाव के अभाव दिखैत हय।
दोसर कथा। प्रसंग हय राम आ सुग्रीव के मित्रता पर। अइ मित्रता मे सुग्रीव के बड़ भाई बालि मारल जाइ हय। मित्रता के बुनियाद दुश्मन बड भाई बालि के हत्या। जे मित्र राम करैत हतन। बाद मे राम के पत्नी के खोज मे मित्र सुग्रीव सहायता करैत हतन। मित्र सुग्रीव मित्र राम के प्रभु से संबोधित करैत हतन। आ दास भाव मे रहैत हतन। बालि के मृत्यु के बाद हुनकर पत्नी अर्थात भौजी तारा से बिआह करैत हतन आ किष्किन्धाराज के राजा बनैत हतन। मित्रता मे समान भाव के अभाव परिलक्षित होइ हय।

महाभारतकालीन प्रथम कथा। सुदामा आ कृष्ण। मित्र ब्राह्मण सुदामा के मित्र यादव कृष्ण सिंहासन पर बैठावत हतन आ गोर धोएत हतन। कृष्ण के रानी सत्यभामा आ रूक्मिणी बेना हौंकैत हतन।

दोसर कथा मित्रता के एकटा मिशाल हय अंगराज कर्ण आ सुयोद्धन के मित्रता। शुद्र कर्ण के वीरता से प्रभावित होके अंगराज्य के राजा बना देल जाइत हय। आ मित्रता के बलिबेदी पर कर्ण अप्पन प्राण न्यौछावर कर देले हतन। मित्रता मे समान भाव दिखाई पड़ैय हय।
जौं वर्ण-व्यवस्था के अनुसार विमर्श कैल जाय त उच्च वर्ण के निम्न वर्ण गोर धोएत हतन। चाहे वो क्षत्रिय राम आ शुद्र केवट होय वा ब्राह्मण सुदामा आ यादव (शूद्र) कृष्ण। भगवान कृष्ण के सोल्हकन मानल जाइत हय। महाभारत के कैगो प्रसंग में हुनकर जाति के लेके मजाक उड़ायल गेल हय। कर्ण (अपग्रेडेड क्षत्रिय) आ सुयोद्धन दूनू क्षत्रिय। गोर धोय के कोनो प्रसंग न हय।
जौं भगवान आ भक्त के रूप मे विमर्श कैल जाय त भगवान राम आ भक्त केवट। भगवान राम बड़ आ भक्त केवट नीच दिखाई पड़ैय हय। भगवान कृष्ण आ भक्त सुदामा के रुप मे भगवान से बड़ा भक्त दिखाई पड़ैय हय। मित्र सुदामा मित्र कृष्ण के नजदीक नीच न दिखाई पडैय हय। कर्ण आ सुयोद्धन के बीच भगवान आ भक्त के कोई संबंध न हय। कोनो उच्च -नीच न हय। मित्रता के समान भाव दिखाई पड़ैय हय।
निष्कर्षत: राम आ केवट, कृष्ण आ सुदामा। भगवान आ मानव के बीच मित्रता हय। परंतु कर्ण आ सुयोद्धन के बीच मानव -मानव के मित्रता हय।

मित्रता मे समान भाव आवश्यक तत्व हय।
समाने शोभते प्रीति।
***

आदिपुरुष आ बिरोध

आइ कालि फिल्म आदिपुरुष के खूब चर्चा हय। बहुत लोग अइ फिल्म के रामानंद सागर कृत धारावाहिक रामायण, संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस आ महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण से तुलना करैत विरोध करैत हतन। हालांकि बहुत रचनाकार राम कथा रचलैन हतन। बहुत ब्राह्मण ग्रन्थ, पुराण आ बौद्ध साहित्य मेयो राम कथा प्रतिपादित हय। जे बहुत भिन्न चरित के हय। सीता के रूप वर्णन आ तथ्यात्मक मेयो बाल्मिकी रामायण आ रामचरितमानस में आकाश पाताल के अंतर हय। यथा पुत्र प्राप्ति हेतु रानी सभ मे आनुपातिक खीर वितरण, स्वयंबर आ रावण बध में विभीषण के भूमिका। रामचरितमानस के अनुसार स्वयंबर भेल। परंच रामायण के अनुसार रामचरितमानस लेखा स्वयंबर न भेल। रामचरितमानस के अनुसार रावण बध में विभीषण त बाल्मिकी रामायण के अनुसार इन्द्र के सारथि मातलि के रावण बध में भूमिका हय। विरोध इहो कि फिल्म मे हनुमान जी सीता के बहिन कहैत हतन जौं कि रामायण में हनुमान जी सीता के माता सीता संबोधित करैत रहलन हय। परंतु अमीश कृत पोथी सीता मे हनुमान जी सीता के बहन आ सीता हनुमान जी के भैया कह के संबोधित करैत हतन। असल मे ज्यादा लोग संत तुलसीदास के रामचरितमानस से प्रभावित हतन। बहुत पहिले से लोग रामलीला दैखैत रहलन हय। संत तुलसीदास रामचरितमानस के प्रचार प्रसार के लेल रामलीला चलैलन रहलन। रामलीला में व्यास जी हारमोनियम पर रामचरितमानस गवैत रहलन। वैहे परंपरा नेपथ्य से रामानंद सागर अपन धारावाहिक रामायण में कैलन। लोग वन माइंडेड भे गेल। लोग के विभिन्न रामकथा पढैय के आवश्यकता हय। तब विरोध अपने आप कम हो जायत।

***

हिंदू धर्म आ हिंदू विरोध।

वर्तमान भारत के चारटा नाम हय -आर्यावर्त, हिन्दुस्तान, इंडिया आ भारत। तहिना वर्तमान हिंदू धर्म के चार टा नाम हय -आर्य धर्म, ब्राह्मण धर्म, सनातन धर्म आ हिंदू धर्म। समय यानी कि काल परिवर्तनशील हय। त जेना भारत के नाम बदलैत रहलैय तहिना धर्मो के नाम बदलैत रहलैय। आइ कालि सबसे ज्यादा चर्चा -परिचर्चा हिंदू आ हिंदू धर्म पर हो रहल हय। हिंदू धर्म के विरोध ज्यादा हिंदूये क रहल हय। खास के जे हिंदू धर्म मे शोषित आ दमित वर्ग हय। हिंदू धर्म में जे वर्णव्यवस्था वा वर्णाश्रम धर्म हय वोइसे लोग नाराज़ हय। आइ कालि संत तुलसीदास रचित रामचरितमानस पर ज्यादा वाद -विवाद हो रहल हय। रामचरितमानस में कुछ जाति के अधम आ नीच बतायल गेल हय। त उ वर्ग ज्यादा आक्रामक हय। वो लाजिमीयो हय। जैइ वर्ग के गुणगान वा महिमा मंडित कैल गेल हय वो वोकरा पक्ष मे हय। वोकर कहना हय कि रामचरितमानस में सभ जाति के समभाव सं देखल गेल हय। जेना शबरी के जूठा बैर खाय के बात त केवट के दोस्ती। त इहो बात अच्छा न लगैय हय। शबरी त भक्त हय। दासी हय पामर हय। नीच जाति के हय जे शबरी स्वयं स्वीकार करैय हय। भला अब अइ युग मे शबरी के जाति के कोई काहे मानत। केवट मल्लाह अपन दोस्त राम के गोर धो के पीयैत रहे। कि आइ के युग मे कोई दोस्त के गोर धो के पीयत। वोहु मे दोस्त में दोस्ताना होइ हय। बराबरी माने कि समानता के भाव। परंतु केवट आ राम के भाव दास आ प्रभु मालिक के भाव हय। त केवट वंशी वा कोई काहे मानत। इ सभ विरोध आइ न अतीत मेयो महात्मा बुद्ध, संत कबीर, संत रैदास, महात्मा फुले, संत पेरियार आ बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर कैले रहलन।

संत कबीर आ संत रैदास त राम के मानैत रहल। परंतु संत तुलसीदास के अयोध्यावासी राम के न वरन् घटघट वासी राम के मानैत रहलन। माने कि संत कबीर आ संत रैदास निर्गुण राम के त संत तुलसीदास सगुण राम के। निर्गुण राम वर्णरहित त सगुण राम वर्णाश्रित।

वर्तमान समय मे जे असल विवाद हय वो जातीय सामाजिक विषमता के लेके है न कि धार्मिकता के लेके। भारत के संविधान जातीय विषमता पर रोक लगबैय त कोनो धर्म के माने के स्वतंत्रता देइ। भारत के लोग के भारत के संविधान मे अपन विवाद के समाधान मिलत।

***

महाकुंभ।

सनातन धर्म मे छह बर्ष पर अर्धकुंभ आ बारह बर्ष पर कुंभ के विधान हय। अर्धकुंभ छह बर्ष पर प्रयागराज आ हरिद्वार में लगय हय। उत्तर प्रदेश सरकार कुंभ के नाम महाकुंभ क देलन हतन। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज मे आइ काल महाकुंभ लागल हय।

पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन के उपरांत अमृत कलश प्राप्त भेल रहय। अमृत पान के लेके देव आ दानव मे पहिले हम त पहिले हम पान करब के लेल संघर्ष भे गेल। छीना झपटी में अमृत कलश से अमृत के बूंद चार स्थान पर गिर पड़ल। चार स्थान प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन आ नासिक हय। अमृत वितरण के लेल देव विष्णु मोहिनी रूप धारण क के अमृत वितरण कैलन।

कुंभ स्नान मे नागा साधु के प्राथमिकता देल जाय हय। २०२५मे कुल छह शाही स्नान हय। १३जनवरी २०२५के प्रथम शाही स्नान संपन्न भे गेल हय। अंतिम शाही स्नान २६फरवरी २०२५के हय।

वर्तमान महाकुंभ से आयल समाचार में सोशल मीडिया पर कुछ समाचार काफी बायरल हय। जैमे एगो माला बेचेबाली बंजारण लरकी मोनालिसा नाम से चर्चित हय। जेकर सुंदरता खास क के नीलगर आंख शोहरत बटोरले हय। वोकर सुंदरता के कारण वोकर ब्यापार सेहो प्रभावित भेल। वोकर कहना हय कि लोग हमर भिडियो बनबैय परंच माला न खरीदय हय। आब हमर भिडियो वोहे बनायत जे हमरा से कम से कम एगो माला खरीदत। आइ मोनालिसा महाकुंभ के मोहिनी बनल हय।

दोसर आइआइटियन बाबा खुब बायरल हय। वो अपन बुद्धिमत्ता से लोग बड प्रभावित क रहल हय। परंच कुछ उटपटांग बयान से हुनका संबंधित अखाड़ा से निष्कासित क देल गेल त दोसर अखाड़ा अपना लेलक। अपना पिता के बारे मे व्यक्त विचार सनातन परंपरा के विपरीत हय।

तेसर नकली साधु के नाम पर लोग साधु से बदतमीजी कैल देखल जा रहल हय।

चौथा अघोरी नागा लोग के काफी प्रभावित क रहल हय।

पंचम एगो माडल लरकी नकली जटा के कारण विवादित रहल। वोकरा संबंधित अखाड़ा से निष्कासित कैल गेल।

महाकुंभ में प्राकृतिक आपदा अगलगी चर्चा में रहल। दू गो सेक्टर में आग लग गेल। सैकड़ों टेंट काटेज आ कुटिया जल के राख भे गेल। आपदा प्रबंधन के तत्परता से कोनो जान के हताहत न भेल। एकटा महिला कहैत पायल गेल कि जे हम वस्त्र पहिनले छी वोकरा छोड़ के कुछियो न बांचल। हमर भगवान सेहो जर के राख भे गेल।

एकटा दिन कुंभ स्नान के पूर्व रात के स्नान के होड़ के मचल भगदड़ में सैकड़ों श्रद्धालु काल कलवित भे गेल।

***

सलहेस:किंग आफ मांउटेन बनाम किंग आफ मिथिला

मिथिला के राजा सलहेस पर एगो मैथिली फ़िल्म बन रहल हय। जेकर नाम सलहेस :किंग आफ मांउटेन राखल गेल हय। जौंकि फिल्म के नाम सलहेस; किंग आफ मिथिला होय के चाही। अइ संदर्भ मे राजा सलहेस के बारे मे जानकारी आवश्यक हय।

मिथिला मे लोकदेवता के रूप मे पूज्य राजा सलहेस के जन्म पांचवी वा छठी शताब्दी मे मिथिला राज के मोरंग क्षेत्र अब नेपाल मे रहे। हिनकर माता के नाम शुभ गौरी आ पिता दुसाध वंशी सोमदेव रहे। वो दो भाई रहलन। हिनका एकटा बहिन बनस्पति रहे। हिनकर बिआह विराटनगर के राजा हलेश्वर के बेटी सत्यवती सं भेल रहे। बाद मे तरेगनागढ के राजा भंडारी के चारो बेटी सं प्रेम विआह कैलन। भंडारी माली जाति के रहे। अइमे कुसमा अनिंद्य सुन्दरी आ बुद्धिमान रहे। राजा सलहेस मिथिला राज के राजधानी मेहसौथा (अब नेपाल) मे बनैलन। राजा सलहेस के मूल नाम जयवर्धन रहे। परंतु मिथिला के तिब्बती के आक्रमण सं मिथिला के रक्षा कैलन। अइ क्रम मे हिनकर ज्यादा समय हिमालय क्षेत्र मे बितल। तिब्बत सं रक्षा क्रम मे हिमालय जेका तिब्बती आक्रमण के रोके के लेल लोग हुनका पर्वत राज सं पुकारे लागल अर्थात शैलैश कहे लागल। इतिहासकार ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म के अनुसार सलहेस अर्थात शैलेश का लोकभासा मे परिवर्तित रुप हय। जेकर अर्थ पर्वत के राजा होय हय।

निस्कर्सत: किंग आफ मांउटेन हिनकर लोकपदवी हय। जौंकि सलहेस किंग आफ मिथिला रहथिन। तैला फिल्म के नाम सलहेस: किंग आफ मिथिला होय के चाही। अंततः राजा सलहेस शोषण के विरुद्ध शोषक सं आजीवन लड़लन। परंतु आइ फिल्म के बहाने शोसित भे रहल हय, कहल जायत।

***

कलाकृति बनाम अश्लीलता।

कला साहित्य मे संजु दास के कलाकृति आइ काल विवाद मे हय। कुछ लोग के दृस्टि मे कला मे अश्लीलता हय। असल मे अश्लीलता आ श्लीलता दृस्टिये होइ छैय।
संत तुलसीदास के अनुसार जाके रहि भावना जैसी हरि मूरत देखि तिन तैसी।
पौराणिक साहित्य के देखियौ त अश्लीलता से भरल हय। परंतु धार्मिक दृस्टि से वो अश्लील दृस्टिगोचर न होई हय। जेना भगवान शंकर के लिंगाकार रुप जेकर पूजा कैल जाइ हय। नागा साधु आ दिगम्बर जैन मुनि जेइ के दर्शन में अश्लीलता दृष्टिगोचर न होइ छैय। मां काली के नग्न मूर्ति में अश्लीलता दृस्टिगोचर न होइ हय।
सति अनुसूया के कथा एगो चर्चित कथा हय। अनुसूया के सतीत्व परीक्षा के लेल ब्रह्मा विष्णु महेश कहलथिन कि अंहा नग्न होके हमरा सभ के भोजन करायब त हम सभ अंहा इंहा भोजन करब। सति अनुसूया हुनका सभ के तप बल के आधार पर बच्चा बना दलथिन आ नग्न होके गोद मे रख के भोजन करैलथिन। कारण कि बच्चा निर्दोस होइ छैय। वो श्लीलता आ अश्लीलता से अंजान होइ हय।
बौद्ध कालीन मूर्ति अजंता -ऐलोरा आ भगवान जगन्नाथ आ दच्छिन भारत के मंदिर पर उत्कीर्ण मैथुन मूर्ति में अश्लीलता नजर न अबऐय हय। भगवान रजनीश संभोग से समाधि में एगो घटना के उल्लेख करैय छथिन। जौ एक युवा प्रेमी -प्रेमिका के प्रेमिका के माता -पिता मैथुन मूर्ति के देखैयत खजुराहो में टकरा गेलन। घटना इ बताबैत हय कि सापेक्ष रूप में अश्लील हय परंतु निरपेक्ष रूप में अश्लील न हय।
संजु दास के कला सापेक्ष रूप में लोग के अश्लील भले लगैय परंतु निरपेक्ष रूप से अश्लील न हय। कलादृस्टि निरपेक्ष होय के चाही।
***

राष्ट्रवाद बनाम यूके नव प्रधानमंत्री ऋषि सुनक।

भारतवंशी ऋषि सुनक के दादा दादी पंजाब के गुजरांवाला आ दिल्ली से काज के लेल अफ्रीकी देश केन्या आ तंजानिया गेलन। परंतु साठ के दशक मे अफ्रीकी राष्ट्रवाद से परेशान होके परिवार सहित ब्रिटेन आ गेलन आ साउथैम्पटन मे बस गेलन। शुनक छात्रवृत्ति से आक्सफोर्ड आ स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी से उच्च शिक्षा प्राप्त कैलन।

भारतीय इंफौसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति के बेटी अक्षता मूर्ति से विवाह कैलन। अक्षता मूर्ति इंग्लैंड के एकटा अतिसंपन्न महिला हय। ऋषि सुनक प्रतिष्ठित व्यवसाई हय। पहिले इंग्लैंड के वित्त मंत्री बनलन। वर्तमान में प्रधानमंत्री। हिनका पर इंग्लैंड के वित्त व्यवस्था सूधारे के गुरूतर भार हय जे निवर्तमान प्रधानमंत्री लिज ट्रस न निभा पैलन।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री ऋषि सुनक भारत मे भारतवंशी, हिंदू, शिखा, कलावा आ रामनामी चादर के लेल चर्चित हय। वर्तमान में भारत सांस्कृतिक (हिंदू) राष्ट्रवाद के कारण अतिचर्चा मे हय। भारत मे एन आर सी एक्ट के चर्चा हए। भारतीय नागरिकता के चर्चा हय। बेरोज़गारी के चर्चा हय। अइ सभ से भारतीय कुछ वर्ग (अल्पसंख्यक) परेशान हय।

भारत मे जे परेशानी के कारण हय। लगभग वोहे कारण से ऋषि सुनक के पूर्वज परेशान भेलन आ इंग्लैंड में जा बसलन। इंग्लैंड में न त राष्ट्रवाद आ न अल्पसंख्यकता आ धर्म प्रधानमंत्री बने में बाधक बनल। अपन योग्यता आ कर्मठता के आधार पर यूके के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक बनलन। भारत के ब्यालिस बर्षीय ऋषि सुनक आ उदारवादी इंग्लैंड से सबक लेबे के आवश्यकता हय।

***

अगस्त क्रांति शहीद रामफल मंडल: जीवन वृत।

बिहार में अगस्त क्रांति अंतर्गत फांसी पर लटके वाला सात शहीद में एकटा आ मिथिला अन्तर्गत जिला सीतामढ़ी के पहिला शहीद रामफल मंडल रहथिन।

महान् क्रान्तिकारी अमर शहीद रामफल मंडल 06 अगस्त 1924 के सीतामढ़ी जिला के बाजपट्टी थाना के मधुरापुर गांव में धनुवंशी धानुक कुल मे पिता गोखुल मंडल आ माता गरबी देवी के पुत्र रत्न के रूप में पैदा होयल रहे। रामफल मंडल चारि भाई में तेसर रहथिन। पहिला रामशरण मंडल, दोसर मंहथ मंडल आ चौथम मिश्री मंडल रहे। सभ भाई कुश्ती खेले आ किसानी करे। माल-जाल पोस के आ वोकर खरीद-बेच करके अपन आमदनी जुटावत रहे। हुनकर बाबूजी गांव में एकटा किराना के दोकान चलबैत रहथिन। वो14 बरख के उमर में मिडिल पास कर गेल रहथिन। पहलवानी के चलते इनकर देह कसल रहे। 5’5”के गोर देह, चमकैत आंखि, भव्य लिलार आ औंठिया केश सहजैय मन मोहे वाला रहे। चेहरा हंसमुख, सौम्य, मृदुभाषी, साहसी आ रोबदार रहे। 17बरख के उमर में सीतामढ़ी जिला के रुन्नीसैदपुर थाना भीतैर गंगवारा निवासी अमीन मंडल के बेटी जगपतिया देवी से विआह भेल रहे। वो धार्मिक आ दयालु महिला रहथिन। विआह के एक बरिस बाद 15सितम्बर 1942के दिन हुनका एकटा पुत्र रत्न भेल रहे जौं रामफल मंडल जेहल में रहथि।

अखिल भारतीय कांग्रेस अधिवेशन सर्वसम्मति सं गांधी जी के अगुआई आ अब्दुल कलाम आजाद के सभापतित्व में 08अगस्त1942 के एकटा प्रस्ताव पास कैलन रहे जे समूचा देश में भारत छोड़ो आन्दोलन वा अगस्त क्रांति के नाम से जानल जाय हय। जे इतिहास के पन्ना में स्वार्णांकित हय।

अगस्त क्रांति के ज्वाला के लपट पूरा हिंदुस्तान के अपना आगोश में ले ले रहैय। मधुरापुर के युवक विन्देश्वरी प्रसाद गांव में एकटा सभा कैलकआ आजादी के लड़ाई लड़ें लेल रामफल मंडल के नेतृत्व में एकटा युवा दल के स्थापना कैलन। हरिहर प्रसाद, कपिल देव सिंह, शत्रुघ्न सिंह, मुनेश्वर सिंह, श्री कृष्ण प्रसाद, रामप्रीत साह, फूलवारी मंडल, सहजानंद शर्मा, भुवनेश्वर राय आ जनार्दन झा आदि अई युवा दल के सदस्य रहथिन। तै समय के पुपरी थाना के दरोगा अर्जून सिंह के अत्याचार आ अनाचार से थाना के जनता तबाह रहे। अइसे जनता बौखला गेल रहे।

19अगस्त1942के दिन अंग्रेजी सिपाही खादी भंडार, बाबा नरसिंह दास, रामनंदन सिंह आ मोहन सिंह के घर जला देलक। पता चलल कि24अगस्त 1942के दिन उत्पात मचावे आतातायी दरोगा अर्जून सिंह बाजपट्टी आबे बाला हैय। आंदोलनकारी एगो गुप्त मिंटीग बनगांव में कैलन आ वीर रामफल के नेतृत्व में कथित देश के गद्दार दरोगा अर्जून सिंह के देश के आजादी के राह से हटावे के शपथ ले लेलन। बैठक में बाबा नरसिंह दास, सकलदेव कुंवर, रामबुझावन ठाकुर, हरिहर प्रसाद, विन्देश्वरी प्रसाद आ वीर रामफल मंडल आदि सम्मिलित रहलन।

24अगस्त 1942 के दिन आतातायी दरोगा अर्जून सिंह कोहराम मचाबे बाजपट्टी आबे बाला रहे। परंच युवा दल के मंशा वो गुप्त रुप से जान गेल। त अर्जून सिंह कोनो बहाना बनाके अपने न आयल आ क्रूर आतातायी अंग्रेजी हुकूमत के एसडीओ हरदीप नारायण सिंह, पुलिस इंस्पेक्टर राममूर्ति झा पुलिस श्याम लाल सिंह, चपरासी दरवेशी सिंह आ ड्राइवर आदित्य राम के युवा दल के आंदोलन के कुचले के लेल भेज देलक।

बाजपट्टी चौक पर रामफल मंडल के नेतृत्व में आंदोलनी लाठी, डंडा, भाला, बरछी, तलवार, फरसा से लैस चौक के जाम कैलै रहे। तही बीच में आतातायी एसडीओ हरदीप नारायण सिंह अपन टीम के साथ पहुंचल। आंदोलनकारी और उत्तेजित हो गेल। यही बीच में अंग्रेजी सरकार के इंस्पेक्टर राममूर्ति झा आंदोलन के कुचले के लेव अपन पिस्तौल से हवाई फायरिंग करे लागल। आंदोलनकारी अइसे भड़क गेल। अइ बीच में रामफल मंडल इंस्पेक्टर राममूर्ति के हाथ से झपट्टा मार के पिस्तौल छीन ले लेलक। आंदोलनकारी इंस्पेक्टर से जुझे लागल।
तब वीर रामफल मंडल सभसे पहिला वार फरसा से एसडीओ हरदीप नारायण सिंह के गर्दन पर कैलन। छपाक के आवज गर्दन कट के लटक गेल आ खून के फव्वारा फूट पड़ल। लहू से रामफल मंडल नहा गेल। लगैय जेना अंग्रेजी हुकूमत से खून के होली खेललन हैय। आंदोलनकारी डंडा भाला फरसा से इंस्पेक्टर राममूर्ति झा, हवलदार श्यामलाल सिंह आ चपरासी दरवेशी सिंह के भी मार देलन। भीड़ के फायदा उठा के चपरासी आदित्य राम भाग गेल।

वीर रामफल मंडल एसडीओ हरदीप नारायण सिंह के लाश आ आंदोलनकारी सब इंस्पेक्टर राममूर्ति झा, हवलदार श्यामलाल सिंह आ चपरासी दरबेशी सिंह के लाश के अपना कंधा पर उठा के बगल के अधवारा नदी में विसर्जित कै देलक। आंदोलनकारी भारत माता के जय बोलैत रहे। अइ तरह से देश के आजादी के आंदोलन के बाधक देश के आंतरिक दुश्मन के अंत भे गेल।

भाग के चपरासी आदित्य राम सीतामढ़ी मजिस्ट्रेट कोर्ट में पहूंचल आ रामफल मंडल, बाबा नरसिंह दास एवं तीन चार सौ अज्ञात पर हत्या केश नं-473/42 का मुकदमा कर देलक। अइ हत्याकांड के बाद अंग्रेज कलेक्टर आ पदाधिकारी सिपाही सभ के साथ बाजपट्टी में अत्याचार आ अनाचार करे लागल। रामफल मंडल आ आंदोलनकारी के घर में आग लगा के घर के राख कै देवकी। बहु बेटी के इज्जत से खेले लागल। बुझावन ठाकुर संगे बहुत लोग के गिरफ्तार कर लेलक। बनगांव जानकी सिंह के दरवाजे पर गोली मार देलक। प्रदीप सिंह के काला पानी भेज देलक। बहुत से लोग नेपाल भाग गेल।

रामफल मंडल अपना परिवार के सुरक्षा के लेल अपना बड़का भाई के ससुरार लछमिनिया, नेपाल में रखे चल गेलन। ससुर नंदु अधिकारी संरक्षण देलन। वीर रामफल मंडल कहलन कि हमरा पत्नी के सुरक्षित राखू। हम त भारत माता के आजादी के लेल अपन देश भारत जायब। नंदु अधिकारी बहुत रोकलन। परंच आजादी के दिवाना के छिपना रूकना मंजूर न रहे। 10 दिन बाद मधुरापुर आ गेलन। डरल लोग सभ कहे लागल-भाग जा रामफल। एसडीओ, इंस्पेक्टर, पुलिस आ चपरासी के मारे मे तोरे हाथ हौव। तू पकड़ा जैयबा। भाग जा रामफल। भाग जा।
वीर रामफल कहलन-हम कोनो चोरी डकैती न कैली हय। हम देश के लेल, लोग के भलाई के लेल, अमन आ सुख चैन के लेल अंग्रेजी मुलाजिम के मार ली हय। जेल आ फांसी के लेल हम तैयार छी। हमरा न चिंता हैय, न डर हैय, न भय हय।

बाजपट्टी हत्याकांड के बाद25 अगस्त 1942के दिन आंदोलनकारी आ अंग्रेजी पुलिस के झड़प में चरौत में चरौत के भदई कबारी शहीद हो गेलन। पुपरी में सहदेव साह, महावीर गोप, बहेरा के रामबुझावन ठाकुर शहीद भे गेलन। हरिहरपुर के रामलगन सिंह, राम स्वार्थ सिद्ध, रामचरण मंडल, झगरू मंडल, रामस्वरूप सिंह लोगन नेपाल में भूमिगत हो गेलन।

29अगस्त1942के दिन रीगा रेवासी में मथुरा मंडल शहीद हो गेलन। राजाराम मंडल, लीला मंडल, रक्टू मंडल, सूरज कुर्मी, बंगाली मंडल, यमुना मैहता, नंदलाल मेहता, बुनीलाल राय, सहदेव राय, सुंदर मेहता, नेबी मंडल संगे दर्जनों आंदोलनकारी घायल हो गेलन।
रीगा स्टेशन पर रेल पटरी उखाड़ैत बेर में पुलिस गोली से मौजें झा आ सुखराम महरा शहीद हो गेलन। नूनू मियां घायल आ बाद में शहीद भे गेलन।
30अगस्त1942के दिन तरियानी छपरा (शिवहर) में पुलिस आ आंदोलनकारी के लड़ाई में बलदेव सूंड़ी, सुखन लोहार, वंशी ततमा, परसत साह, सुंदर महरा, छठू कानू, जयमंगल सिंह, भूपन सिंह आ नौजाद सिंह शहीद भे गेलन। बिकन कुर्मी, बुधन कहार, बुझावन चमार, मुक्ति सिंह, गुलजार सिंह, रामेश्वर सिंह, बंगाली नुनिया, मौजे सूढ़ी, चुल्हाई ठाकुर, रामलोचन सिंह, रामदेव सिंह, रामपुकार ततमा, राजेंद्र धानुक, गुगुल धोबी, पुरन सिंह आ दर्जन आंदोलनकारी घायल हो गेलन।

06सितम्बर 1942के दिन वीर रामफल मंडल गिरफ्तार कैल गेलन। छह महीना डुमरा सीतामढ़ी जेल में रहला के बाद हुनका सेन्ट्रल जेल भागलपुर भेज देलक। ग्रामीण जनक मंडल, सहोदर भाई महंथ मंडल खुशी से जेल में रामफल मंडल के बतैलक रामफल तोरा एकटा पूत्र रत्न प्राप्त भे लो हय। हंसैत वीर रामफल मंडल कहलक-आबि हमरा फांसी मिल जायत। अब हम घर पर न लौट पायब।

आठ महीना बाद हुनकर पुत्र के देहांत भे गेल। घरवाला इ सूचना वीर रामफल मंडल के न देलक।

भागलपुर कोर्ट में 12, 13, 14 अगस्त1943के लगातार बहस भेल। वीर रामफल मंडल के बचाव पक्ष में तीन नामी वकील के बहस करे ला प्रांतीय कांग्रेस कमिटी भेज ले रहे। वकील सभ वीर रामफल मंडल के सुझाव देलक-कोर्ट में जज के सामने कहब, हम न मार ली हैय। संदेह के लाभ में अंहा बच जायब। परंच जौं जज पूछलक – रामफल मंडल तूं एसडीओ के मार ला। वकील के

सुझाव के ठुकरा के वीर क्रांतिकारी रामफल मंडल कहलक-हं। हजूर। पहिला फरसा हम ही मार लियै।

जिला जज, वीर रामफल मंडल के फांसी के सजा सुनैल कै।

23 अगस्त 1943 के भोर04 बजे भारत के वीर सपूत रामफल मंडल हंसैत हंसैत फांसी के फंदा के चूम लेलन।

फांसी के फंदा चूमे से पहिले हुनका से अंतिम इच्छा पुछल गेल रहे त वीर रामफल मंडल कहलन-अंग्रेज सभ हमर देश छोड़ कर चल जाय आ हमर प्राण से भी प्यारा देश आजाद हो जाय।

अगस्त क्रांति के वीर शहीद के नाम तत्कालीन जिला मुजफ्फरपुर के टावर में स्वर्णांकित हैय। आ सीतामढ़ी जिला के बाजपट्टी चौक पर के टावर में आदमकद मूर्ति प्रतिष्ठापित हैय। जे आइ भारत के संतान के भारत के आजादी के अक्षुण्ण रखे के संदेश दे रहल हय।

हिंदी के एकटा कविता अंश के रूप में-

हम लायें हैं तूफान से
किश्ती निकाल के, इस देश को रखना, मेरे बच्चे संभाल के।

हमरा सभ के अइसन वीर क्रांतिकारी, फांसी के फंदा के चूमे वाला शहीद रामफल मंडल पर गर्व हय।
***

मिथिला के लाल: उपन्यास सम्राट फणीश्वरनाथ रेणु।

विश्व प्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास मैला आंचल के शिल्पकार फणीश्वरनाथ रेणु के जनम बिहार राज्य के मिथिलांचल स्थित अररिया जिला के औराही हिंगना गांव अन्तर्गत धनुर्वंशी धानुक कुल मे शिलानाथ मंडल आ पानो देवी के पुत्र रूप में ०४ मार्च १९२१ में भेल रहे।

विश्व साहित्य के यथार्थ ग्रामीण पीड़ा के संवदिया, पारिवारिक सत्य, गृहस्थ जीवन के दर्पण आ राजनीतिक योद्धा रूपी एकटा मिसाल। कहीं कोई झोल पट्टी नै, धन धरती के मोह नै, बस, तन आ कपड़ा से देखे में रइस, मन से कोसी के धूसर बंजर आ बांझ धरती के अनमोल छौड़ा आ भावना सं क्रांतिकारी रेणु के अइसन दर्जन विशेषता हय जे हुनका अमर बनबैत हय।

मैला आंचल, परती परिकथा, जुलूस, कितने चौराहे, दीर्घतपा, कंलक मुक्ति, ठूमरी, आदिम रात्रि की महक आ अग्निखोर आदि के सृजनकर्ता रेणु साहित्य जगत में तहलका १९५४मे मच गेल रहै मैला आंचल के उपरांत।

रेणु जी तीन भाइ रहैत, फणीश्वरनाथ, हरिनाथ आ महेन्द्र नाथ। फणीश्वरनाथ के तीन शादी भेल रहे। पहिल पत्नी रेखा देवी रहे। एगो लैइकी कविता के जनम देला के बाद चल बसल रहे। रेणु के दोसर विआह पद्मा देवी स भेल रहे। रेणु आजादी के लड़ाई में जीवंत हिस्सेदारी निभैलन। जुलूस जैसन रचना वोकर स्पष्ट प्रमाण हय। लड़ाई के बीच में १९४२ में जेहल गेलन। पहिल कटिहार जेहल आ बाद में भागलपुर जेहल में रखल गेल रहै। उंहे हुनका यक्ष्मा के शिकायत भेल आ चिकित्सा के लेल पीएमसीएच पटना भेज देल गेल। चिकित्सा के अवधि में उंहा के एकटा नर्स लतिका के समर्पण आ सेभाभाव सं रेणु आ लतिका में प्रेम भ गेलै। हजारीबाग में जा के दूनू गोरे विआह कैं लेलन।

पद्मा रेणु सं सात संतान भेल। तीनटा लैइका आ चारटा लैइकी। मूल्य: इहे संतान सभ रेणु के पारिवारिक धूरी हैय। लैइका सभ हय- पद्मपराग राय वेणु, अपराजित राय आ दक्षिणेश्वर राय। लैइकी सभ हय-नवनीता, निवेदिता, अणपूर्णा आ वहीदा। लतिका रेणु सं कोनो संतान नै हय।

पिता शिलानाथ मंडल के साहित्यिक रूझान आ राजनीतिक जागरूकता के अमिट छाप रेणु पर पड़लैन। आगे चल के रामदेनी तिवारी हुनका राजनीतिक आ साहित्यिक दिशा देखैलथिन। अइ के कारण रेणु कोनो विद्यालय में नै टिकला। कहियो फारविसगंज, कहियो सिमखन्नी, कहियो विराटनगर (नेपाल) के चक्कर लगवैत रहलन। नेपाल के कोइराला परिवार के संगति हुनका क्रांतिकारी बनैलन त बंगला के प्रख्यात साहित्यकार के संगति हुनका कहानीकार बना देलथिन। काशी विद्यापीठ के पढाई के अवधि में समाजवादी आचार्य नरेन्द्र देव के संगति पैलन। आ अंत में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के कंधे से कंधा मिलाके अइसन साहित्यकार बन लन कि बिहार

के वोइ सभ बुद्धिजीवी आ साहित्यकार के उद्वेलित कैलन जे मूलतः नपुंसक भे गेल रहे।
राजनीतिक रूझान के चलते १९७२ में रेणु जी फारविसगंज विधानसभा सं चुनाव लड़लैन परंच हार गेलन।
१९८७ में मैला आंचल पर निर्माता किशोर डंग आ निर्देशक अशोक तलवार धारावाहिक बनैलन आ जेकर टेलीकास्ट भेल रहै।
रेणु जी के कृति मारे गए गुलफाम पर तीसरी कसम फिल्म बन चुकल हय। जेकर नायक राजकपूर आ नायिका वहीदा रहमान हय।
रेणु जी अपन पद्मश्री के उपाधि श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा आपातकाल लगैला पर बिरोध में लौटा देलन। आपातकाल के विरुद्ध लड़ाई में जेल गेलन। अपेंडिक्स के चिकित्सा के दौरान कौमा में चल गेलन आ अइ संसार से सदा के लेल विदा हो गेलन।
राहुल सांकृत्यायन आ प्रेमचंद के श्रेणी के लेखक आ क्रांतिकारी के निधन ११अप्रैल १९७७ के भे गेल।
अइसन वीर साहित्यकार पर मिथिला के गर्व हय।
***

जननायक कर्पूरी ठाकुर

मिथिला के लाल आ गरीब के मसीहा जननायक कर्पूरी ठाकुर हज्जाम समाज के अति निर्धन परिवार में माता रामदुलारी देवी के गर्भ से 24 जनवरी 1924 के दिन पैदा होयल रहे। पिता गोकुल ठाकुर हजामत के काज करैत रहथिन। हिनकर गांव आइ कर्पूरी ग्राम से विख्यात हय। जे बिहार के मिथिलांचल में अवस्थित जिला समस्तीपुर में एकटा गांव पितौझिया हय।
जननायक कर्पूरी ठाकुर मैट्रिक प्रथम श्रेणी से पास भेलन त हुनकर बाबूजी, कर्पूरी ठाकुर के संग अपना गृहस के इंहा खुशी से गेलन आ कहलथिन-मालिक हमर बेटा मैट्रिक पास कैलक हय। तो मालिक कहलथिन-बड़ा खुशी के बात हय। आवा कर्पूरी पहिले हमर पांव दबाबा। केतो पढ़ गेला हय त कि हमनी के पांव त दबाबे के ही पड़त। मालिक के इ कदम कर्पूरी के मान मर्दन करे के लेल रहे। परंच कर्पूरी न त जबाब देलन न डिमोरलाइज्ड भेलन।
जननायक कर्पूरी ठाकुर 1942 में गांधी जी के आह्वान पर भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेलन। जेल गेलन।
बाद में1967 में बिहार के उपमुख्यमंत्री सह शिक्षा मंत्री बनलन। मैट्रिक में अंग्रेजी पास करै के अनिवार्यता के समाप्त कैलन। दबल कुचल समाज के लैयका के उच्च शिक्षा प्राप्त करे के रास्ता खोल लैन।
1971 में मुख्यमंत्री होयला पर मैट्रिक तक के स्कूल फीस माफ कै देलन। कि गरीब के बच्चा फीस के अभाव में भी पढाई जारी रख सके।
मुंगरी लाल आयोग के अनुशंसा के लागू कै के सामाजिक आर्थिक रुप से पिछड़ा के सरकारी नौकरी में 26प्रतिशत आरक्षण लागू कैलन। जैमे आर्थिक रूप से कमजोर सवर्ण के भी 03प्रतिशत आरक्षण देलन। तयियो आरक्षण विरोधी हिनका गाली देलक।
परंच जननायक कर्पूरी ठाकुर हमेशा दबल कुचल आ गरीब के आवाज बनल रहलैन।
1974के छात्र सह लोकनायक जयप्रकाश आंदोलन में भाग ले लेलन। बाद में1977मे बिहार के मुख्यमंत्री बनलैन।
मैथिली के संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल करे के लेल भारत सरकार के पत्र लिखनैन।

केन्द्रीय सरकार पत्र संख्या-03 आरि-1014/98का-8कैंप दि-22/12/1977

इ पत्र एक जखा से मैथिली के संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल के लेल बीजारोपण हय। तब मैथिली 2003-2004मे संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल भेल।
23मार्च 1971के अपन मुख्यमंत्री कालि में मिथिला विश्वविद्यालय के स्थापना के लेल विहार विधान परिषद में वक्तव्य देलन आ अइसे पहिले1967मे मिथिला विश्वविद्यालय के लेल यूजीसी के अध्यक्ष से वार्ता कैले रहथिन। बाद में1972मे मिथिला विश्वविद्यालय के स्थापना भेल।

1978 में बिहार पंचायत राज के चुनाव करैलन। आ दलित शोषित कमजोर वर्ग में चुनाव के सहारे नया नेतृत्व कर्ता पैदा कैलन।
21 अप्रैल1979तक बिहार के मुख्यमंत्री रहलन। 17फरवरी1988 के अचानक हृदय गति बंद होयला के कारण सदा के लेल संसार से विदा हो गेलन।
लोग हुनका प्रेम से जननायक पुकारैत रहे।
1988मे बिहार सरकार हुनका सम्मान में हुनकर गांव पितौझिया के हुनकर नाम पर कर्पूरी ग्राम घोषित कैलक।
भारत सरकार सम्मान में डाक टिकट जारी कैलक।
बिहार सरकार बक्सर में विधि महाविद्यालय, मधेपुरा में चिकित्सा महाविद्यालय, दरभंगा आ समस्तीपुर में अस्पताल हुनका नाम से स्थापित कैलक।
भारत सरकार दरभंगा-अमृतसर लेल जननायक एक्सप्रेस चलैलक।
आइ जननायक कर्पूरी ठाकुर हमरा सभ के बीच नै छैथ परंच हुनकर विचार आइयो जिंदा हय आ लोग के राह दिखवैत हय।
***

मिथिला के लाल धनिक लाल मंडल।

मिथिला के लाल समाजवादी नेता भूतपूर्व गृह राज्यमंत्री, हरियाना के राज्यपाल आ बिहार बिधानसभा अध्यक्ष मान्यवर धनिक लाल मंडल के हाल ही 13नवम्बर 2022के चंडीगढ़ के एकटा हस्पताल मे निधन भे गेलैय।

मान्यवर धनिक लाल मंडल के जन्म 30मार्च 1932 के मधुबनी जिला के बेल्हा गांव मे भेल रहलैन। हुनका भारत छोड़ो आंदोलन मे भाग लेबे के लेल दरभंगा जिला इस्कूल से निकाल देल गेल रहय। आजादी के बाद वो समाजवादी आन्दोलन से जुड़े गेलन। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम ए एल एल वी कैला के बाद 1956मे सोशलिस्ट पार्टी आफ इंडिया के संस्थापक सदस्य के रूप मे शामिल भे गेलन। 1959 में सोशलिस्ट पार्टी आफ इंडिया के महासचिव नियुक्त भेलन। 1962मे समेकित सोशलिस्ट पार्टी के संयुक्त सचिव के रूप में काज कैलन। वो 1967, 1969आ 1972मे तीन बेर विधानसभा सदस्य के लेल चुनल गेलन। 1967मे विहार विधानसभा के अध्यक्ष बन लन। वो 1974मे विहार विधानसभा के सदस्यता से इस्तीफा देके जयप्रकाश नारायण के आंदोलन से जुड़ गेलन। 1975-1976 में राष्ट्रीय आपातकाल के बिरोध कैलन। 1977 में लोकसभा के लेल चुनल गेलन आ 1980 तक केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री के रूप में काज कैलन। 1980 मे दोसर बेर लोकसभा के लेल चुनल गेलन। बाद मे 1990-1995मे हरियाना के राज्यपाल रहलन। कुछ दिन के लेल राजस्थान के प्रभारी राज्यपाल रहलन।

एक बार इ चर्चा मे तब अइलन जौं हरियाना मे एगो महिला वकील से बिआह कैलन। हालांकि कुछ दिन बाद तलाक हो गेलैन। हिनकर चर्चा एक बार उपराष्ट्रपति के लेलो भेल रहय। लोग हिनका यादव समुदाय के समझे। एगो अखबार मे प्रसिद्ध दिवंगत पत्रकार खुशवंत सिंह एगो लेख मे बतैलन कि मान्यवर धनिक लाल मंडल बिहार के अतिपिछड़ा धानुक समुदाय से हय। मान्यवर धनिक लाल मंडल बिहार हरिजन सेवक संघ, लोहिया कर्पूरी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी आ धनिक लाल मंडल फाउंडेशन केयो अध्यक्ष रहलन।

आइ पंक्ति के लेखक गांधी मैदान सीतामढ़ी मे हुनकर देल गेल समाजवादी विचार वक्तव्य सुनले रहय। आइ हुनकर निधन पर पुरा मिथिला बिहार के लोग स्तब्ध आ दुखी हय। लोग विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित क रहल हय।

***

साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर: व्यक्तित्व आ कृतित्व।

समानान्तर मैथिली साहित्य आन्दोलन के प्रणेता साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर एकटा विरला साहित्यकार हतन। वो एगो खोजी साहित्यकार हतन। हिनका साहित्य मे सत्य के उद्घाटन होइत हय। मैथिली साहित्य मे दू गो धारा हय।

पहिल मूल धारा। जैंमे ब्राह्मणवादी आ नव ब्राह्मणवादी साहित्यकार के साहित्य हय। ब्राह्मणवादी माने मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ के साहित्य आ नव ब्राह्मणवादी मे गैर ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ के साहित्य।

दोसर समानान्तर धारा। जैंमे विशुद्ध रूप से सोल्हकन/रार माने कि संवैधानिक रुप से एससी/ओबीसी के मैथिली साहित्य हय। जे वंचित आ उपेक्षित हय। जेकरा मैथिली साहित्य के मूल मैथिली साहित्य मे न मानल आ राखल जाइ हय। इ आदि कालि से चल आ रहल हय। जेना कि आदिकवि विद्यापति नाई। जे कविशेखर जोतिश्वर से पहिले भेल रहे। वो पदावली के रचना कैले रहलन आ हुनकर विदापत नाच वोइ समय मे प्रसिद्ध रहै। जिनकर चर्चा कवि जोतिश्वर अप्पन रचना वर्णरत्नाकर मे कैले रहलन। परंतु आइ के समय मे आदिकवि विद्यापति नाई से लोग अनजान हय। हुनका मैथिली साहित्य इतिहास मे छुपा देल गेल वा उपेक्षित कैल गेल।

परंतु चर्चित साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर अप्पन मैथिली विदेह इ पत्रिका के लोगो आदिकवि विद्यापति नाई के बनैलन। हुनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व के अप्पन साहित्य -नित नवल सुभाष चन्द्र यादव मे कैलन। आदिकवि विद्यापति नाई के चित्र विदेह सम्मान से सम्मानित पनक लाल मंडल बनैले हतन।

मैथिली साहित्यकार आंदोलनकारी गजेन्द्र ठाकुर आइ समानान्तर मैथिली साहित्य आन्दोलन के माध्यम से दलित, उपेक्षित वर्ग के साहित्यकार के प्रोत्साहित क रहल हतन। हुनका साहित्य मे दबल -कुचल समाज के व्यक्ति के साहित्य मे मान दे रहल हतन। परंतु ब्राह्मणवादी साहित्य मे बर्चस्ववादी के मानबर्द्धन आ दबल कुचल समाज के जाति वा व्यक्ति के मान मर्दन कैल जाइत हय।

जौंकि साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर साहित्यकार राजदेव मंडल पर पोथी लिखैत हतन -राजदेव मंडल -मैथिली राइटर आ जगदीश प्रसाद मंडल -एकटा बायोग्राफी लिखैत हतन।

मैथिली समीक्षाशास्त्र मे कवि रामदेव प्रसाद मंडल झाड़दार के मैथिली के पहिल जनकवि के उपमा देइत हतन। हुनकर कविता संग्रह अम्बरा के २१ वीं शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह बताबैत हतन।

खोजी साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर अप्पन साहित्य मे समानान्तर धारा के साहित्यकार के चर्चा

करैत हतन जे मूल धारा के साहित्य मे दुर्लभ हय। जेना –
संदीप कुमार साफी, उमेश पासवान, बेचन ठाकुर, कपिलेश्वर राउत, उमेश मंडल, रामविलास साहु, राजदेव मंडल, नंदविलास राय, जगदीश प्रसाद मंडल, दुर्गानंद मंडल, आचार्य रामानंद मंडल, ललन कुमार कामत, नारायण यादव, मुन्नी कामत, शिव कुमार प्रसाद, धीरेन्द्र कुमार, रामदेव प्रसाद मंडल झाड़दार, सुभाष चन्द्र यादव आ किशन कारीगर आदि।
कथाकार आ उपन्यासकार गजेन्द्र ठाकुर मैथिली लेखक कोश निर्माता आ विदेह (मिथिला) इतिहास के जानकार हतन। ओ मैथिली भाषा के तिरहुता लिपि मे लिखल ११०० (एगारह सौ) ताल पत्र -बसहा पत्र पर लिखल अभिलेख के देवनागरी लिपि में लिखलन। ओ पंजी सभ मिथिला क्षेत्र के मैथिल ब्राह्मण समुदाय के आनुवंशिक लेखक हतन। आ अइमे लगभग १०० अंतर्जातीय विवाह सेहो लिखित रूप मे वर्णित हय। आइ तक पौराणिक बुझल जाए वाला व्यक्तित्व सभ के लिखित प्रमाण पहिले बेर उपलब्ध भेल हय।
पिता कृपानन्द ठाकुर आ माता लक्ष्मी ठाकुर के कुल दीपक ओजस्वी गजेन्द्र ठाकुर हतन। हिनकर जन्म ३०मार्च १९७१के भेल रहय। हिनकर मूल गाम मधुवनी जिलान्तर्गत मेंहथ हय। वर्तमान में गजेन्द्र ठाकुर विदेह इ पत्रिका के संपादक सेहो हतन। पत्रिका के विदेह इ लर्निंग माध्यम से संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोग के परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) संगे एन टी ए-यूजीसी -नेट मैथिली लेल सामग्री प्रस्तुत करैत हतन जे प्रतियोगी विद्यार्थी लाभन्वित करैत हतन।
विदेह पेटार मे लगभग हजार पोथी संग्रहित हय। जे पाठक वा विद्यार्थी पढ सकैत हय वा पीडीएफ डाउन लोड कर सकैत हतन।
विदेह सम्मान के तहत् समानांतर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत -नाटक अकादमी सम्मान आ पुरस्कार देल जाइ हय जैइसे समानान्तर धारा के व्यक्ति अप्पन क्षेत्र में बेहतर करे के लेल प्रोत्साहित होइत हतन।
साहित्यकार गजेन्द्र ठाकुर मैथिली साहित्य जगत के युगपुरुष हतन। हिनकर व्यक्तित्व आ कृतित्व मिशाल हय।
***

नेपथ्य के नायक: कर्मवीर पासवान।

एम पी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सीतामढ़ी से सेवानिवृत्त प्राचार्य मान्यवर कर्मवीर पासवान दलित बंचित समाज के लोग के हितचिंतक आ मार्गदर्शक रहथिन। हुनकर विचार आइयो प्रासंगिक हए। वो यथार्थ रुप सं कर्मवीर रहलन।

मान्यवर कर्मवीर पासवान के जन्म वैशाली जिला अन्तर्गत इब्राहिमपुर गांव मे एगो निर्धन परिवार मे भेल रहे। स्नातक कैला के बाद सिंचाई विभाग मे सहायक बन लन। इमानदार रहे के कारण सिंचाई विभाग के नौकरी त्याग देलन आ उच्च विद्यालय मे सहायक शिक्षक के नौकरी कैलन। प्रधानाध्यापक पद पर पदोन्नति उपरांत उच्च विद्यालय पड़री, परसौनी, सीतामढ़ी मे योगदान कैलन। हिनका विचार से विद्यार्थी, अभिभावक आ समाज प्रभावित होय लागल। बाद मे स्थानांतरण के बाद एम पी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मे प्राचार्य पद पर आसीन भेलन। शिक्षा विभाग पर हिनका विचार के जबरदस्त प्रभाव पड़ल। दलित, शोषित, बंचित तबका हिनकर विचार के दिवाना बन गेल। वो माध्यमिक शिक्षक संघ आ बामसेफ के जिला अध्यक्ष रहलन। जिला के विभिन्न सामाजिक संगठन हिनकर अध्यक्षता में गोष्ठी करे लागल। हिनका सर्वदलीय राजनेता सम्मानित करे लागल। वो गरीब असहाय के मदद करे के सदैव तैयार रहथि।

एगो घटना जौं वो सीतामढ़ी नगर में रहे ला डेरा खोजे अयलन त हमरा हुनका भेंट भेल। बहुत मकान भाड़ेदार आजादी के साठ बर्ष बादो एगो उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य के दुसाध होय के कारण हुनका भाडा पर मकान न दए। इ चिंता आ बिषाद के कारण लागल। हम हुनका अप्पन आवास के बगल मे डेरा देबेलियन। लोग के जब मालूम भेल कि किरायेदार दुसाध हए त लोग हमरा कहे लागल कि अंहा भाड़ा दिया के ठीक न कैली हए। हम कहली कि अब वो जमाना न हए। किरायेदार एकटा नेक इंसान हए। देखब अंहा हिनकर हरबेर नाम लेब। कुछ दिन के बाद वो अप्पन सुमधुर व्यवहार से मुहल्ला मे लोकप्रिय भे गेलन।

मान्यवर कर्मवीर पासवान के दूटा बेटा हए। छोटका पंकज केशव उच्च माध्यमिक विद्यालय, भूतही सीतामढ़ी मे नियोजित शिक्षक हए आ बड़का किसान। बड़ी बहु कमला बालिका प्राथमिक विद्यालय, डुमरा में नियोजित शिक्षिका। विधवा पत्नी, बहु, पोता पोती से समृद्ध परिवार अप्पन निर्मित मकान, डुमरा आ अप्पन गांव में निवास करैत हए।

साल भर पहिले वो दुनिया से विदा भे गेलन। लेकिन हुनकर भातृत्व, कतृत्व आ विचार आइओ जिंदा हए।

***

डाकू आ सांसद फूलन देवी।

बच्चा मे अप्पन गांव मे छठ के अवसर पर सुल्ताना डाकू नाटक देखले रही। धनी के लुटे आ गरीब मे बांटे। सुल्ताना डाकू, डाकू न समाजसेवी लागे।
कालेज लाइफ मे सिनेमा कच्चे धागे देख ली। रूपा सिंह आ माधो सिंह नाम के डाकू रहे। फिल्म के अंत मे वो डाकू न नेक आदमी लागे।
कालेजे लाइफ मे सिनेमा शोले देखली। जैमे गब्बर सिंह डाकू रहे। जे अंत तक डाकू लागल। बाद मे जौं शिक्षक बन गेली त सिनेमा बैडिंट क्वीन देख ली जैमे डाकू फूलन देवी रहे। दलित शोषित समुदाय के फूलन के बचपन से लेके जवानी तक दैहिक शोषण होइत रहे। चरम स्थिति तब आइल जब बाइस गो सामंती लोग सामुहिक बलात्कार कैलक आ नंगा क के कुंआ से पानी भरे के लेल मजबूर कैलक। बाद में डाकू गिरोह बना के सभ बलात्कारी सामंती लोग के लाइन मे खड़ा क के गोली से मार देलक। बाद मे जेल से छूटल त सांसद बनल। परंतु एक सामंती फूलन देवी के गोली से भून देलक। आइ समाज के सामंती वर्ग के लेल वो हत्यारिन हय त दलित शोषित वर्ग के लेल देवी बनल हय।

***

गुरु पूर्णिमा आ वर्तमान विद्यालय निरीक्षण आदेश।

बंदउ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।
-संत तुलसीदास
गुरु के महिमा के बखान कबीर के शब्द में –
सात समद के मसि करौं, लेखन सब बनराई।
धरती सब कागज करौं, गुरु गुन लिखा न जाई।।

गुरु गोविंद दोनों खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।
माने कि गुरु के महिमा अपरम्पार हय।
गुरु पूर्णिमा महर्षि कृष्ण द्वैपायन अर्थात वेद व्यास के सम्मान में मनायल जाइत हय वो वेद के चार भाग में बंटलन यथा ऋगवेद, सामवेद, यजुर्वेद आ अथर्ववेद। अट्ठारह पुराणों के संगे वो चर्चित महाभारत काव्य ग्रंथ के रचयिता हतन।
गुरु के महत्ता बनल रहय तैला आजादी के बाद पूर्व राष्ट्रपति डॉ राधाकृष्णन के जयंती के शिक्षक दिवस के रूप में मनायल जाइत हय। आ शिक्षक के गुरु रूप मे श्रद्धा निवेदित कैल जाय हय। प्रारम्भिक शिक्षा के अंतर्गत महीना मे एक दिन प्रखंड स्तरीय गुरु गोष्ठी के आयोजन कैल जाइ हय। जैमे हर विद्यालय के प्रधानाध्यापक अप्पन विद्यालय के आवश्यक कागजात के जमा करैत हतन तथा सरकारी आदेश-निदेश से अवगत होइ हतन। गुरु गोष्ठी के अध्यक्षता प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी करैत हतन। प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी प्रखंड स्तरीय निरीक्षण पदाधिकारीयो छतन। हालांकि बिहार शिक्षा परियोजना के गठन के पहिले मध्य विद्यालय के निरीक्षी पदाधिकारी क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारी आ प्राथमिक विद्यालय के निरीक्षी पदाधिकारी प्रखंड विकास पदाधिकारी होइत रहलन। जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधीक्षक आ जिला शिक्षा पदाधिकारी निरीक्षी पदाधिकारी होइत रहलन। प्रारम्भिक शिक्षा के प्रशासनिक काज जिला शिक्षा अधीक्षक आ माध्यमिक शिक्षा के जिला शिक्षा पदाधिकारी करैत रहलन। हालांकि जिला शिक्षा उपाधीक्षक आअनुमंडल शिक्षा पदाधिकारीयो होइत रहलन परंच वो निष्क्रिय रहैत रहलन।
आबि जिला शिक्षा अधीक्षक, उपाधीक्षक अनुमंडल शिक्षा पदाधिकारी आ क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारी के पद समाप्त क देल गेल हय। आ आबि जिला शिक्षा पदाधिकारी, चार गो जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, कार्यक्रम पदाधिकारी, सहायक कार्यक्रम पदाधिकारी काज क रहल हतन। सभ निरीक्षी पदाधिकारी होइत हतन।

एतबे न, बल्कि विद्यालय शिक्षा समिति के अध्यक्ष (पंचायत वार्ड सदस्य), मुखिया, प्रखंड प्रमुख आ जिला परिषद के अध्यक्ष प्रारंभिक विद्यालय के निरीक्षी पदाधिकारी हतन। प्रारम्भिक शिक्षा से लेके उच्चतर माध्यमिक शिक्षा तक त्रिस्तरीय पंचायती राज के अधीन हय। इंहा तक कि शिक्षक नियोजन के अधिकार देल गेल हय। छठा चरण तक शिक्षक नियोजनो कैलक। परंतु सातम चरण मे नियम बदल गेल। आबि बीपीएससी से नियोजन कैल जायत आ सरकारी कर्मचारी के दर्जा देल जायत। परंतु नया निम्न स्केल के वेतनमान देल जायत। जौंकि बिहार में केन्द्रीय वेतनमान लागू हय।

जे पहिले से नियोजित शिक्षक हतन वोकरो बीपीएससी के परीक्षा पास कैला के बाद सरकारी कर्मचारी के दर्जा आ लाभ पैतन। हाल मे डोमिसाइल नीति के समाप्त क देल गेल हय। अइके विरोध मे नियोजित शिक्षक आ अभ्यर्थी आवाज बुलंद क रहल हतन।

आबि सरकारी नया आदेश के मुताबिक विद्यालय के जांच शिक्षा विभाग के जांच अधिकारी आ पंचायत राज के जांच अधिकारी के अलावा कोनो विभाग के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के छोड़ के चिन्हित कर्मचारी पदाधिकारी आ नियोजित कर्मचारी करत। अइ आदेश निदेश केयो शिक्षक विरोध क रहल हतन। अइसे पहिले सरकार जीविका दीदी के विद्यालय निरीक्षण के अधिकार देले रहय जेकरा माननीय उच्च न्यायालय निरस्त के देले रहय। आशा हय नयो आदेश उच्च न्यायालय से निरस्त हो जायत।

अंततः शिक्षक के मानमर्दन से शिक्षा में गुणवत्ता न आ सकैय हय। अइ सभ तथ्य पर जनता आ सरकार के विचार करे के आवश्यकता हय।

***

इस्कूली प्राथमिक शिक्षा:बदलैत स्वरुप।

प्राचीन काल मे विद्यार्थी गुरु आश्रम मे विद्या प्राप्त करैत जाइत रहे। गुरु आश्रम के गुरु कुलो कहैत जाइत रहे। राजा हो वा रंक के बच्चा वन मे स्थित गुरुकुल में रह के विद्या अध्ययन करैत रहे। गुरुकुल राज्याश्रित न रहे वरन् स्वतंत्र रहे।

मुगलकाल मे शिक्षक (मौलबी) शिक्षार्थी के घर पर जाके शिक्षा देइत रहे। वा मस्जिद (मदरसा) मे शिक्षा देबे। धार्मिक संस्थाधीन।

अंग्रेज काल (आधुनिक काल) मे शिक्षार्थी आ शिक्षक के आवास से अलग एकटा स्थान पर स्थित इस्कूल मे शिक्षक शिक्षार्थी के शिक्षा देबे लागल। जिला परिषद वा नगर पालिकाधीन।

यानी तीन प्रकार के इस्कूली शिक्षा गुरु के आश्रम मे, शिक्षार्थी के घर पर वा धर्म स्थल पर आ शिक्षक-शिक्षार्थी के आवास से अलग विद्यालय मे।
स्वतंत्र भारत मे इस्कूली प्राथमिक शिक्षा।
१.सरकारी इस्कूली प्राथमिक शिक्षा।
२.निजी इस्कूली प्राथमिक शिक्षा।

१. सरकारी इस्कूली प्राथमिक शिक्षा- स्वतंत्र भारत मे तीन तरह के स्कूली शिक्षा चल रहल हय। केंद्र सरकार से नियंत्रित सेंट्रल स्कूल। जैइमे केन्द्रीय सरकार के कर्मचारी पदाधिकारी के बच्चा के पढे के लेल बनायल गेल हय। सिट बचला पर राज्य सरकार के कर्मचारी पदाधिकारी के बच्चा आ सिट बचला पर अन्य बच्चा के पढे के विधान हैय। नामांकन नर्सरी मे पहले आओ। पहले पाओ। बाद बला के लेल इस्कूल स्तरीय प्रवेश परीक्षा के आधार पर। पढ़ाई सीबीएसइ के पाठ्यक्रम पर होइ हय। शिक्षक के बहाली प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर। शिक्षक के केवल शिक्षण काज।

दोसर केंद्र सरकार के नियंत्रणाधीन नवोदय विद्यालय। जैइमे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चा पांचवां वर्ग के बच्चा के प्रवेश परीक्षा के आधार पर छठा वर्ग मे नामांकन होय हय। सीबीएसई पाठ्यक्रम लागू हय। शिक्षक के बहाली प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर होय हय। शिक्षक के केवल शिक्षण काज।

तेसर राज्याधीन सरकारी विद्यालय हय। जैइमे प्रवेश के लेल केवल बच्चा के उमर छह साल होय के चाही। कोनो प्रवेश परीक्षा न आ सालो भर प्रवेश ले सकै हय। उमर सापेक्ष वर्ग में भी नामांकन हो सकै हय। वर्ग परीक्षा मे केवल सम्मिलित होनाइ अनिवार्य हय। उच्च वर्ग के लेल प्रोमोशन के

प्राबधान हय। पढाई बिहार राज्य शिक्षा परिषद पाठ्यक्रम पर होइ हय। बच्चा के लेल मध्याह्न भोजन, छात्रवृत्ति आ पोशाक के प्राबधान हय। जै के लेल बच्चा के ७५प्रतिशत उपस्थिति अनिवार्य हय। आबि प्राथमिक शिक्षा पंचायती राज के अधीन हय। शिक्षक के बहाली अंक आधारित हय। इधर केंद्र सरकार पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण अनिवार्य कैलक हय। शिक्षक के शिक्षण काज के अलावा गैर शिक्षण काज।

दू तरह के विद्यालय हय।

१.प्राथमिक विद्यालय। जैइमे वर्ग पहिला सं वर्ग पांचमा तक पढाई।

२.प्रारम्भिक वा मध्य विद्यालय। जैइमे वर्ग पहिला सं वर्ग आठमा तक पढ़ाई।

बिहार मे पंचायती राज के अधीन शिक्षक-

१.पंचायत शिक्षक (पंचायत संवर्ग) २.प्रखंड शिक्षक (प्रखंड संवर्ग) ३.नगर शिक्षक (नगर पालिका संवर्ग) बिहार राज्य सरकार के अधीन शिक्षक

सहायक शिक्षक (जिला संवर्ग) २.निजी इस्कूली प्राथमिक शिक्षा।

(क) सीबीएसई से संबंध।

निजी प्रबंधन।

(ख) आईसीएसई से संबंध।

निजी प्रबंधन।

(ख) राज्य सरकार से संबद्ध निजी विद्यालय (गैर सरकारी विद्यालय) निजी प्रबंधन।

निष्कर्षत: इस्कूली प्राथमिक शिक्षा के बदलैत स्वरुप में समान शिक्षा आ समान स्कूल प्रणाली लागू न हैय। एकरा करे के आवश्यकता हय।

सगर राति दीप जरैय :समस्या आ समाधान

सगर राति दीप जरैय एकटा चर्चित मैथिली कथा मंच हय। हमरा जनतैय इ अपंजीकृत हय। परंच इ नव कथाकार के लेल कार्यशाला हय।जैमे कथाकार कथा के रचना आ प्रस्तुति के गुर सीखैत हय।जून -२४ मे सगर राति दीप जरैय के आयोजन दरभंगा मे भेल रहय। बिना प्रस्ताव पारित के अगिला आयोजन पटना मे होयत एकर घोषणा कैल गेल रहय।विशेष रूप से समानांतर धारा के साहित्यकार एकर विरोध कैलन।आ अगिला सगर राति दीप जरैय के आयोजन फुलपरास, झंझारपुर मे होयत एकर घोषणा कैल गेल। हालांकि विवाद के शुरुआत सगर राति दीप जरैय कार्यक्रम रहुआ संग्राम मे भे गेल रहय। कार्यक्रम के आयोजन संख्या मे बदलाव क देल गेल रहय।आबि दू ठाम सगर राति दीप जरैय के आयोजन फुलपरास आ पटना मे होयत। कुछ साहित्यकार के विचार कि आयोजन एके ठाम होय आ कुछ साहित्यकार के विचार कि आयोजन विभिन्न ठाम होय।परंपरागत रूप से आइ तक आयोजन एके ठाम होइत रहल हय।त परंपरा कायम रहय।देखल जाय हय कि एक ठाम आयोजन होयला पर दूर -दूर के कामकाजी साहित्यकार भाग न ले पाबैत हय त दोसर ओर स्थानीय साहित्यकार के बहुलता से कथा पाठ के समीक्षा सही रूप में न हो पायब हय। कुछ कथाकार उपस्थिति बना के घर चल जाइत छतन त कुछ सो जाइत छथि। दोसर विचार इ कि मैथिली साहित्यकार सभ मिथिला से दूर रहैत छथि परंच मिथिला मैथिली के हृदय मे सजौने छथि।मन रहितो सगर राति दीप जरैय मे सम्मिलित न हो पबैत छथि।त सगर राति दीप जरैय के शाखा रुप दे देल जाय। यथा जिला शाखा, राज्य शाखा, अंतरराष्ट्रीय शाखा, ग्रामीण शाखा, नगरीय शाखा, महानगरीय शाखा आदि।अइसे नव कथाकार के कार्यशाला के लाभ मिलतैय संगे सगर राति दीप जरैय के विस्तार मिलतैय आ विवाद के समाधान मिलतैय।दीप से दीप जरतैय।

***

पोथी श्रोत।

१.श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण -गीता प्रेस, गोरखपुर.
२.श्री रामचरितमानस -गीता प्रेस, गोरखपुर.
३.लालदास कृत रमेश्वरचरित मिथिला रामायण -साहित्य अकादमी .
४.कवि चंद्र कृत मिथिला भाषा रामायण -साहित्य अकादमी.
५.वर्णरत्नाकर-मैथिली अकादमी, पटना.
६.सीता-अमीश-वैस्टलैंड पब्लिकेशन लिमिटेड, नई दिल्ली
७.मैथिली साहित्यिक इतिहास -मायानंद मिश्र-कि.सं.लो.
८.मिथिलाक इतिहास -प्रो राधाकृष्ण चौधरी-बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना.
९.मिथिलाभाषामय इतिहास -सं.पं.शशिनाथ चौधरी-इसमाद पटना.
१०.मिथिला दर्शन -शशिनाथ चौधरी.संपादन-शंकरदेवझा
११.यात्री समग्र -राजकमल पेपर बैक्स.
१२.यात्री साहित्यावलोकन-डि वासुकीनाथ झा -चेतना समिति, पटना.
१३.विद्यापति-डा शैलेन्द्र मोहन झा -मै.अ.पटना.
१४, . महाकवि लाल दास समय ओ रचना – संपादन:डा रमानंद झा रमण, .
१५..विवर्त-डा रमानंद झा रमण-सिद्धिरस्तु.
१६.मैथिली समीक्षा शास्त्र -गजेन्द्र ठाकुर.
१७.नित नवल सुभाष चन्द्र यादव -गजेन्द्र ठाकुर
१८.रेणु का है अन्दाजे बयां और -भारत यायावर -राजकमल प्रकाशन.
१९.सीतामढी चरित-ललन प्रसाद सिन्हा -सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली.
२०.इतिहास के आइने में बेलसंड -सीतामढी -डा लोकेश कुमार शरण, सीतामढ़ी।
२१.मैथिली भाषा रिपोर्ट -ग्रियर्सन.

***

Final Page

लेखक परिचय
आचार्य रामानंद मंडल
(सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक)
माता -चन्द्र देवी
पिता -स्व राजेश्वर मंडल
पत्नी -प्रमिला देवी
जन्मतिथि -०१ जनवरी १९६०
योग्यता -एम.एससी (रसायन शास्त्र), एम.ए (हिंदी)
दायित्व -पूर्व जिला प्रतिनिधि प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी।
प्रकाशित कृति -कविता संग्रह भासा के न बाटियों, कथा संग्रह -रनियां भिखारिन, संधियां संग्रह -जनकनंदिनी जानकी आ शौर्य गान। विभिन्न पत्र पत्रिका मे कथा, कविता आ आलेख प्रकाशित।
स्थायी पता -पिपरा विशनपुर थाना -परिहार जिला -सीतामढी राज्य -बिहार।
वर्तमान पता -पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड -०४ सीतामढ़ी पोस्ट -चकमहिला जिला -सीतामढी राज्य -बिहार पिन -८४३३०२.
मोबाइल -९९७३६४१०७५
ईमेल -ramanandmandal001@gmail.com

लेखक परिचय

आचार्य रामानंद मंडल
(सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक)
माता -चन्द्र देवी
पिता -स्व राजेश्वर मंडल
पत्नी -प्रमिला देवी
जन्मतिथि -०१ जनवरी १९६०
योग्यता -एम.एससी (रसायन शास्त्र), एम.ए (हिंदी)
दायित्व -पूर्व जिला प्रतिनिधि प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी।
प्रकाशित कृति -कविता संग्रह भासा के न बाटियों, कथा संग्रह -रनियां भिखारिन, संधियां संग्रह -जनकनंदिनी जानकी आ शौर्य गान। विभिन्न पत्र पत्रिका मे कथा, कविता आ आलेख प्रकाशित।
स्थायी पता -पिपरा विशनपुर थाना -परिहार जिला -सीतामढी राज्य -बिहार।
वर्तमान पता -पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड -०४ सीतामढ़ी पोस्ट -चकमहिला जिला -सीतामढी राज्य -बिहार पिन -८४३३०२.
मोबाइल -९९७३६४१०७५
ईमेल -ramanandmandal001@gmail.com

Scan to view book details

₹225
ISBN 978-93-49656-64-2
9 789349 656642 >